समर्पण

पूज्य धर्मप्राण पं० लक्ष्मण शास्त्री जी द्रविड़ महोदय,

आप महानुभाव तप तितिक्षा दया क्षमा उदारता-सम्पन्न निर्मल चरित्र के सरल हृदयी इस समय के हमारे ऋषि थे। परिश्रम से तथा भगवद् कृपा से आपने प्रकांड पांडित्य तथा प्रतिष्ठा संपादन की। तथापि उसका उपयोग आपने सांसारिक पदार्थों के सुखोपभोग के लिये नहीं किया किन्तु शाश्वत धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिये करके अपने जीवन का भी उनके ही पीछे उत्सर्ग कर दिया। सनातनी जनता के लिये आपके ज्वलंत त्याग तथा अनुपम आदर्श के स्मरण में और जो मेरे ऊपर आपकी परम कृपा थी तथा विशुद्ध स्नेह भाव था उनके स्मरण में; आपको सनातन धर्म के उध्धार के जो कार्य अत्यन्त प्रिय थे वे इसमें ग्रथित कर आपको सप्रेम समर्पण करता हूँ।

आपका,

नारायणजी पुरुषोत्तम सांगाणी।

श्री हरिः

सनातनधर्म और हिन्दूसंस्कृति के उद्धार की योजना

नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

जगत् में जो कोई धर्म और संस्कृति कहलाने के लायक है तो बस एकमात्र सनातनधर्म और हिन्दू-संस्कृति ही है। सनातनधर्म और हिन्दू-संस्कृति के सर्वोत्कृष्ट होने का कारण यह है कि वह ईश्वरकृत है, उसके सिद्धान्त अचल, अटल और प्राणीमात्र को सुख तथा अभ्युदय देनेवाले हैं। वेद जो कि परमात्मा का निश्वास रूप होने से अपौरुषेय कहलाता है, और वे तथा उसके अनुकूल बने हुए शास्त्र-पुराण सनातनधर्म के आधार भूत हैं। इनके द्वारा हिन्दुओं के अभ्युदय और मोक्ष के लिये वर्ण तथा आश्रम धर्म की व्यवस्था की गई है। इसके अवलंबन से ही हिन्दुजाति का धर्म हजारों और लाखों आक्रमण

होने पर भी जीवित है। इतर देशों में कोई जाति धर्म प्राचीन नहीं, जो है भी वह पच्चीस सौ वर्ष के दरम्यान का है, आधुनिक मनुष्यकृत है। उसमें से कोई २ जाति धर्म वाले थोड़े वक्त से चमके, परन्तु वर्ण और आश्रम की पद्धति के अभाव से तत्क्षण नष्टप्राय हो गये और उनका आज पर्यन्त कहीं भी नामोनिशान न रहा।

सनातनधर्म की यही अद्भुत विशेषता है कि वह ईश्वर को सर्वव्यापी मानता है, प्राणी मात्र को ईश्वर का अंश मानता है, शुभाशुभ कर्मानुसार उच्च-नीच योनि में जन्म होना मानता है, देह के तथा संसार के सारे पदार्थों को २। तथा क्षण-भंगुर मानता है, आत्मा को अविनाशी और धर्म को तथा धर्मानुकूल अर्थ, काम, मोक्ष को ही परम 'पुरुषार्थ' मानता है। मन और इन्द्रियां उन्मत्त बनें-ऐसे विषयों को भोगना ॥ शास्त्र-निषिद्ध आचरण करना इसको महान् दुर्गति समझता है और प्राणी मात्र को अपनी २ जाति के कर्मद्वारा अभ्युदय हो और प्रभु स्मरण द्वारा परम-पद की प्राप्ति हो-इसी रीति से सहायक होकर, सुख देने में ही हिन्दू स्वयं कृतार्थ मानते हैं।

परम कृपालु परमात्मा पक्षपाती नहीं, तो भी हिन्दुस्थान जैसा कल्पवृक्ष और कामधेनु समान देश और वर्ण । आश्रम की प्रथा हिन्दुओं के लिये निर्माण की, तथा उन जग

नाथ प्रभु के स्थापित धर्म का और धर्म-मर्यादानुसार चलने वाले धर्मज्ञों का जब २ उच्छेद होता है, धर्मध्वंसी पाखंडियों का अत्याचार-अनाचार प्रवर्त्तित होता है, तब २ प्रभुश्री अजन्मा होने पर भी धर्म और धर्मज्ञों का संरक्षण करने के लिये, ब्राह्मण तथा क्षत्रिय कुल में अवतार धारण कर धर्म-द्रोहियों को दंड देते हैं।

वर्ण की पद्धति में इन जगन्नियंता प्रभु ने इतनी श्रेष्ठता रखी है कि जिन ब्राह्मणों ने ब्रह्मचर्य-पालन कर वेद-शास्त्र के अध्ययन से ब्रह्म-विद्या प्राप्त कर ली वह अगस्त्य ऋषि की तरह समुद्र पान कर सकता है, विन्ध्याचल को सदा के लिये नीचा नमा कर स्थिर रख सकता है। वह वातापि राक्षस को जीवित पचा सकता और वेन जैसे महान् उन्मत्त राजा को भी हुंकार से भस्म कर सकता है। वेद शास्त्र के ज्ञान सहित धनुर्वेद-अस्त्र-शस्त्र विद्या का ज्ञान-प्राप्त कर लेनेवाला एक क्षत्रिय अर्जुन अपनी दिव्य अस्त्र शस्त्र विद्या के प्रभाव से कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी सेना तथा भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण जैसे योद्धाओं को भी पराजित कर परलोक पहुंचा सकता है, और इन्द्र वरुण यमादि देवताओं से भी न हो सकने-वाले साठ हजार निवात-कवच नामक भयंकर पराक्रमी दैत्यों का संहार कर सकता है। वैश्य वेद शास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर

वाणिज्य, खेती और गोरक्षा बराबर रीति से करता हुआ एक भामाशाह के समान हिन्दू जाति-धर्म के रक्षक वीर केसरी महाराणा प्रताप को अगाध संपत्ति की सहायता देकर पुनः हिन्दु राज्य की स्थापना करा सकता है। शूद्र द्विज वर्ण की सेवा में स्वयं परमश्रेय मानकर शिल्पादि उद्योग का आश्रय लेते हुए परमोपयोगी बन सकता है। उसी रीति से स्त्रियां भी पातिव्रतधर्म के परिपालन से सती अनुसूया की तरह ब्रह्मा, विष्णु और महेश तक को छ मास का बालक बनाकर अपनी गोद में खिला सकती हैं।

अर्थात्—इस वर्ण व्यवस्था के द्वारा हीं ब्राह्मणादि सर्व वर्ण सकल उपयोगी विद्याएं प्राप्त कर सकते हैं। मुफ्त विद्यालय, कालेज किंवा विश्वविद्यालयों चलाने में आज करोड़ों रूपयों का खर्च प्रति वर्ष होता है और परिमाण में उसमें अभ्यास करनेवाले लड़के जाति धर्म की उपेक्षा करनेवाले तथा बल-बुद्धि-आरोग्य हीन हो विदेशी मनोवृत्तिके गुलाम बनते हैं। यदि ब्राह्मणत्व का पुनरुद्धार हो तो उससे वे बच सकते हैं। इसी रीति से, स्वराज्य लेने के लिये कांग्रेसी जवान लड़के और लड़कियों को प्रभात फेरी में फिराकर, लाठी की मार खिलाकर, लाखों को जेल भेजवा कर उनके जीवन निरर्थक बनाये जाते हैं और परिणाम में स्वराज्य के बदले

सत्यानाश देखना पड़ता है। जो क्षत्रियत्व का पुनरुद्धार हो तो उस से फल निकल सके। चर्खा, खादी, हड़ताल आदि से देश की दरिद्रता बढ़ी और उलटे जापान जरमन और लेंकेशायर प्रविष्ट हुए। परंतु यदि वैश्य लोग देश की जरूरीयात मुख्य २ वस्तुओं को देश में ही बनाकर पूरी करें और एक भी गाय यवनम्लेच्छादि के हाथमें न जाने दे तो ऐसी व्यवस्था से करोड़ों देशी जनों को धंधा रोजगार मिले और अरबों की संपत्ति देश में रहे। शूद्रों तथा अति शूद्रों को भी अपनी २ जाति वर्णोचित धंधा करायें तो विधर्मी बिदेशी लोग जो करोड़ों रुपया यहाँ से कमा कर ले जाते हैं वह न ले जा सकेंगे।

वर्ण-व्यवस्था में जैसे प्रत्येक का उत्तम रीति से योग-क्षेम और उन्नति हो उसी तरह आश्रम व्यवस्था में भी अनुपम आदर्श समाविष्ट है। ब्रह्मचर्य अवस्था में द्विज वर्ण के बालक यथार्थ रीति से ब्रह्मचर्य पालकर धर्मशास्त्र का तथा वर्ण विहित धंधा का गुरुकुल में अभ्यास करें। गृहस्थाश्रम में अपनी जाति की योग्य कन्या जिसे माता पिता पसन्द करें, उसके साथ विधिपूर्वक विबाह करें, वर्णोचित धंधा करके द्रव्य कमावें। वानप्रस्थाश्रम में इन्द्रिय निग्रह करते हुए परोपकार परायण जीवन व्यतीत करें। संन्यस्ताश्रम में तमाम पदार्थों से चित्त-वृत्ति खींच कर प्रभुमय बन जायँ, इससे मोक्ष सहज रीति से

प्राप्त हो सकता है। ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद इन चारों वेद के चार उपवेद हैं—आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्व वेद और स्थापत्य वेद। वेदों की ११८० शाखाएं हैं और कर्म, उपासना तथा ज्ञान इस तरह तीन काण्ड कहलाते हैं। शिक्षा, कल्प, छंद, ज्योतिष, व्याकरण और निरुक्त ये ६ वेदों के अंग हैं। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा ये ६ दर्शन शास्त्र हैं। विष्णु, नारद, स्कंद, पद्म, शिव, बामन और श्रीमद्भागवत वगैरह अठारह पुराण हैं। रामायण और महाभारत ये दो इतिहास हैं और मनु, याज्ञवल्क्य, शंख लिखित, व्यास, यम, पराशर वगैरह ये बीस स्मृतियाँ—धर्मशास्त्र हैं। सनातन धर्म के इतने ग्रंथों में समग्र विद्या ज्ञान-विज्ञान तथा इह लोक परलोक की उन्नति का मार्ग दिखाने में आया है। तपोबल, योगबल, भक्तिबल, ज्ञानबल किंवा मंत्र विद्या के अनुष्ठान से उपरोक्त ग्रंथों में दिखलाया हुआ तत्त्व यदि समझने में आवे तो मनुष्य को इस जगत् में चाहे वह सिद्धि प्राप्त हो सकती है और सर्व संकल्प सिद्ध होते हैं। दुर्भाग्य है कि ऊपर निर्दिष्ट ११८० शाखाओं के ग्रंथों में से कितनेक बौद्ध, जैन तथा औरंगजेब के काल में नष्ट हो गये और कितनेक अंग्रेज तथा जरमन अपने २ देशों में उठा कर ले गये जिनका स्वयं लाभ लेकर अपने देश को लाभ दे रहे हैं।

पुराण वेद के विशद स्वरूप हैं। सामान्य बुद्धि के लोग वेद-उपनिषद् के गूढ़ सूत्रों का तात्पर्य समझ न सके इस लिये परम दयालु महर्षि वेद व्यासजी ने पुराण द्वारा उसके उदाहरण से समझाने की कृपा की है। उसमें ईश्वर स्वरूप आत्म-ज्ञानी ऋषियों ने कहीं भी गप्पें भरकर कल्पना के घोड़े नहीं दौड़ाये। परन्तु स्वयं सत्य के परम उपासक होने से उसी तरह योग-द्वारा ऋतंभरा-प्रज्ञा प्राप्त कर भूत, वर्तमान, भविष्य काल का उत्तमोत्तम ज्ञान वाले होने से वो जो २ दिखा गये हैं वह ठीक सत्य और चारों युगके लोगों को लागू पड़ने-वाली अत्यन्त कल्याणप्रद घटना ही है। शाप, वरदान, दिव्यता और आसुरीपना आदि का पूर्वापर का संबन्ध जाने बिना तथा अल्पज्ञता से हालके कितने लोग अपने बाप दादाओं के इन अमूल्य धन वेद शास्त्र पुराणों पर नानाविध कुतर्क एवं शंकायें उठाते हैं और बाल्मीकि, विश्वामित्र, सुकन्या, द्रौपदी, देवयानी, तारा, मन्दोदरी के चरित्रों पर नीच स्थिति से उच्च होने की, गुण कर्म से जाति वर्ण मानने की, अस्पृश्यता निवारण की, स्वयंबर की, विवाह विच्छेद की, वर्णसङ्कर खान-पान की, विधवा विवाह की तथा वर्णान्तर लग्न की बेहूदी बातें करते हैं। मात्र बातें करके ही ये धर्म-द्रोही नास्तिक अटकते नहीं, परन्तु अपने सनातनी हिन्दुओं की शान्तवृत्ति देखकर

अब कानून पास कराने में कटिबद्ध होते हैं। जरमनी और पाश्चात्य देशके तत्त्वज्ञानी तो हमारे सनातनधर्म के उच्चतम तत्त्वज्ञान और वर्ण व्यवस्थाको देखकर मुग्ध हो जाते हैं और मुक्तकंठ प्रशंसा कर संस्कृत-भाषा का, श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का, महाभारत का, योगसूत्रों का तथा उपनिषदों का ज्ञान परम आदर से प्राप्त करते हुए विज्ञान का संशोधन तथा विकास कर रहे हैं।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः

ऐसा कहकर भगवान कृष्ण ने चारोही वर्ण मैंने बनाये ऐसा श्री गीताजी में दिखाया है। उसी तरह ऋगवेद में भी "ब्राह्मणोस्य मुखमासीत् बाहू राजन्य कृतः ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्‌भ्यां शूद्रो अजायत" कहा है। अर्थात् भगवान के मुखसे ब्राह्मण, बाहू से क्षत्रिय, उरु से वैश्य और पैर से शूद्र उत्पन्न हुए हैं इस प्रकार निरूपण हुआ है। तब भी अभी चार वर्ण के उपरांत जो अनेक जातियाँ हिन्दुओं में दृष्टिगोचर होती हैं उसका कारण ये है कि, शास्त्र के मना करने पर भी जिन स्वच्छंदी लोगों ने स्वेच्छाचार के वश होकर अनुलोम तथा प्रतिलोम संबंध किये उसीसे अनेक जातियाँ हुई हैं। उच्च वर्ण का पुरुष नीच वर्ण की कन्या के साथ संबंध करे तो अनुलोम और

नीच वर्ण का पुरुष उच्चवर्ण की कन्या के साथ संबंध करे तो प्रतिलोम कहा जाता है। अन्त्यज आदि अस्पृश्य होना शूद्र पुरुष का ब्राह्मणी के साथ हुए प्रतिलोम संबंध का तथा सगोत्र विवाह का ही परिणाम है। जिन दुष्ट और दुराचारी मनुष्यों ने शास्त्र-निषिद्ध आचरण किये उनके पाप निवारणार्थ और सद्गति के अर्थ प्रजापति मनु महाराज ने पाप के परिमाण में दण्ड भोगने के लिये जातीय विभाग रखे और उन्हीं के योग क्षेम के लिये धंधा-उद्योग की व्यवस्था कर दी। जिन्होंने अपनी २ जाति का धंधा प्रामाणिकता से करते हुए प्रभु-स्मरण किया उनका उद्धार सहज है, "स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः" इस भगवत् वाक्यानुसार उच्च और नीच वर्ण के हिन्दू आज पर्यन्त अपनी२ जातिका कर्म श्रद्धापूर्वक करते हुए अपना उत्कर्ष मानते आये। परन्तु गांधी, मालवीय, नेहरू, पटेल, बिड़ला, बजाज, राजेन्द्र, राजगोपालाचार्य, रामस्वामी अय्यर, कुर्तकोटी, केलकर, मुंजे, सप्रू, गौड़, अम्बेडकर वगैरह नामधारी सुधारक आज हिंद में पैदा हुए हैं जिनने स्वराज्य, सुधार, हक्क, प्रगति तथा शुद्धि-संगठन के नाम उत्कापात मचाकर अस्पृश्यता निवारण, अन्त्यज मंदिर प्रवेश, तलाक, वर्णान्तर विवाह, भंगी-चमारों को प्रणवमंत्रकी दीक्षा, जात-पांत तोड़क मण्डल, विधवा विवाह, नये शास्त्रों की रचना तथा

आर्पशास्त्रोंको और मूर्तियों को आग लगाना आदि अधमाधम भयानक प्रवृत्तियां देशमें उत्पन्न की जो यादव-स्थली मचाकर उच्च-नीच उभय का नाश करनेवाली हैं। अस्पृश्यता यह कलंक, भ्रम अथवा तिरस्कार नहीं, किन्तु भूषण है। शास्त्रोक्त मर्यादा और आत्मशुद्धि का अमोघ साधन है, "य इह कपूयचरणा अभ्यासो ह यत्ते कपूयां योनिमापद्येरन्। श्वयोनिं वा चांडालयोनिं वा।" पूर्वजन्म में पापाचरण किये हुए जीवों का जब इस लोक में आगमन होता है तब उनको श्वानयोनि, शूकरयोनि अथवा अन्त्यज योनि प्राप्त होती है यह छांदोग्य उपनिषद् का कथन है। "दिवाकीर्त्तिमुदक्यां च पतितं सूतिकां तथा। शवं तत्स्पृष्टिनं चैव स्पृष्ट्वा स्नानेन शुद्धयति॥" अन्त्यज, रजस्वला स्त्री, पतित, प्रसूता और शव इनका स्पर्श करनेवाला तथा उन सभी का स्पर्श करनेवाला स्नान करने से शुद्ध होता है—ऐसी मनुस्मृति की आज्ञा है। "चण्डाल दर्शने सद्य आदित्य मवलोकयत्। चण्डाल स्पर्शने चैव सचैलं स्नानमाचरेत्॥" चंडाल नजर में आवे तो तत्काल सूर्यका दर्शन करना और चंडाल का स्पर्श हो जाय तो कपड़े सहित स्नान करना ऐसी पराशर स्मृति आज्ञा करती है और—

"रुद्रस्य चाऽथ विष्णोः प्रकाराभ्यन्तरे यदि। रजस्वला वधूश्चैव चाण्डालश्च समागतः॥ ततो ग्रामोत्सवे

हस्त शताभ्यन्तरतो यदि । तद्देवस्य कलाहानी राज्ञो मरणमेव च ।। तद् ग्रामस्य क्षयः प्रोक्तः शस्यानां नाशनं ध्रुवम् ।।"

शिवालय अथवा विष्णु मंदिर की सीमा के अन्दर रजस्वला स्त्री अथवा अन्त्यज आ जाय, ऐसेही जब देवकी सवारी उत्सव प्रसंग ग्राम में निकले उस समय में भी सौ हाथ के अन्दर रजस्वला स्त्री अथवा चंडाल आवे तो उन देव की कला की हानि होतीहै और राजा का मरण होता है और ग्राम की धान्य संपत्ति का नाश होता है, इस तरह "कारणागम प्रायश्चित्तकांड" में भी विधान है। दूसरी तरह विचारिये तो संसार के लोक व्यवहार में भंगी चमार की मलमूत्र साफ करना तथा मरे हुए पशुओं को उठाने के लिये खास अगत्यता है। उन्हीं को उनके बाप दादाका काम छुड़ाकर अम्बेडकर की तरह अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करा बड़ा अधिकारी बना उन्हीं के स्थान में क्या गांधी, मालवीय, नेहरू, पटेल इत्यादिकों के लड़कों के द्वारा अन्त्यजों का मलमूत्र साफ कराने का काम कराना उचित है? स्नान कर शुद्ध होकर संध्या पूजा में बैठा हुआ हिन्दू अपने भाई पिता या पुत्र से भी स्पर्श नहीं करता उसी तरह भाई पुत्र या पति अपनी रजस्वला पत्नी, पुत्री, बहिन तथा माता का

स्पर्श नहीं करता क्या उससे उनका तिरस्कार होता है ? कदापि नहीं । ये तो शरीर तथा हृदय शुद्धि की शास्त्रोक्त और वैज्ञानिक परमोत्कृष्ट प्रणालि है । और ये स्पृश्यास्पृश्य विवेक, भक्ष्याभक्ष्य विवेक, ज्ञातिबंधन तथा विवाह मर्यादा जहाँ तक हिन्दुओं में जीवित रहेगी, तहां तक ही हिंदुत्व, हिंदू जाति, हिंदू संस्कृति और सनातन धर्म है । ये उज्ज्वल आर्य भावना हिन्दुओं के अन्तःकरण में न होगी तो हिन्दू और ख्रिस्ती मुसलमानों के बीच में भेद क्या रहा ? जब हिन्दुओं में से ये पवित्र वर्णाश्रम धर्मरक्षक आर्यभावना नष्ट हो जायगी ‌ हिंदू हिंदू न कहलायेंगे प्रत्युत वर्णसंकर किंवा यवन म्लेच्छ कहलायेंगे, और बाद में ऐसे जातिधर्महीन पतितों से हिंदुस्थान की स्वाधीनता प्राप्त करने की अभिलाषा रहेगी क्या ? दो करोड़ विटले हुए ख्रिस्ती और सात करोड़ मुसलमान इस देश का नमक खाकर जीते हुए प्रत्येक देश हितकी हलचल में आड़े पड़ कर तुर्कस्थान अफ़गानीस्थान, पेलेस्टाईन, जेरुसालेम किंवा यूरोपकी तरफ देखते हैं, उनको ही मदद करते हैं और उन्हींको अभ्युदय की इच्छा करते हैं, यह क्यों नहीं विचारा जाता ? यहाँ कितनोंके मनमें यह प्रश्न उपस्थित होता है कि शास्त्रीय सिद्धान्तोंका बहुत आग्रह रखने से अन्त्यज भ्रष्ट होकर ख्रिस्ती मुसलमान हो जायंगे और इस तरह

हिंदू जातिकी संख्या कम हो जायगी तो हिन्दू नाम मात्र शेष रह जाँयगे ? उसका उत्तर यह है कि इस तरह समझदार मनुष्य कदापि अपनी जाति धर्म से विचलित नहीं होंगे और जो स्वार्थी, लोभी, लालची, कायर तथा धर्महीन होंगे वे किसी प्रकार की छूट रखने पर भी स्वधर्म में निश्चल नहीं रहेंगे। शास्त्र के सिद्धांत त्रिकालाबाधित हैं, वे मनुष्य की तरंग के अनुसार कदापि परिवर्त्तित नहीं हो सक्ते। उसी तरह अविचारी याचना करने वालों को थोड़ी भी छूट देने से फल ये होगा कि "सूचि प्रवेशे मुशल प्रवेशः"। ख्रिस्ती पादरी वगैरह परोपकारी के पुतले बनकर ७५ वर्ष हुए हिंदुस्थान में जगह २ थाना डालकर स्कूल कालेज दवाखानाओं तथा उद्योगालयों को खोलकर करोड़ों रुपया खर्च कर अविरत प्रचार कार्य द्वारा हिंदुओं को भ्रष्टकरने का प्रयत्न करते हुए कहते है कि हमारी बाईबल तथा क्राइस्ट, कृष्ण तथा गीता से उत्तम है। तुम्हारे कृष्ण काले, चोर, व्यभिचारी थे। तुम्हारे हिन्दुओं में उच्च नीच का भेद है, उच्च वर्णके हिन्दुएं तुम भंगी चमारों को अस्पृश्य मानकर तिरस्कार करते है। हमारे ख्रिस्ती धर्म में सब समान है, उससे तुम हम में मिलोंगे तो जो चाहोंगे वो सुख मिलेगा। आर्य-हिन्दू इस देशके मूल रहने वाले नहीं परन्तु कोकेशीअस पर्वत, उत्तर ध्रुव, युरोप, एशिया में से यहाँ आये है और यहाँ के

आदि निवासी तुम लोगों को निकाल कर बस गये हैं, इस २ तरह बिलकुल असत्य बाते खिस्ती लोग कहकर मतिभ्रम पैदा कर हिन्दुस्थान को सदा के लिये पचाने की धारणा रखते हैं। इस कथन को गांधी, पटेल, नेहरू, बोस जैसे तो सत्य मानतेही हैं, किंतु विवेकानन्द और तिलक जैसे भी सहमत होकर भूले यह खेद की बात है। वेद स्मृति रामायण और पुराण तो डिंडिम घोष करके कहते हैं कि हिन्दुस्थान यह आर्यावर्त्त, और आर्यावर्त्तही आर्य–हिन्दुओं का असली निवास स्थान है। हिन्दू–आर्य बाहर से यहाँ (हिन्दुस्थान में) नहीं आये। वे यहाँ के ही मूल वतनी है। आज से बीस लाख वर्ष पूर्व भगवान् श्रीरामचन्द्रजी इस पवित्र हिंदुस्थान की भूमि में सरयू तट पर बसी हुई अयोध्या में प्रकट हुए थे और येही आर्यों का असली निवास स्थान था जहाँ यमुना तट पर बसी हुई मथुरा नगरी में आज से तिरपन सौ वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण परमात्मा का प्राकट्य हुआ था। मनु महाराज ने भी आज से ३६ लाख वर्ष पहिले मनुस्मृति में स्पष्ट कहा है कि—

"आसमुद्रातु वै पूर्वादासमुद्रातु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्त विदुर्बुधाः ॥
कृष्णा सारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः।
स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छ देशस्ततः परः ॥

पूर्व समुद्र से आरम्भ कर पश्चिम समुद्र के बीच और हिमालय से आरंभ कर विंध्याचल के बीच के प्रदेश को विद्वान लोग आर्यावर्त्त कहते हैं। जिस देश में कृष्ण वर्ण का मृग स्वाभाविक फिरा करता है उस देश को यज्ञ करने योग्य देश जानना, और इसके सिवाय अन्य देश को म्लेच्छ देश जानना।

हिंदुस्थान हिन्दूओं की आद्य निवास भूमि होने का इस रीति से स्पष्ट प्रमाण होते हुए भी एकदेशीय अंग्रेजी शिक्षण लेने से जिनकी बुद्धि में भ्रम उत्पन्न हुआ है उससे वे सुधारक लोग अभी हिन्दु संस्कृति तथा सनातन धर्म के विरुद्ध बकवाद करके शत्रु का काम बजाते हैं यह देखकर सच्चे खिस्ती पादरियों की आत्मा अत्यन्त संतुष्ट होती होगी और उनके हिन्दूओं को भ्रष्ट करनेका का कार्य हिन्दुआनी की कुक्षि में जन्मे हुए सुधारक, कुधारक, बिगाड़क, स्वराज्यवादी, नेता नामधारिओं के द्वारा होने से वे अपने को बहुत कृतार्थ मानते होंगे इसमें कुछ संदेह नहीं; परन्तु हम दावे के साथ कहते हैं कि हिन्दु संस्कृति और धर्म के आगे इतर देश की संस्कृति कुछ गिनती में नहीं। यह सर्वोपरि हिन्दु संस्कृति का आदर्श इतना अद्भुत, अद्वितीय, अप्रतिम और अनुपम है कि उसकी तुलना में दूसरी कोई संस्कृति क्षण भर टिक सके ऐसी नहीं है। इतिहास देखने से साफ मालूम पड़ता है कि जब [illegible]

सनातन धर्म उन्नति के शिखर पर पहुंचा था तब यवन म्लेच्छ देश के लोग प्रायः जंगली अवस्था में थे; इसलिये डार्वीन नामक युरोपियन विद्वान् मनुष्यों की उत्पत्ति बानरों में से बताते हैं और उसका वह सिद्धान्त—युरोप के लिये सत्य है ऐसा कहे तो मिथ्या न होगा। परन्तु हिन्दुस्थान के दिलीप, मांधाता, पृथु, अम्बरीष, हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिरादि नरेन्द्रों ने जब अश्वमेध तथा राजसूय यज्ञ करने के लिये दिग्विजयार्थ अपना घोड़ा समग्र पृथ्वी पर खुला छोड़ा तब वह घोड़ा तमाम देशों में फिरता था, कोई उसको पकड़ कर बांधने का साहस कर नहीं सकता था। दुसरे देशके राजा वो दिग्विजयी नृपेन्द्र का वर्चस्व स्वीकार करते, अन्यथा युद्ध करके स्वधाम पहुंचते थे। उस वक्त जो जो देशके क्षत्रिय राजा दिग्विजय करने के लिये यवन म्लेच्छ देशों में गये, उन्होंने ही यवन म्लेच्छों को खाना पीना कपड़ा पहनना तथा मनुष्यता की रीति से कैसे चलना वगैरह बोध तथा हुक्म से सिखाया, जिससे अभी युरोप के मनुष्य थोड़ा बहुत विकास करके मनुष्य बनते जाते हैं। अपने हिंदुओं के लिये तो महर्षि मनु कहते हैं कि—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्व मानवाः॥

भरतखंड देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों के पास से पृथ्वी पर के सब मनुष्यों को अपना २ सदाचार सीखना चाहिये। कैसे खेद की बात हैं कि ऐसे उच्चतम आदर्श वाले हिन्दुओं को मनुष्य से बंदर बनाना चाहते हैं ? इस देश और विदेश की प्रजा से सनातनिओं का प्रश्न है कि दशरथ महाराजा को श्री रामचंद्र जी प्राण से अधिक प्रिय पुत्र थे। वय में ज्येष्ठ तथा सर्व गुण संपन्न पुत्र होने से श्री रामचन्द्रजी को युवराज पद्द पर अभिषेक करने की समग्र तय्यारी महाराजा के हुक्म से हो चुकी थी। महाराज ने एक वक्त अपनी स्त्री कैकेयी को दो वचन दिये थे। उन वचनों को कैकेयी ने इस वक्त मंथरा की दुष्ट प्रेरणा से याद किया और राम को चौदह वर्ष का वनवास तथा भरत को राज्याभिषेक देने की याचना की, परन्तु "रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाय बरु बचन न जाई॥" इसके अनुसार महाराजा दशरथ ने अपने प्राण त्याग किये तब भी बचन का लोप न किया। हिन्दु संस्कृति के सर्वोच्च इस आदर्श के समक्ष क्या दुनिया की किसी प्रजा के पास आदर्श है ? रामचंद्र जी का कोई दोष न था। पिता की प्रतिज्ञा सत्य सिद्ध करने के लिये आप हँसते मुखारविंद से वन में पधारे और विमाता माता कैकेयी पर जरा भी रोष न किया इस हिन्दु संस्कृति के समक्ष अन्य कोई संस्कृति है

क्या ? पति बन में जाय तब स्त्री पलंग पर पौढ़ कर सुख भोगे यह पतिव्रता सती के लिये उचित नहीं, इसलिये जनकतनया जानकी जी भी पति के साथ वन में गयीं । वन में उन्हें रावण हरण कर ले गया उधर अशोक वाटिका में अनेक प्रकार के दुःसह कष्टों को सहा, तब भी वे सती धर्म से हटी नहीं और मन, वाणी, कर्म से शुद्ध रह कर अपने पतिदेव का ही निरंतर स्मरण करती रहीं । ऐसी सती, साध्वी इतर देश की संस्कृति के इतिहास में कहीं भी लिखी हुई हैं क्या ? एक भाई लक्ष्मण जी राज्य-सुख को छोड़ कर राम के साथ बन में चल निकले और दूसरे भाई भरत जी राज्यपद स्वीकार करने की जगह दुष्ट हेतु वाली अपनी माता का तिरस्कार कर बन में जाकर श्री रामचन्द्र जी के चरणों को पकड़ कर पुनः अयोध्या पधारने की, और श्री राम के एवज स्वयं वनवास पाने की विनती करते हैं, पर जब भगवान श्री राम किसी रीति से पीछे नहीं पधारते और भरत जी को ही राज्य संभालने की आज्ञा करते हैं तब भरत जी अयोध्या न जाकर श्री राम की पादुका को मस्तक पर धारण कर नंदीग्राम में रहते हुए तपस्वी भेष से चौदह वर्ष व्यतीत करते हैं, ऐसी ज्वलंत त्यागवृत्ति और भ्रातृप्रेम क्या हिन्दु संस्कृति के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी देखने में आते हैं ? हनुमान जी की अनन्य सेवा से

सीता जी ने प्रसन्न होकर वरदान माँगने को कहा उस पर सच्चे भक्त हनुमान जी ने राम-भक्ति के सिवाय दूसरा कुछ भी नहीं मांगा। तब सीता जी ने इसके उपरांत बहुत खुश होकर एक अति अमूल्य हीरे का हार हनुमान जी को दिया। हनुमान जी अपने दांतो से इस अमूल्य हार का एक एक दाने को तोड़कर देखने लगे कि उसमें क्या कहीं भी श्री राम हैं ? जब उनको उसमें प्रभु श्रीराम नहीं दीखते तब वह उसको तोड़ कर फेंक देते हैं। इस तरह की उत्कट निष्काम भक्ति हिन्दु संस्कृति के सिवाय क्या अन्यत्र कहीं भी मिल सकती है ? रावण दुष्ट था, उसने जगत को नष्ट कर तथा सीता जी को हर कर महान् अपराध किया था। उसका युद्ध में श्रीराम-चन्द्र जी ने संहार कर उसके ही भाई विभीषण को शरणागत होने पर उसके मस्तक पर राज्य-तिलक कर लंकाका राज्य सुपुर्द किया, ऐसी अनुपम उदारता और शरणागत रक्षण की भावना हिंदु संस्कृति बिना दूसरे किसी जगह क्या दृ्ष्टि गोचर हो सकती है ?

यूरोप और जापानादि देश के लोग हिन्दुस्थान मे हजारों की संख्या में कमाने को आ रहे हैं। इस देश में उनका स्वार्थ है, परावलंबन है और हमारे हिन्दुओं की रहन-सहन, भोजन-भेष उत्तमोत्तम श्रेणी के हैं तो भी उन्होंने उसको स्वीकार कर

अपने किसी भी व्यवहार में कदापि स्थान नहीं दिया। हिन्दुस्थान में आये हुए किसी युरोपियन अथवा जापानी को सिर पर चोटी पगड़ी, गले में दुपट्टा, कमर में धोती तथा शरीर में अंगरखो धारण करते देखने में नहीं आया। उन्होंने पूरी रोटी खिचड़ी लड्डू सीरा आदि अति स्वादिष्ट और शुद्ध सात्विक खुराक ग्रहण की हो अथवा वे ब्रुश पाऊडर छोड़कर बब्बुल के दांतन करते हो ऐसा भी जानने में नहीं आया। तब कितने दुर्दैव की बात है कि हिन्दू अपने ही देश में सुखपूर्वक रहते हुए और अपनी सभ्यता के सर्वोत्तम होते हुए भी उसको दिन पर दिन बिना समझे छोड़ कर अपना जीवन कलंकित और लांछनीय बना रहे हैं। हिन्दुओं के मस्तक पर चोटी होनी ही चाहिये उसको कटाकर कितने ही बालों को रखाने लग गये हैं। पगड़ी फेंककर मस्तक पर टोपी पहनने लगे थे वह भी अब नहीं पहिनते। कितने ही खुले माथे रहते हैं, गले में उपरना की जगह नेकटाई बाँधते हैं, धोती जैसी पोशाक को छोड़ कर कितने कोट पतलून हाफपेन्ट और लेंगा पहनने लगे हैं। अपने को देशसेवक कहलाने के लिये कितने ही अपशकुनी दिखाने वाले खादी के कुरता टोपी पहनते हैं और मुख में विलायती चुरुट सिगरेट सिलगाकर पैर में अमेरिकन बूट पहिर कर फिरते हैं जिससे यह किस देश तथा जाति वर्ण की

पैदाइश है ? यह भी पहिचानने में मुश्किल आ पड़ी है। नहीं तो प्रथम पोशाक से मनुष्य की जाति, वर्ण अथवा देश सहज पहिचानने में आ जाता था। ब्रह्मा ने मर्दों को अधिकार समझ कर मूंछ दी तो कितने मूंछ मुंडा कर और कितने जैसे रात्रि में सोते समय में मूषक ने आकर मूंछ काट ली हो अथवा दंशित हो गया हो वैसे मखी जैसें फेंचकट वाले रखने में शोभा समझते हैं। कितने हिन्दुओं को शुद्ध रीति से घर में पकाया हुआ दाल शाक रोटी भात का खुराक भाता नहीं पर यूरोपियन तथा ईरानी होटल के चाय, कोफी, कोको और तीन २ महीने के बासी बिस्कुट खाना अच्छा लगता है। कितनों को ताजा बबूल की दांतन करते अच्छी नहीं लगती। पर घोड़े की पूंछ के बाल का बना हुआ ब्रुश लेकर पेइस्ट दांत में घिसना अच्छा लगता है। कितने अपनी ज्ञाति के पवित्र भोजन को पिकेटिंग कर बंद कराते हैं और भंगी मुसलमान पारसी भिश्ती के पास बैठ कर किसी के हाथ का पकाया हुआ अभक्ष्य पदार्थ पैसा देकर खुशी से खाते हैं। पीने में शुद्ध पानी की जगह रोगीष्ठ तथा किसी भी जाति के मनुष्य के मुंह से स्पर्श की हुई सोडा लेमन तथा जिंजर की बोतली चढ़ाते हैं। स्वयं तो इस रीति से अनाचार कर पतित हो गये पर अपने अंकुरित दो तीन

वर्ष के बच्चों को भी कोट पतलून हैट चढ़ाना सिखाकर विस्कुट, पिपरमेन्ट खवाया करते हैं । मातृभाषा जैसे छाती में प्रहार तथा वेदना करती हो ! वैसे उसको स्नेही संवंधियो साथ की बातचीत तथा पत्र में उपयोग न कर अंग्रेजी का व्यवहार करते हैं । कितने अंग्रेजी विल्कुल पढ़े होते नहीं तो भी पांच अंग्रेजी अशुद्ध शब्दों का प्रयोग कर अपनी आत्मा की संतुष्टि मानते हैं । अंग्रेज, पारसी तथा मुसलमान चाहे जैसा उच्चकोटि का अधिकारी अथवा सत्ताधीश पुरुष हो तो भी वह अपनी मसजिद, अगीयारी तथा गिरजा के पास आते नमन करेंगे और प्रार्थना तथा निमाज का समय होने पर वे अपने वाहन में से उतर कर भाव पूर्वक निमाज अथवा प्रार्थना में शामिल होंगे । इतना हीं नहीं पर धारासभा, कांग्रेस, म्युनिसिपालिटी तथा लोकल बोर्ड तक की चलती कारवाई को भी उन्होंने प्रार्थना तथा निमाज निमित्त थोड़े समय रुकवाया है और उसमें राष्ट्रमतवादी हिन्दू सहर्ष संमत हुए हैं । पर यही हियाफूटे राष्ट्रमतवादी हिन्दू रास्ते में आये हुए देव मंदिरों को नमना, गाड़ी में से उतर कर दर्शन करने तथा संध्या वंदन पूजा आदि नित्य कर्म करने के लिये जाना तो दूर रहा पर उलटे उन मंदिरों को वेश्यावाड़ा कहने की धृष्टता करते हैं और पीछे इन्हीं मंदिरों में

अन्त्यजो को दर्शन के बहाने से दाखिल कराने की निर्लज्ज धांधली मचाकर कानून बनाते हैं। यह कितना और कहां तक हिन्दुओं का पतन है !

यहीं स्वाभाविक रीति से लोगों को जानने की जिज्ञासा होगी कि जब सनातन धर्म, आर्य संस्कृति, हिन्दू सभ्यता, वर्णाश्रम धर्म, वेदशास्त्र पुराण तथा हिन्दु जाति का आदर्श सर्वोत्कृष्ट है, इनकी प्रणालि रीति नीति मान्यता श्रेयस् और प्रेयस् देने वाली है और जिसके फलस्वरूप हिन्दू पृथ्वी पर स्वर्गीय सुख भोगते थे वह अभी ऐसी अन्तिम सीमा की अधोगति को क्यों अनुभव करते हैं ? हमारे मत से हिन्दुओं की ऐसी हृदय भेदक अवनति होने के कारण यह है कि अपनी सर्व प्रकार की सुखद अवस्था के दिनों में अति सुख और समृद्धि के भोगने से कितने की राजा ईर्ष्या अदेखाई करने लगे, कितने आलसी प्रमादी और विषय लंपट बन गये और कितने की ने हद से अधिक उदारता दिखाकर हिन्दुस्थान को लुटवाया और पराधीन बना दिया। स्वधर्माभिमानी धीर वीर क्षत्रिय नरेशों के नियन्त्रण के अभाव से ही हिन्दू इतनी हद पर्यन्त मूर्ख, पामर, पतित, नपुंसक बने हैं। गत पचीस सौ वर्ष के भीतर बौद्धों और जैनों के उपदेश से लोग स्वधर्म-कर्म से विचलित कायर हींजड़े भीरु तो बन ही गये थे, परन्तु कुमा-

रिल भट्ट और शंकराचार्य ने अपने असाधारण पुरुषार्थ से पुनः लोगों के हृदय में स्वधर्म निष्ठा जागृत की थी पर वह एलेकजेण्डर दी ग्रेट तथा महमद गज़नी के आक्रमण होते रहने से बहुत समय तक टिकी नहीं। विदेशी शत्रु के आगमन के समय यदि हिन्दुस्थान के छोटे बड़े तमाम राजाओं ने एकत्र होकर पंजाब के वीर केसरी पोरस को तथा गुजरात के वीर भीमदेव को सहायता की होती तो एलेकजेन्डर तथा गज़नी की ताक़त नहीं थी वे हिन्दू नरेशों को हराकर हिन्दुस्थान की अपरिमित संपत्ति अपने देश घसीट ले जाते। किन्तु दुर्भाग्य से ऐसा न बना। इसी रीति से शाहबुद्दीन गोरी चढ़ आया, तब पृथ्वीराज को मदद करने के बदले जयचन्द हिंदुओं के शत्रु का सहायक बना। फ़िर भी पृथ्वीराज ने अपने अप्रतिम सामर्थ्य से शहाबुद्दीन गोरी को सोलह बार परास्त किया। यहां पृथ्वीराज की गंभीर भूल यह हुई कि वह शत्रु को एक दो तीन ऐसे बार बार माफी देता हुआ उसके सामने आ खड़ा हुआ तो भी चेतकर उसने आततायी को मारा नहीं। अंत में वह स्वयं शत्रु के हाथ आया, और हिंदुस्थान पराधीन बन गया।

जब कि लक्ष्मी और पृथ्वी, जगदीश्वर श्रीहरि के अतिरिक्त कभी किसी की नहीं हुई और होने की नहीं, यह बात

निश्चित है। उन्नति अवनति, उदय अस्त के नियम के अनुसार आज एक देश दुर्दशा भोगता हुआ पराजित देखने में आता है तो वही पीछे कालान्तर में ईश्वर के अनुग्रह से सुखी स्वतंत्र भी हो सकता है। सन् १९०४ में कौन जानता था कि निर्बल, अल्प साधन वाला कीड़ी के समान जापान विपुल, राक्षसी साधन वाले हाथी समान रशिया को धूल में मिला कर उसके शिर पर चढ़ कर आज समग्र दुनिया के राज्यों को आवाहन करेगा ? ईश्वर का नियम तो ऐसा है कि प्रत्येक देश को अपनी विशिष्ठ संस्कृति, सभ्यता, धर्म, सदाचार, जलवायु, प्रकृति, वगैरह प्राप्त हुई हैं, उसके अनुसार भाव वाली प्रजा रहे तो आनंद में दोनों का जीवन व्यतीत हो। परन्तु जो कोई दूसरी प्रजा दूसरी संस्कृति सभ्यता तथा धर्म लेकर उसमें प्रवेश करे तो परस्पर वैमनस्थ ही हो। प्रतिकूल संयोग तथा परिस्थिति के योग में कोई प्रजा संताप सहन करके चुप बैठ सकती है परन्तु योग्य अवसर मिलने पर वह मस्तक उठा कर पराधीनता को फेंक देने में नहीं ही चूकेगी, यह बात बिलकुल ठीक है। हिंद में भी अभी हिंदु संस्कृति, सनातन धर्म, वर्णाश्रम मर्यादा और वेद शास्त्रों के सामने जो विधर्मी विदेशी तथा नामधारी सुधारक लोग उसको छिन्न विछिन्न करने के लिये दिन रात जो भयंकर चेष्टा कर रहे हैं

यह थोड़े से समय के लिये ही है। अब विचारना चाहिये कि सनातन धर्म और हिंदु संस्कृति तथा वर्णाश्रम धर्म के ऊपर कौन कौन क्या क्या प्रहार कर रहे हैं और कैसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई है ?

रिस्थिति।

१ हिंदुओं के ही मत लेकर धारासभा तथा म्युनिसिपैलिटिओं में चुने गये कांग्रेसवादी, गांधीपंथी, हिन्दू महासभा वाले नामधारी सुधारक हिन्दू सभ्य वहां स्वराज्य, कर न्यून कराने तथा गोरक्षण की लड़ाई नहीं लड़ते पर शारडा एक्ट, विधवा विवाह, दाय भाग, वर्णांतर लग्न, संबंध विनोद, अंत्यज मंदिर प्रवेश, अस्पृश्यता निवारण, धर्मादा संपत्ति तथा बुद्ध गया के मंदिर का अधिकार महंत के हाथ में से खींच कर बौद्धों को सौंपने वगैरह धर्म संहारक कायदों को पास कराने की हिंदुओं का प्रबल विरोध होते हुए अथाह चेष्टा करते हैं।

२ हिंदुओं के पास से लाखों तथा करोड़ों रुपयों के फंडो स्वराज्य, दुष्काल, धरतीकंप, गौमाता को घास, जल प्रलय, रोग, अछूतोद्धार, ग्राम्य उद्योग उद्धार आदि नाम पर कांग्रेस वादी लोग ले गये हैं ओर ले जा रहे हैं और पीछे उससे बहुत उन्मत्त तथा बलवत्तर बन कर सनातन धर्म और सनातनी हिंदुओं के ही नाश करने का प्रयत्न करते हैं।

३ हिंदुओं के ही द्रव्य की प्रकाशित से, जाहिर खबर से अथवा ग्राहक बनकर उत्तेजन देने से क्रोनीकल, टाईम्स,

बंम्बई समाचार, सांझ वर्त्तमान, जन्मभूमि, हिंदुस्थान, प्रजामित्र, नव भारत, आज, ट्रिब्यून, फोरवर्ड, हिंदू वगैरह पत्र प्रसिद्ध होकर निभे रहे हैं तव भी वह अहर्निश कांग्रेस, गांधी और समाजवाद के धर्म-ध्वंसक विचारों को फैला कर सनातन धर्म तथा हिंदु जाति का घोर अपमान करने के साथ लोगों के हृदय कलुषित और विकारी बना रहे हैं।

४ कांग्रेस राजद्वारी संस्था है। वह स्वराज्य की लड़ाई लड़ने के लिये ही स्थापित हुई है। उसमें पारसी, मुसलमान ईसाई, यहूदी, सिक्ख और हिंदु आदि तमाम जाति धर्म के लोग शामिल हैं। उसको कोई एक जाति धर्म के प्रश्नों को चचने का जरा भी अधिकार नहीं तव भी अभी गांधी की दुष्ट प्रेरणा से वह अपना ध्येय चूक गई है और केवल हिंदू जाति धर्म के साथ संबंध रखने वाले अस्पृश्यता निवारण के एक मात्र प्रश्न को अपने कार्य क्रम में रख कर हिंदू जाति धर्म की जड़ उखाड़ने के लिये प्रचंड प्रचार कार्य कर रही है।

५ मुसलमानों के अत्याचारों का सामना करने के लिये हिन्दुओं के अखाड़ा खोल उन्हें संगठित कर टक्कर झेल कर अपनी जान माल, स्त्री, पुत्र, संपत्ति तथा देव मंदिरों की रक्षा करने के हेतु से स्थापित हिंदु महासभा भी अब अपना उच्च ध्येय छोड़ कर यवन म्लेच्छों की शुद्धि शारडा एक्ट,

विधवा विवाह, जाति पांति तोड़क मंडल तथा अस्पृश्यता निवारण जैसी धर्म उच्छेदक प्रवृत्तियों का आदर कर भीतर २ विगठन कर रही हैं ।

६ आगाखान, हसन निज़ामी तथा तीन चार बड़े मुसलमानी राज्य, हिन्दुओं को भ्रष्ट कर कैसे मुसलमान बनाया जाय उसकी अनेक युक्तिप्रयुक्तियां कार्य में लगा रहे हैं और खिलाफ़त के नाम पर गांधी के बहकाये हुए मुसलमान ग्राम ग्राम और जगह २ हुल्लड़ मचा कर खुल्लम रीति से गायों का बध कर मंदिर मूर्तिओं को तोड़ कर हिन्दू स्त्रियों का अपहरण कर देव मंदिरो में होती हुई आरतियों को तथा लग्नादि प्रसङ्गपर बजते हुए वाद्यों को भी बलात्कार से बंद करा रहे हैं और समग्र दुनिया को मुसलमान बना कर उसके ऊपर मुसलमानी शासन चलाने की अपनी इस्लामी हलचल को आगे बढ़ा रहे हैं ।

७ अंबेडकर वगैरह ने अत्यजों को इतनी हद तक उन्मत्त बनाया है कि कांग्रेस, सरकार तथा गांधी ने जो कुछ अयोग्य छूट छाट तथा हक्क दिये उससे संतुष्ट नहीं होते और अब बिलकुल ही हिन्दू जाति धर्म का नाश हो ऐसा सोच कर ईसाई मुसलमान होने की धमकी भी देने लगे हैं । मनुस्मृति जैसे पवित्र धर्म शास्त्रों को तथा देव मूर्त्तिओं को जाहिर सभाओं

में अग्नि लगाकर हिंदू जाति धर्म का घोर अपमान कर रहे हैं।

८ आर्यसमाजी, ब्रह्मसमाजी तथा प्रार्थनासमाजी, जाति-पांति, श्राद्ध, मूर्तिपूजा, तीर्थ, अवतार तथा पुराणों का पेट भर निंदा कर अपने मलीन विचारों को फैलाने की अनुकूलता होने से वर्णांतर विवाह, भंगी, ब्राह्मण, वैश्यों का सह भोजन, यवनोंकी शुद्धि तथा अस्पृश्यता निवारण की हलचल को खूब जोर शोर से चलाकर हिंदुत्व को विदा कर रहे हैं।

९ हिंदू नरेशों को सनातनी हिंदू लोकपालों का अंश मानकर उनका सम्मान करते हैं। पर कांग्रेसवादी, सुधारक, साम्यवादी उन्हें भाररूप, अनर्थमूलक गिन कर पदभ्रष्ट करने का मथन करते हैं। गायकवाड़ जैसे कितने ही राजा तो इस भूमि के हवा पानी और मनुष्यों को दूषित समझ कर हमेशा युरोप में ही भटकते रहते हैं और वर्ष में एकाध महीने हिन्द में आकर लोगों के दुःख, असन्तोष, पीड़ा दूर करने के बदले शारदा एक्ट, सगोत्र विवाह, जातिओं के नाश के लिये जाति दुःख निवारण एक्ट, अन्त्यजों का स्कूलों में, कूप तथा मंदिरों में प्रवेश और जाति भोजन व्यवहार बंध वगैरह हिन्दू धर्म के विध्वंसक कानूनों को धड़ाधड़ पास कर रहे हैं। कोल्हापुर, मैसूर, रीवां, ग्वालियर, काश्मीर और ट्रावनकोर भी अपने को प्रगतिमान दिखाने के लिये इनका अनुकरण कर ऐसा ही

जाति उच्छोदक मार्ग में अपनी राज्य सता का उपयोग कर रहे हैं।

१० क्रिस्तान पादरी भी करोड़ों रुपयों के फंड लाकर हिंद में स्थान स्थान पर मुक्ति फौज के थाना डालकर, ट्रेक्ट, पत्र पत्रिकाओं से, स्कूल, हाई स्कूल तथा कालेज की शिक्षा से, आर्थिक सहायता से तथा दवाखानों में होशियार डाक्टरों को रख कर मुफ्त सारवार से हिन्दुओं को भ्रष्ट कर क्रिस्तान बना रहे हैं।

११ शिक्षण संस्थाओं में प्रथम से ही सरकार ने धर्म के शिक्षण देने की व्यवस्था नहीं रक्खी। हाई स्कूल, कालेज को बोर्डिंगके भोजनालयों में खाने वाले विद्यार्थी भी अपनी ज्ञाति तथा वर्ण के धर्म का पालन कर न सके ऐसे ही युनिवर्सिटी सेनेट में कितने गांधीपंथी सुधारक सेनेटरोंने घुस कर व्यवस्था की है और धर्म विरोधी लेख तथा धर्म विरोधी व्यक्तिओं के जीवन चरित्र वाली टेक्स्ट बुक प्रविष्ट करा कर जाति धर्म की हत्या की है।

१२ हिन्दू युनिवर्सिटी को काशी में स्थापित करते समय पं० मदन मोहन मालवीय ने दरभंगा के स्व० महाराजा को अग्रसर बना कर ऐसी प्रतिज्ञा जाहिर कर सनातनिओं के पास से दो करोड़ रुपया निकलवाये कि उसमें दस

हजार हिन्दू बालकों का ऋषि मुनिओं के प्राचीन आश्रमों की पद्धति सनातन धर्म का शिक्षण तथा व्यवहारोपयोगी ज्ञान देकर वसिष्ठ, व्यास, विश्वामित्र, भीष्म और भीम जैसे समर्थ पुरुषों को पैदा करेंगे इसके बदले मालवीय नें सनातनिओं के साथ विश्वासघात कर वहाँ सनातन धर्म के विरुद्ध अनेक षड्यंत्रो को रचकर कट्टर धर्माग्रही पंडितो को सिनेट तथा विद्यालय में से निकल जाने की फर्ज निकाली। सिनेट में तेजबहादुर सप्रू रविन्द्रनाथ टागोर और सरोजनी नायडू जैसी धर्म विरोधी व्यक्तियों को रख कर हिन्दू विश्व-विद्यालय में भंगी मुसलमानों को दाखिल किया। जाति वर्ण का भेद रक्खे विना विद्यार्थी उसमें भोजन करने लगे और उस संस्था को ही मालवीय ने लाक्षागृह बनाकर अस्पृ-स्यता निवारण, अ त्यज मंदिर प्रवेश, चमार भंगी को प्रणव मंत्र की दीक्षा और नवीन शास्त्र रचने की हिमायत आरंभ कर सनातन धर्म के अग्निदाह देने लगे हैं।

१३ सरकार ने धार्मिक विषय में तटस्थता आज तक दिखाई थी पर उसने अभी मद्रास तथा बंबई वगैरह प्रांतों में ऐसा सरक्युलर निकाला है कि सरकार तरफ़ से चलती और मदद मिलती तमाम स्कूलों में अन्त्यजों को प्रवेश करने तथा कुँओं में से पानी भरने देना चाहिये उसी प्रकार सी०

पी० की सरकार ने नौकरिओं में ब्राह्मणों को न रखकर अन्त्यजों और मुसलमानों की भरती करना ऐसा अविचारी सरक्युलर निकाला है, और सरकारी सहायता लेने वाले स्कूल यदि अन्त्यजों को दाखिल न करें तो उनकी ग्रांट बंद करने की भी सरकार ने आज्ञा की है। इससे अधिक पक्षपात, अन्याय तथा हिन्दू जाति धर्म का अपमान दूसरा क्या हो सकता है ?

१४ रानी विक्टोरिया ने १८५८ में घोषणा कर प्रतिज्ञा जाहिर की थी कि, सरकार किसी भी कौम के धर्म में हस्तक्षेप नहीं करेगी। उस प्रतिज्ञा तथा ढँढोरा का १९३५ के नये राज्य विधान-फेडरेशन में अभी की पार्लामेन्ट ने लोप कर दिया है। इतना ही नहीं, हिन्दुओं के साथ घोर अन्याय करनेवाली मुसलमानों की बेहूदी माँग को भी स्वीकार कर लिया है। उसी तरह, हिन्दुओं का उच्छेद करने के लिये गांधी द्वारा यरौड़ा की जेल में चार सुधारकों की संमति से किया हुआ पूना पैक्ट भी सरकार ने वज्रलेप बना कर हिन्दू जाति धर्म की अत्यन्त विषम स्थिति कर दी है। अभी जब स्वतन्त्रता नहीं है तब नामधारी सुधारक धारासभा में धर्म विरोधी बिलों पर बिल पेश कर हिन्दुओं के प्राण कंठगत कर रहे हैं। फिर जब नवीन

बिलों को दाखिल करने की संपूर्ण छूट रहेगी तब तो नहीं मालुम क्या भीषण अनर्थ बाकी रहेगा ?

१५ समाज सुधारक परिषद् के नाम पर समग्र देश में बीस पचीस वर्णसंकर व्यक्ति उल्कापात मचाकर हिन्दू जाति धर्म की भारी अपदशा कर रहे हैं। घृणित कर्मों को कर हिन्दू समाज को भी वैसा ही बनाने का प्रयन्त्न कर रहे हैं। डिग्री की पूंछ लगी होने से तथा उनके पास वर्त्तमान पत्र तथा फंड होने से सरकार भी उनकी सुन कर जहाँ-तहाँ उनको न्याय करने के लिये कमिटी कमीशनों आदिमें रखती है।

१६ देश में अभी युवक संघ कितने ही स्थलों में स्थापित्त हुए हैं। जब गांधी का कुछ नहीं चलता था तब वह 'माता पिता तथा शास्त्रों को न मानो' तुम्हारा अंतःकरण जैसा कहे वैसा ही करो ऐसा गांधी उपदेश देता था परन्तु जब गांधी कांग्रेस के डिक्टेटर हुए, तब वे कांग्रेस के नाम पर सीधे नादिरशाही फरमान छोड़ने लगे हैं जो उनके शिकार बने हुए और बनते हैं वही युवक संघों में के युवक हैं। मां बाप, शास्त्र, गुरु तथा ज्ञाति वर्ण मर्यादा को न जो माने वह संघ तथा व्यक्ति युवक-संघ नहीं, वरन्, यवन संघ और यवन ही कहेलायेंगे। ऐसे बुद्धिशून्य अनुभवहीनों के अनेक यवन संघ अभी समाज, वर्ण, माता पिता तथा

धर्म के सामने हल्ला बोलकर क्रान्ति मचा रहे हैं।

१७ हिन्दुस्थान के १९३१ की मर्दुमशुमारी के अनुसार हिन्दुस्थान की कुल वस्ती ३५ करोड़ मनुष्यों की है उसमें १२ करोड़ मनुष्य, १२ करोड़ स्त्रियाँ तथा ११ करोड़ लड़कों की संख्या हैं। १२ करोड़ स्त्रियों में ११ करोड़ ९९ लाख ९९ हजार ९८८ सुशिल स्त्रियाँ तो अपना घरवार संभाल कर, बाल बच्चों को पालकर, पति की सेवा सुश्रूपा करने में लगी रहती हैं। परन्तु बेकार और भ्रष्ट हुई, कुल १२ स्त्रियां वेश्या बनकर हर जगह भटकती १२ करोड़ स्त्रियों के नाम पर शारदाएक्ट की, वर्णान्तर लग्न की, स्त्रियों के समान हक्क तथा स्वतन्त्रता की हिमायत अपनी टोली की सभा को कोन्फरन्स का बड़ा नाम देकर करती हैं और उसको सरकार, कांग्रेस तथा छापावाले भी महत्ता देते हैं। यह हिन्दू धर्म तथा संस्कृति को थोड़ा घातक नहीं है।

१८ ऐनी बेसेन्ट की थीओसोफीकल सोसाइटी ने हिन्द में प्रथम प्रथम हिन्दु धर्म की महत्ता गाकर, सर्व धर्म को मान देने की बातें कर, पीछे शिक्षण की और आखिर में स्वराज्य की हलचल में हिन्दुओं के चित्त और वित्त अपने तरफ खींचे थे। पीछे वातापि राक्षस की तरह पेट में पैर फैलाकर अस्पृश्यता निवारण की तथा ब्राह्मण भंगी के सहभोज और लग्न की

हिमायत करने लगी। उसके प्रधान शिष्य आरन्डेल ने एक मद्रास की ब्राह्मणी के साथ विवाह भी किया। राखेंगार का भान्जा राखेंगार का न हुआ वह सिद्धिराज का क्या होगा ? तो जिसकी विचार शक्ति का लोप हो गया है ऐसे हमारे हिन्दु ऐनीबेसेन्ट, होर्नीमेन, आरन्डेल वगैरह विदेशी, विधर्मियों के ऊपर उन्हीं के वाक्जाल से मोहित होते हैं। किन्तु उसी ही एनी बेसेन्ट ने ग्लासगो की एक सभा में मांटेगु चेम्सफर्ड सुधार की चर्चा के समय हिन्दुओं को स्वराज्य के लिये नालायक बताया था, उनकी थियोसोफिकल—सोसायटी तो अब खुल्लम खुल्ला हिन्दू जाति धर्म की मर्यादा के उच्छेदका कार्य कर रही है।

१९ हरिजन सेवक संघ के नाम पर गांधी ने और उसके चेलों ने फंडों को एकत्रित कर खाने का और हिन्दू धर्म का हनन करने का धंधा कर रक्खा है यह प्रसिद्ध है। पहिले तो यह दो जीभ का मनुष्य गांधी एक वर्ष में स्वराज्य दिलाने के बहाने करोड़ों रुपये की थैलियां, फंड, पधरावनियां, स्त्रियों के मंगल सूत्रों तथा चूड़ियाँ तक को ले गया। अब हरिजनों के उद्धार के नाम पर आठ लाख रुपया भी दो वर्ष में उसने इकट्ठा कर मार लिया। उन रुपयों का क्या उपयोग किया गया ? इसका हिसाब ३५ करोड़ हिन्दुओं में से कोई पूछता

नहीं। उसी तरह स्वराज्य की इज्जत के लिये रख कर अस्पृश्यता निवारण की देश विध्वंसकारी प्रवृत्ति किस लिये उठायी गयी—उस विषय पर भी कोई बाहरका कांग्रेस के नेताओं पर से उसको पूंछता नहीं। हिन्दुस्थान में कुल छः करोड़ डोम, भंगी, चमारादि अस्पृश्य-अन्त्यजों की संख्या है। उनको गान्धी सात करोड़ की संख्या बतलाते है किन्तु इसे सिद्ध करने के लिये भी कोई सत्य प्रिय वीर चैलेन्ज करता नहीं। हरिका जो भक्त हो वही हरिजन कहलाये फिर वह चाहे किसी जाति किंवा वर्ण का हो। पर श्री गांधी ने हिन्दुओं का मर्दन करने के लिये, स्वयं अन्त्यज जाति का हरिजन नाम पर प्रबल विरोध होते हुए भी अस्पृश्यों को हरिजन ऐसा अनुचित नाम दिया है। अन्त्यजों को तो अपने धंधे के सिवाय दिन दुनियां की खबर नहीं। पर, उनके नाम पर हरिजन सेवक संघ नाम की संस्था उन्होने खड़ी कर उसमें अपने ही जैसे कर्म चंडाल कार्य कर्त्ताओं की भरती की है जिन्होंने नीला नागिनी नाम की अमेरिकन स्त्री पर व्यभिचार का सपाटा चलाकर उसकी भयंकर दुर्दशा की। ऐसेही धूर्तों को कसा खाने का एक अनर्थ करने का यह एक निर्भय मार्ग है।

हड़ताल, बोयकोट, पिकेटिंग, अहिंसा और खादी से उद्धार कर डाला और स्वराज्य दिला दिया। अब यह रासपुटीन के समान बहुरूपिया मनुष्य कांग्रेस को त्याग देने का ढोंग करते हुए कांग्रेस पर सम्पूर्ण कब्जा रखकर कांग्रेस को एक पल भी अपने से अलग नहीं जाने देते। उसके साधकों के द्वारा उसकी समग्र बातों में संचार करते हुए ग्राम्य-उद्योग उद्धार के नाम पर ग्रामों में भी प्रवेश कर रहा है। हिंद के सात लाख ग्राम जो अभी तक उसकी विनाशक प्रतारणा से मुक्त थे उसमें भी गांधी अब डेरा तंबू डालकर तथा कांग्रेस की वार्षिक सभाएं भर कर प्रवेश करता है इससे ग्रामों के उद्धार के बदले जो कुछ रहे सहे देशी उद्योग, दो पैसा, खेती वाड़ी, व्यापार, ऐक्यता तथा धर्म हैं वह भी अब नाश पावेंगे। इस भेदिया मनुष्य की खोपड़ी में अस्पृश्यता-निवारण के भूसे के सिवाय दूसरा कुछ भरा ही नहीं। वैसेही उसके गत १७ वर्ष की विलक्षण राजनीति की हलचल ने देश का, जाति का तथा धर्म का खूब नुकसान किया है। तब भी यही प्रवृत्ति उसके विचित्र मगज में भरी हुई है जो फैजपुर कांग्रेस की बैठक में किये भाषण से स्पष्ट जानी जा सकती है। जहाँ तक ये गारुड़ी जीता रहेगा तब तक यह हिन्दुस्थान के लोगों को दूसरा कोई देश कल्याण का मार्ग नहीं सूझने तथा लेने देगा और कदाचित्

कोई साहस कर लेगा तो जहाँ तहाँ वह आड़े आकर रोड़ा डालने के लिये खड़ा रहेगा। इसीलिये अधिकारियों ने उसको जेल में कैदी होने पर भी देश तथा धर्म संहारक प्रवृत्ति करने दी थी। इस प्रकार उसने शहरों को तो बरबाद किया पर अब वह ग्राम्य—उद्धार के नाम पर ग्रामों का निकंदन करेगा यह निर्वि-बाद बात है।

२१ जैसे भारतवर्ष की बारह करोड़ स्त्रियों के नाम पर १२ स्वच्छंदी स्त्रियाँ समान हक और स्वतन्त्रता की पुकार मारती हैं वैसे ही कुछ लड़के रशिया के लेनीन की तथा जरमनी से देश निकाला पाये हुए कार्ल मार्क्सकी पुस्तक वांचकर समाजवाद की पिशाची प्रवृत्ति का विना रोक टोक हिन्दुस्थान जैसी संस्कारी भूमि में प्रचार कर रहे हैं। स्वेच्छाचारी धूर्तों ने लेनीन के नेतृत्व में रशिया में लाखों किसान, लाखों जमीदार, लाखों पूंजीपति, हजारों कारखानेवाले तथा हजारों धर्म गुरुओं की कत्ल किया है जिनकी कुल संख्या एक करोड़ की हो जाती है। उन्होंने वहाँ के सब देव मंदिरों को एक साथ तोप के गोले से ढ़ाहकर रूस पार्लामेन्ट में बहुमत से ईश्वर को भी उड़ा देने का प्रस्ताव पास किया एवं उसे अमल में ला दिया है, ये साम्यवाद के मुख्य सूत्र इस प्रकार से गिने जा सकते हैं। ईश्वर एक भ्रम है इसलिये उसको न मानना! धर्म धतिंग है। ईश्वर

और धर्म नहीं तब फिर धर्म शास्त्रों, धर्म गुरुओं तथा धर्म स्थानों को कैसे माना जाय ? अर्थात् इनको भी न मानना। राजा, शाहीवाद, पूंजीपति जमीदार, उच्च नीच का भेद, स्त्री की अपनी अथवा दूसरे की जैसी मान्यता और लग्न प्रथा नहीं चाहिये। मजदूरों तथा किसानों का संगठन कर ऊपर दिखाई हुई बातें कार्य में परिणत करने के लिये विरोधी तत्त्वों को स्वधाम पहुँचा देना। यदि यह साम्यवाद उर्फ पिशाचवाद फैलाने में जवाहिर और उसके जोड़ीदार सफल हुए तो पापिओं को अट्ठाइस नरक की यातना यमराज की संयमनी पुरी में भोगने की अपेक्षा घर बैठे ही भोग लेना होगा।

हिन्दुस्थान में ही इस जड़वाद किंवा नास्तिकवाद ने तथा नास्तिक स्वेच्छाचारियों ने दुर्घट स्थिति उत्पन्न की है ऐसा नहीं, पर, यूरोप अमेरिका में भी सामाजिक, धार्मिक, राजकीय और आर्थिक विषय में भारी क्रान्ति मच रही है और वहाँ का ही जहरी इंजेक्शन यहाँ लगा है ऐसा कहें तो इसमें जरा भी असत्य नहीं। यूरोप में घर २ जड़वाद और स्वच्छन्दवाद ने लोगों का जीवन व्यर्थ बनाया है। वहाँ एक तरफ से जब लोग साम्यवाद का आन्दोलन फैलाकर राज्यसत्ता को तथा पूंजीवादिओं को ध्वंस करने का प्रयत्न कर रहे हैं तो दूसरी तरफ से जरमनी ईटाली और जापान जैसे प्रबल देश भी अपना समग्र

बल उसका सामना करने के लिये इकट्ठा कर रहे हैं। वास्तविक रीति से यूरोप का हर एक राज्य, अमेरिका तथा जापान वैर कुटिल स्वार्थ तथा महत्त्वाकांक्षा के वश होकर एक दूसरे का नाश करने के लिये अस्त्र शस्त्र की इतनी प्रचंड तय्यारी कर रहे हैं कि न जाने कब और किस पल में परस्पर युद्ध हो जायगा—यह कल्पना करना मुश्किल है। भावी युद्ध में ज़ाहरी गेस, सबमेरीन, टारपीडो, जंगीबेड़े डीस्ट्रोयरो तथा हावीटजर तोपों के उपरांत विमानी युद्ध बम गोला से होगा। उससे पृथ्वी पर बढ़ा हुआ बहुत सा भाग थोड़ा होगा ऐसा जाना जाता है। परन्तु इस चिन्ताग्रस्त समय में युरोप अमेरिका के सभ्य तथा तत्त्वज्ञ पुरुष विचारते है कि, स्वेच्छाचार तथा वैर ज़ाहर से परस्पर नष्टप्राय होने का यह वेग शान्त किस रीति से हो सके ?

भारत, युरप, अमेरिका, ऐशिया अफ्रिका में व्याप्त इस असाध्यरोग का एक यही निदान है कि सब लोग अखिल ब्रह्मांड नायक श्री कृष्ण भगवान कथित सदुपदेश गीता के कर्मयोग को समझ कर दृढ़ता के साथ उसी पर कटिबद्ध हो जायँ तो सर्व रोग शमन हो जाय। गीतोक्त कर्मयोग यानी शरीर और आत्मा की पृथकता को जानते हुए शरीर को नाशवान एवं आत्मा को अविनाशी तथा परमात्मा का अंश मान कर

शुभाशुभ कर्मानुसार परमात्मा ने हमें जिस जाति या वर्ण में जन्म दिया हो उसी जाति के कर्म निष्काम बुद्धि से करने चाहिये। शरीर रूप यंत्र में आरूढ़ संपूर्ण प्राणियों को अंतर्यामी परमेश्वर अपनी माया से प्रेरित करता हुआ उनके हृदय में स्थित है। इस लिये परमेश्वर की शरण में जाना तथा शास्त्र की आज्ञा मानकर चलनाही अभ्युदय का मार्ग है।

"तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्मकर्तुं मिहार्हसि ॥

कर्तव्य अकर्तव्य निर्णय में सन्देह होने पर शास्त्र-आज्ञा को ही प्रमाण मानना चाहिए। शास्त्र मर्यादा के अनुसार जन्म से मरण तक के जो धर्म कृत्य मनुष्य के लिये नियत हैं उसीके अनुसार आचरण करना मनुष्य मात्र का कर्तव्य है। श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः"। अतः सावधान होकर अपने धर्म को ग्रहण करते हुए औरों के धर्म को गुणरहित जानकर कल्याण मार्ग को ग्रहण करें। एक बात बराबर लक्ष्य में रखने की है, कि अपने धर्म को हित रक्षा अनेकानेक संकट आने पर भी दृढ़ता के साथ उसे सहन करते हुए अपने ही धर्म पर अटल रहकर करता रहना चाहिये। परमात्मा के निःश्वास रूप वेद में जो ज्ञान तथा विद्या सन्निविष्ट है ब्राह्मण

वर्णको यथाशक्ति उसका संपादन करना चाहिये इससे दरिद्रता वैमनस्य, अनास्तिकता पराधीनता आदि पाप अदृश्य हो जायँगे।

इस समय हिंदू जाति अपने सनातन धर्म, वर्णाश्रम, हिंदू संस्कृति आदि को किस तरह पुनर्जीवित दे सकती है इस सम्बन्धमें मैंने गत वीस वर्षों में जो प्रवास, प्रवृत्ति, शिष्ट पुरुषों का समागम, विचार तथा धर्म विरोधियों के साथ मैदान में उतर कर अनुभव किया है उन सब के निचोड़ रूप एक योजना धर्माग्राही हिंदुओं के प्रति प्रकट करते हैं। यह योजना सर्वांग संपूर्ण है। उसमें हिंदू जाति के उद्धार और धर्मरक्षा संबंधी जो जो उपाय दिखलाये या बतलाये गये हैं उन्हें एकाग्रचित्त से पढ़ें और उनपर विचार करें।



१—सनातन धर्म विश्वविद्यालय।

व्यास वशिष्ठ वाल्मीकि भृगु भरद्वाज के आश्रमों में जैसे दस दस हजार द्विजों के लड़के ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके वेद–विद्या का अध्ययन करते थे और सकल ज्ञान प्राप्त करते थे वैसे वेद विद्या के साथ संसार–व्यवहारोपयोगी सर्व आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने के लिये सनातन धर्म विश्वविद्यालय स्थापन करने की परमावश्यकता है। सनातन धर्म के ऐसे विश्व विद्यालय की स्थापना हो इसलिये काशी में सन् १९२८ में जब ब्राह्मण–महासम्मेलन का विराट् अधिवेशन दरभंगा–नरेश सर रामेश्वर सिंह जी के सभापतित्व में हुआ था तब प्रस्ताव भी पास हुआ था और उसी समय ११ लाख रुपये का चंदा देने का वचन भी मिला, इतना नहीं पर दुसरे ३९ लाख रुपया एकत्र कर देने की प्रतिज्ञा भी महाराजा ने किया था, परंतु उसके बाद थोड़े ही समय में महाराजा तथा उस महत् कार्य का संयोजक धर्मप्राण पं० लक्ष्मण शास्त्रीजी द्रविड महोदय का स्वर्गवास होने से कार्य स्थगित हो गया, उसे अब पुनः शुरू करने की आवश्यकता है।

गंगा यमुना नर्मदा ताप्ती किंवा साबरमती के तट पर

सनातन धर्म विश्वविद्यालय के लिये सुन्दर शांत एकांत विशाल भूमि प्राप्त करके उसमें फल पुष्प वाले वृक्षों को अरोपितकर उसके बगल में हवा प्रकाश वाले मकान विद्यार्थिओ को रहने के लिये निर्माण करना चाहिये। उन मकानों की बीच पांच हजार विद्यार्थी बैठ सकें इतना बड़ा हॉल बनाना चाहिये एवं कदंब आम्र नींबू आदि वृक्षों की नीचे थोड़ी थोड़ी दूरी पर वेद, धर्मशास्त्र, व्याकरण, न्याय, मीमांसा, योग, वेदांत, ज्योतिष, कर्मकांड, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, मंत्रविद्या, रसायन शास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, भूगर्भविद्या खगोल विद्या, राजनीति तथा अर्थशास्त्र आदि विद्याएँ प्रयोग की साथ सिखाने वाले अध्यापकों को बैठाने का प्रबंध कर देना चाहिये। इस विराट हॉलके बगल में लगे हुए एक कमरे में धनुर्वेद, योगविद्या, मंत्रविद्या, रसायन शास्त्र, आयुर्वेद तथा ज्योतिष के प्रखर अभ्यासियों के संशोधन करने के लिये प्रयोगशाला रखनी चाहिये। उसके बगल के एक कमरे में यज्ञशाला का प्रबंध हो और यज्ञशाला के निकट में पाठशाला और सबके बीचमें यशोदानंदन श्रीकृष्ण परमात्मा का मंदिर हो। बागकी एक तरफ गोशाला, दूसरी तरफ अध्यापकों के रहने की जगह, तीसरी तरफ़ आयुर्वेद का मुफ्त औषध देने वाला औषधालय और चौथी तरफ विद्यार्थिओं को दंड बैठक कुश्ती पटाबाजी

लाठी मुगदल आदि कसरत करने की रेती बिछाइ हुइ खुला जगह रखनी चाहिये ।

जो कट्टर सनातनी सदाचारी, चरित्रवान, निःस्वार्थी, वयोवृद्ध, अनुभवी, बहुश्रुत विद्वान और विद्यार्थियों को पढ़ाने में चतुर उद्योगी हो वैसे ब्राह्मण की अध्यापक-शिक्षक पद पर नियुक्ति करनी चाहिये । हर एक अध्यापक के मस्तक पर चोटी हो पर बाल न होने चाहिये, कपाल में चंदन तिलक किंवा त्रिपुण्ड होने चाहिये । अध्यापक को पगड़ी उपरना आदि सनातन धर्म के अनुरूप सादा पोशाक पहनना चाहिये । उसको त्रिकाल संध्या वंदन करना चाहिये । लोभ लालच तथा भय के वश होकर सनातन धर्म विरुद्ध एक भी शब्द तथा कृति अध्यापक के द्वारा कदापि न हो सके इस निष्ठामें प्राण से लगे रहने वालों को हीं अध्यापक पद पर नियोजित करना चाहिये। सनातन धर्म विश्वविद्यालय में छोटी अवस्था के तथा बड़ी अवस्था के द्विज-ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य विद्यार्थी का प्रवेश हो सके । छोटे बालक आठ वर्ष की वय के होने चाहिये और बड़े चाहे जैसी वय के हों । छोटे बालकों के पास से उनके अभ्यास निवास तथा भोजन के बदले कुछ लेना नहीं चाहिये । उन के माता पिता अधबीच में अभ्यास छुड़ा दें किंवा विद्यार्थी स्वयं ही छोड़ कर चला न जाय इसके लिये जामिन तथा रु०

१०१) डिपोज़िट लेने का नियम होना चाहिये। बड़े विद्यार्थियों को अपनी खुराक के बदले हर एक मास में रु० ८) के हिसाब से देना चाहिये। पुस्तक कपड़ा अपना होना चाहिये। उनके पास से निवास तथा अभ्यास के बदले कुछ भी लेना न चाहिये। जब विद्यालय से वे अलग होना चाहें तब हो सकते हैं। छोटे विद्यार्थियों का अभ्यास क्रम १२ वर्ष का रहे वह पूर्ण होते ही उसका डिपोज़िट वापस दे दिया जाय। बिना साधन के बड़ी वय के विद्यार्थियों को शिष्यवृत्ति मिलनी चाहिये।

छोटे विद्यार्थियों को प्रारंभ से शिक्षण प्राप्त करने का प्रबन्ध रहे। बड़े २ विद्यार्थियों को मुख्य २ विषय का तथा अन्वेषण ज्ञान प्राप्त करना होगा। उन्हें धर्म शास्त्र का ज्ञान, संस्कृत भाषा का ज्ञान, ब्रह्मचर्य, त्रिकाल संध्या, प्रभु-सेवा, प्रातः सायं होम, नियमित कसरत, गो सेवा, शिर पर शिखा और तिलक किंवा त्रिपुण्ड तथा वर्णानुसार धंधा यह सब अवश्य करना तथा सीखना ही चाहिये। विद्यार्थियों को परस्पर विद्यार्थियों के साथ तथा अध्यापकों के साथ बहुत विनयपूर्वक विवेक सभ्यता से वर्तना चाहिये। वे चाय तमाखू आदि एक भी व्यसन रख न सकें। धर्म विरुद्ध रहना तथा अश्लील शब्दों का प्रयोग तथा झगड़ा कदापि न हो सकेगा। विद्यार्थियों को हमेशा धर्म अविरुद्ध रहना हो[illegible] चोर, डाकू,

आततायी, गाय का वध करने वाले, स्त्री-बालक हरने वाले, मंदिर मूर्ति तोड़ने वाले तथा अन्त्यजों को घुसा-कर मंदिर भ्रष्ट करने वाले लोगों के सामने विद्यार्थियों को तथा अध्यापकों को अपने शरीर की भी परवा न कर उन पर टूट पड़ना चाहिये ! इस संस्था का प्रिन्सपल अथवा मुख्य आचार्य ऐसा होने चाहिये कि जिसके रोम २ में सनातन धर्म ही घुसा हो एवं जो वेदशास्त्र का उत्तम कोटि का ज्ञाता हो, पवित्र निःस्पृही प्रभावशील कार्यकुशल वयोवृद्ध धर्मवीर और बहुश्रुत विद्वान हो। उनके संचालन पर ही संस्था की सफलता निष्फलता का आधार रहता है। कानपुर के सनातन धर्म कालेज की इस विषय की न्यूनता से उन्नति नहीं हो रही है। उल्टे, सनातन धर्म का घात हो रहा है। हरि-द्वार तथा सूरत के ऋषिकुल गुरुकुल की भी यही दशा है। ऐसी ही अपदशा सनातनधर्म विश्व विद्यालय की न हो-इसलिये उसको कट्टर सनातनी आचार्यों विद्वानों धनिकों तथा कार्यकर्ताओं की एक व्यवस्थापक कमिटी चुन कर, समग्र देश के धर्माग्रही विद्वानों को बुलाकर, संस्था का अभ्यास-क्रम निश्चय कर, अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के नियम बनाकर, प्रधान आचार्य तथा अध्यापकों को देश से निर्धारित कर लेना चाहिये। विद्यालय की मुख्य भाषा संस्कृत रहनी

चाहिये। साथ में हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगाली, अंग्रेजी, जरमन वगैरह भाषाओं का भी आवश्यक ज्ञान देना चाहिये। विद्यार्थियों को लेखक तथा वक्ता बनाने के लिये एक सप्ताह शास्त्रार्थ सभा और दूसरे सप्ताह निबंध वाचने की व्यवस्था रखनी चाहिये। विद्यालय की स्थापना के दिन प्रत्येक वर्ष तीन दिन विराट सभाओं का प्रबन्ध रखना और उसमें देश भर के सनातनी विद्वानों को, आचार्यों को, श्रीमंतों को तथा वक्ताओं को खास निमंत्रण से बुलाकर उन के व्याख्यान कराने चाहिये। उनको विद्यालय का पाठयक्रम बताकर, उत्तीर्ण हुए विद्यार्थीओं को पारितोषिक देकर, पुनः पाठयक्रम में कुछ कसर हो तो संशोधन कर, फंड के लिये अपील करनी चाहिये। ये विद्यालय मात्र परीक्षाओं को पास करने, पत्रों में नाम प्रकट कराकर वाहवाही लूटने तथा डिग्री देने के लिये न हो। पर, सनातन धर्म, वर्णाश्रम मर्यादा और हिन्दू संस्कृति का उद्धार करने के लिये खास स्थापना की दृष्टि ध्यान में रख कर विद्यार्थिओं को अभ्यास कराने का और उनके हृदय में वे आदर्श स्थित हो इसलिये श्रीकृष्ण, राम, वामन, नृसिंहादि जयन्तियाँ तथा शिवरात्रि, दशहरा, दिवाली, श्रावणी, वगैरह उत्सव मनाकर उस २ दिन सभा भर कर, उसका रहस्य समझाना चाहिये तथा विद्यालय

में तमाम मुख्य २ देवता, ऋषियों, आचार्यों तथा युधिष्ठिर अम्बरीष पृथु हरिश्चन्द्र मांधाता भगीरथ रंतिदेव शिवि दिलीप दशरथ भीष्म भीम अर्जुन विक्रम प्रताप शिवाजी जैसे राजाओं और भामाशाह तथा चंपकसेन जैसे वैश्य रत्नों के चित्र रखवाने चाहिये। पूर्व काल के आश्रमों के तथा हिमालय गिरनार आबु आदि पर्वतों के और बद्रीनाथ जगन्नाथ श्रीरंगजी रामेश्वर आदि मंदिरों के भव्य चित्रों को उसमें धरवाना चाहिये तथा दिव्य अस्त्र शस्त्रों के चित्रपट भी मुखद्वार पर लटकाना चाहिये।

प्रत्येक वर्ष गरमी की छुट्टी के दिनों में विद्यालय के विद्यार्थियों को अध्यापक वर्ग आबु, गिरनार, द्वारका, उज्जैन, दिल्ली, मथुरा, कुरुक्षेत्र, अयोध्या, नैमिषारण्य, हरिद्वार, ऋषिकेश, बद्रीनारायण, काशी, कलकत्ता, जगन्नाथ, बम्बई, मसूरी, अल्मोड़ा, पशुपतिनाथ, अमरनाथ आदि नैसर्गिक सृष्टि सौन्दर्यवाले ऐतिहासिक यात्रा के पवित्र तथा व्यापार उद्योग के स्थानों में क्रम से लेजाकर उनको रहस्य समझाना चाहिये। अधिक नहीं तो इस संस्था में प्रत्येक वर्ष ब्रह्म विद्या के ज्ञाता पांच आदर्श, ब्राह्मण क्षात्र विद्या के ज्ञाता पांच आदर्श क्षत्रिय और वाणिज्य विद्या के तथा चाणक्य जैसे राजनीति के ज्ञाता पांच आदर्श वैश्य तयार हो तब ही

उद्धार और प्रयत्न सार्थक है । द्रव्य के अभाव में कदाचित् सनातनधर्म विश्व विद्यालय प्रारंभ करने में विलंब हो तो ऊपर दिखाई हुई रीति से ऋषिकुल विद्यालय तो धर्मप्रेमी हिन्दुओं को प्रान्त २ में तत्क्षण शुरू कर देना चाहिये ।

२ सनातनी सभ्य धारासभा में

प्रत्येक शहर की म्युनिसिपालिटी में तथा प्रांतीय धारासभा और सेन्ट्रल असेम्बली में जब तक धर्माग्रही गृहस्थ जाते थे तब तक देश का हित होता था और वहाँ धर्म विरुद्ध कुछ भी कार्य होता नहीं था । परंतु धर्मपरायण गृहस्थ कायर बन कर घर में बैठे और जाहिर संस्थाएँ धर्मद्रोही गुंडा को सौंप दी तब से देश की दुर्दशा होने लगी है। जिन मुसलमान, ऐंग्लो इन्डियन, सिक्ख, युरोपियन तथा अन्त्यजों को पृथक् मताधिकार प्राप्त है वे तो कांग्रेसवादी उम्मेदवार को कभी एक भी मत देते नहीं । कांग्रेसवाले कहते हैं कि कांग्रेस समग्र देश की और तमाम जाति के लोगों की संस्था है । यदि यह बात सत्य है तो किस लिये धारासभा के चुनाव में तमाम जाति के उम्मेदवार कांग्रेस की तरफ से खड़े होकर मुसलमान

क्रिस्तान सिक्ख वगैरह का मत लेते नहीं और केवल हिन्दू उम्मेदवार को खड़ा कर हिन्दुओं के पास से मत लेते हैं और हिन्दूओं का ही घात करने वाले धर्मनाशक कानून पास कर उलटे मुसलमानों का पक्ष लेते हैं ? हिन्दू महासभा तथा आर्यसमाजी भी धर्म के संबंध में कांग्रेस की रीति से ही हिन्दुओं के साथ धोखाबाजी करते हैं, इसलिये कांग्रेस-वादी सुधारकों को मत देना इसको आत्मघात, गोहत्या तथा ब्रह्महत्या के समान पातक मानकर हिन्दुओं को अपना संपूर्ण मत धारासभा तथा म्युनिसिपालिटी की चुनाव में कट्टर सनातनी उम्मेदवारों को ही देना चाहिये। यदि चुनाव में कोई कट्टर सनातनी उम्मेदवार अपने आप खड़ा न हो तो स्थानिक तथा प्रांतीय सनातन धर्म सभाओं की ओरसे सनातन धर्माग्रही उम्मेदवारों को खड़ा करना चाहिये। पर, मोह शरम संबंध तथा दबाव के वश होकर किसी भी हिन्दु को अपना मत कांग्रेसवादी गांधीपंथी सुधारक नास्तिक उम्मेदवार को तो सर्वथा ही नहीं देना चाहिये।

अपने कट्टर सनातनी मेम्बर धारासभा तथा म्युनिसिपालिटी में जायँगे तो उन्नत्त अधिकारियों के अभेद्य दुर्ग में से स्वराज्य तो ले नहीं सकते पर धर्मद्रोही कांग्रेसवादियों के हाथ से जो धर्मनाश तथा देशद्रोह के कार्य होते हैं वे नहीं होंगे।

इसलिये सनातनियों को कटिबद्ध होकर धारासभा और म्युनिसिपालिटी में कट्टर सनातनी उम्मेदवारों को भेज कर उन संस्थाओं को हस्तगत कर लेना चाहिये।

३ सनातनी दैनिक तथा साप्ताहिक पत्र

लोगों को दुनिया की विलक्षण घटना, राजकीय बातें तथा व्यापार वाणिज्य के भावको जानने की आजकल बहुत जिज्ञासा रहती है। पाठ पूजा करने के बदले कितने को पेट में खाने का पूर्ण साधन नहीं होता तब भी अनशन करके पत्रों को बांचने का व्यसन पड़ा है। पहले तो कभी छापा वाले निष्पक्षपात रीति से सब विषय को कहते और सब पक्षके मतवालों के साथ न्याय पूर्वक तटस्थ व्यवहार रखकर देश हित का सच्चा मार्ग दिखाते थे। परन्तु अब के छापाओं का ये तटस्थ और न्यायी व्यवहार रहा नहीं। अभी तो वे बिलकुल अन्यायी स्वार्थी और पक्षपाती बनकर, कांग्रेस तथा गांधी का आशय लेकर, मलिन आंदोलनों को लेख द्वारा बेधड़के बढ़ा रहे हैं। इस रीति से जिसका खाना उसकाही नाश ऐसी नमकहरामी करते हुए छापाओं का स्पर्श करना और विष्ठा का स्पर्श दोनों बराबर

सनातनधर्मके मोक्षदायी सिद्धांतों को ऐसे समझाना, कि विधर्मी विदेशियों के तथा नास्तिकों के शिकार कोई सज्जन न हों इस लिये हर एक शहर के तथा ग्रामके धर्मप्रेमी हिन्दुओं को एकत्रित होकर पांच २ सनातनी उपदेशकों को रखने का प्रबन्ध अवश्य करना चाहिये।

५ सनातनधर्म सभा

प्रत्येक ग्राम में सनातनधर्मकी सभा, ग्राम के तथा शहर के पांच सात कार्यकर्त्ताओं को उसके उद्देश्य तथा नियम निश्चित कर, बना देनी चाहिये। इस सनातन धर्म सभा का अधिवेशन साप्ताहिक तथा पाक्षिक हो एवं सनातनधर्म के भिन्न भिन्न विषय पर व्याख्यान हों ऐसा प्रबंध करना चाहिये। कांग्रेसवादी सुधारकों की विनाशक प्रवृत्ति अपने ग्राम में नहीं होने देनी चाहिये। यदि वे लोग आकर प्रचार करें तो वहाँ पहुँच कर, उसे नष्ट कर, सनातनधर्म का स्वरूप समझाना चाहिये। प्रत्येक वर्ष सभा का वार्षिकोत्सव मनाना चाहिये और उसमें सनातनी विद्वान वक्ताओं को निमंत्रण देकर बुलाना और उनके व्याख्यान कराना चाहिये। धारासभा, देशी राज्य तथा म्युनिसिपालिटी में जब धर्म-विरुद्ध बिल पेश

हो तब उसके सामने विरोध करना, तार मेमोरियल भेजना इससे धर्मरक्षा का अत्यन्त उपयोगी कार्य होगा।

६ संस्कृत पाठशाला

प्रत्येक ग्राम में सनातन धर्म सभा होना चाहिये। यदि हो सके तो सभा के मकान में, देव मंदिर में किंवा कोई अन्य सुलभ स्थान में संस्कृत पाठशाला की भी स्थापना होना चाहिये। संस्कृत–गीर्वाण किंवा देव भाषा है। उसमें ही अपने समग्र धर्म ग्रंथ है और उसमें से अपनी संस्कृति निकली है। प्रथम अपने देश में यही परम संस्कृत भाषा घर घर पर बोली जाती थी। समग्र दुनियाँ की भाषाओं की भी उत्पत्ति इसीं में से ही हुई है अपने देश की भाषा, हिन्दुस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगाली वगैरह भी इसकी ही अपभ्रंश भाषा हैं। जगत की तमाम भाषाओं में हमेशा कुछ न कुछ सुधार तथा फेरफार होता रहता है। संस्कृत भाषा ही एक ऐसी पूर्ण भाषा ईश्वर ने बनाई है कि इसमें कभी भी एक शब्द या ह्रस्व दीर्घ तक का भी फेर-फार न हुआ न हो सकता है। इस भाषा की सर्वांग संपूर्णता तथा उत्कृष्टता के कारण ही उसका नाम संस्कृत पड़ा है। संस्कृत भाषा की उत्तमता तथा उसमें बने हुए अगाध ज्ञान के ग्रंथों

को देखकर जरमनी अपने देश में संस्कृत भाषा की नूतन युनिवर्सिटियां खोलकर अपने देशी जनों को उसका लाभ दिलाने लगा है। किसी मूर्ख के कहने से ऐसा नहीं मान वैठना चाहिये कि यह भाषा अव्यवहारिक या मृत भाषा है। हिन्दुओं को अपने उद्धार के लिये ग्राम ग्राम संस्कृत पाठशाला खोलनी चाहिये। द्विज मात्र को संस्कृत–भाषा सीखना चाहिये। इस पाठशाला में द्विज वर्ण के वालक संध्यावंदन गीताजी एवं स्तोत्रों को सीखकर शिखा, यज्ञोपवीत, गंगाजल, तुलसी आदि का रहस्य जाने तथा वड़ी अवस्था के गृहस्थ शास्त्री पंडितों के पास से रामायण महाभारत तथा भागवत की कथा नित्य प्रातःकाल तथा सायंकाल सुनकर अपना हृदय पवित्र और उन्नत वनायें।

७ धर्मवीर दल

हिंदू जो एक समय वीर साहसी और हिम्मतवान् थे अभी नपुंसक हिम्मत हार कर मुरदे के समान जी रहे हैं। परदेश का एक कावुली वलूची तथा गोरा दस-वीस हिन्दुओं को तथा ग्राम के लोगों को परास्त कर सही सलामत चला जा सकता है। पर, एक मुसलमान कुरान की तथा पैगम्वर की निंदा करने वाले को जीने ही न देगा। लेने देने के विषय में

हिंदू के साथ में कोई मुसलमान झगड़ा करे और अपराध हो मुसलमान का ही. तब भी मुसलमान मुसलमान की मदद पर दौड़ते हैं और आफत में फसे हुए निर्दोष हिन्दु की हिन्दूलोग रक्षा न कर भयभीत बन घर में छिप कर बैठ जाते हैं ये क्या कम शरम की बात है ? स्वराज्य लेने वालों में मनुष्यता होनी चाहिये। अपने धन स्त्री पुत्र तथा घर बार की रक्षा करने की ताकत होनी चाहिये, अपने निराधार निरपराधी भाई बहिनों पर प्रेम चाहिये। शुद्ध चारित्र्य बल निःस्वार्थी पना और साम दाम दंड तथा भेद आदि राजनीति का ज्ञान होना चाहिये। स्वधर्म, स्वजाति, स्वसंस्कृति, स्ववर्ण, स्वखानपान स्व-पोशाक, स्वभाषा, स्वमान्यता और स्वदेशी ऐसी तमाम स्ववस्तु के ऊपर हृदय से प्रेम और आचरण होना चाहिये। बचन बोल कर प्रतिज्ञा को पूरी रखे की हिम्मत चाहिये, और प्रसङ्ग पड़ने पर प्राण की भी प्रसन्न मुखसे आहुति देने की तत्परता चाहिये तब स्वराज्य ले सकते हैं। हाल में तो स्वराज्य के नाम से कांग्रेसी गुंडा उलटी रीति से ही बर्त रहे हैं। स्वयं हिंदू हो करके हिन्दूधर्मशास्त्र के सामने अस्पृश्यता निवारण तथा वर्णसंकर खानपानकी भ्रष्टता फैलाने की धुनमें हिन्दुओं के ऊपर ही अत्याचार गुजार मंदिरों को अपवित्र करते हैं इतनाही नहीं पर अन्यधर्मी को भी हिन्दुओं के

ऊपर अत्याचार गुजारने में सहायता करते हैं। इस लिये अब हिंदुओं को सावधान होकर ग्राम-ग्राम धर्मवीर दल की स्थापना करनी चाहिये इस दलमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य, लुहाणा भाटिया खत्री सोनी अहीर चरवाहे और लट्ठधारी युवकों को भरती करना। धर्मवीर दलके तमाम सैनिकों को लकड़ी कैसे चलाना और कुस्ती में कैसे जीतना ये अच्छी तरह जान बूझ-कर जब कोई गुंडा किंवा कावुली निराधार निरपराधी हिंदुओं की वहिनो को, माल मिल्कियत तथा मंदिर मूर्त्तिओं को भ्रष्ट नष्ट करने की इच्छा से ग्राम पर आ चढ़े तब धर्मवीर दलके तमाम सैनिकों को बिगुल बजने की खबर पड़तेही इकट्ठे हो जाना और उस पर टूट कर जाति धर्म की रक्षा करनी चाहिये।

८ सनातनधर्मके ग्रन्थों का पुस्तकालय

लोगों के हृदय में धर्मका तत्त्व जमाने के लिये तीन लोगों पर भार सौंपा गया है। १-माता पिता घर में अपने बालकों को धर्म का रहस्य समझायें २-आचार्य उपदेश देकर बतायें और ३-राजायें स्कूलों में धार्मिक शिक्षण दिलाने का प्रबंध करके, धर्मके पुस्तकालयों का स्थापना

करके और धर्म—विरुद्ध प्रवृत्ति को नैपाल सरकार की अनुसार कायदा से रोककर लोगों को धर्म में निष्ठावान बनायें। परन्तु अभी ये तीनों मार्ग रुके हुए हैं। माता पिता को धर्मकी आवश्यकता नहीं, आचार्यों को पधरावनी में विलंब होने से धर्मका उपदेश देने की फुरसत नहीं और राजा विधर्मी है। अतएव गीताजी की आज्ञा है कि उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः अर्थात् अपनी आत्मा से ही अपने उद्धार का यत्न करना चाहिये। आज कल लोगों ने लाखों रुपये खर्च कर पुस्तकालय को तो अनेक जगहों पर खोल दिये हैं, परन्तु उनमें पुस्तकों का अधिकांश भाग ऐसा है जो बांचते ही लोगों का विनिपात हो, धर्म और जाति की मर्यादाके ऊपर घृणा उत्पन्न हो और वे ऐसे ही भाव वाले धर्म द्रोही नास्तिकों की लिखी हुई पुस्तकों को बहुधा पुस्तकालयों में रखते हैं। इनको बांचकर शुद्ध हृदय का मनुष्य भी विकारी और विरोधी बन जाय। टेबुल पर पत्र भी बिलकुल नास्तिकवाद और अधर्म फैलाने वाले ही रखने में आते हैं। उनको पढ़ने से मनुष्य का पतन निश्चित है। लोगों को अभी व्यसन तथा कुतूहल की खातिर कुछ न कुछ बांचने की आदत पड़ी है। इसलिये नास्तिकता फैलाने वाले वाङ्मय के पुस्तकों को स्पर्श भी न करते हुए प्रत्येक ग्राम देव-

मंदिर में सनातनधर्म सभा तथा संस्कृत पाठशाला के स्थानों में सनातनधर्म के ग्रंथों का तथा कट्टर सनातनी पत्रों का ही पुस्तकालय स्थापित करने की आवश्यकता है। धर्म ही अभ्युदय और मोक्षका दाता है। धार्यंते यत्प्रभावेण ब्रह्मांडं सचराचरम्। नियम्यते यतस्तस्माद्धर्ममित्यभिधीयते ॥ धर्म के आधार से ही ये पृथ्वी-ब्रह्मांड धारण हुए हैं और लोग पाप कर्म से बचकर जो नीति नियम तथा मनुष्यता में रहते हैं वह भी धर्म के शासन से ही। इस लिये महर्षि वेदव्यासजी कहते हैं कि, न जातु कामान्न भयान्न लोभात्-धर्मं त्यजेज्जीवित स्यापि हेतोः। धर्मो नित्यो सुखदुःखेह्य नित्ये जीवो नित्ये तस्यहेतुरनित्यः। कभी सुख के लिये धर्म का त्याग करना नहीं। भय से लोभ से तथा जिंदगी को बचाने के लिये भी धर्मका त्याग करना नहीं। कारण, सुख दुःख तथा जिंदगी अनित्य है और धर्म नित्य है। जगत् के लोगों का नियमन करनेवाले तथा शाश्वत शांति-मोक्ष देनेवाले धर्मका स्वरूप दिखानेवाले तथा उसके सिद्धान्तों का परिचय कराने वाले धर्मशास्त्र हैं इसलिये अपना हित चाहनेवाला हिंदू मात्र यथाधिकार धर्मशास्त्र को वांचते सुनते हैं। गहने आभूषणों से भी धर्म ग्रंथों को लाख गुना अमूल्य समझ कर द्विजवर्ण हिंदु ग्रन्थों को खरीद कर घर में रखें। उपनिषद, मनुस्मृति, महाभा-

रत, श्रीमद्‌भागवत, रामायण, और गीता बिना तो ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य का घर श्मशान ही है। प्रत्येक को अपनी शक्ति अनुसार धर्म ग्रन्थों को रखने और खरीद रखना चाहिये। गरीब स्थिति के लोगों के लिये ग्राम के लोगों का एक फंड बनाकर सनातन धर्म के ग्रन्थों का पुस्तकालय अपने ग्राम में खोलना चाहिये और लाभ लेना चाहिये।

६ जातीय बन्धन

हिन्दुओं के चार वर्ण हैं और चार वर्ण को सुदृढ़ रखने के लिये अपने पूर्वजों ने बहुत ही दीर्घ दृष्टि से विचार प्रत्येक वर्ण में जातियों के विभाग किये हैं। उनके नियम बांधे हैं। हिन्दू जाति को विदीर्ण करने के लिये इस देश के तथा विदेश के चार्वाकों ने बहुत प्रयत्न किये और करते हैं तब भी अपनी धारणा में वे निष्फल हुए हैं। इसका कारण वर्णाश्रम धर्म और वैदिक मर्यादा का अभेद दुर्गरूप रक्षण करने वाली ये अपनी जातिही है। जाति के बंधन तोड़ने के लिये ही स्वच्छंदियों ने अभक्ष्य भक्षण, अपेय पान, विधवा विवाह, वर्णान्तर लग्न तथा ऐसेही दूसरे अनाचार करने की इच्छा की है। जाति

उनका बहिष्कार कर मति को ठिकाने ला सकती है। इन उठते हुए शत्रु तथा रोग को प्रारंभ में ही काटकर सदा के लिये दूर फेंक दे सकती है। इस कारण से ही सुधारक ज्ञातिओं का नाम लेते सुनते ही भड़क उठते हैं और उसको छिन्न भिन्न करने का अविरत प्रयत्न करते हैं। गुजरात में गायकवाड़ स्टेट ने जाति त्रास निवारण कायदा पास करके, पंजाब में आर्यसमाजियों ने जांत पांत तोडक मंडल करके तथा देश में कांग्रेस ने अस्पृश्यता निवारण की प्रवृत्ति चालू करके, जातियों का संहार करना निश्चय किया है। परंतु शुद्ध हिंदुओं ने तो ऐसे सब धर्मविरोधी कायदाओं को मद्य मांस विष्टा तथा मृत सर्प के समान अमान्यही किया है और करेंगे। जैसे ब्रिटिश सरकार राज्य का प्रबंध प्रान्त, जिला, तालुका आदि विभाग बनाकर कार्य करती हैं तथा व्यवस्था रखती हैं, पृथक् २ व्यापारी संस्थाओं जैसे अपनी २ ऐसोशीरोशनों को, मंडलों को, सोसाईटीयों को तथा कल्बो को स्थापित कर अपना हित रक्षण करती है वैसे हिन्दुओं भी अपनी जातिओं के द्वारा अपना तथा अपनी जाति धर्म का हित संभालते है, उस में वो अयोग्य क्या करते है ? सर पुरुषोत्तमदास इन्डीयन मरचन्टस चेम्बर के ठहरावों को भंग कर राऊन्ड टेवल कान्फ्रेन्स में गये इतने में चेम्बर ने

तुरंत ही उस पर धिक्कार का प्रस्ताव पास करके वे चेम्बर के प्रतिनिधि नहीं है ऐसा जाहिर किया। जब इस रीति से अपने नियम का भंग करने वालों को प्रत्येक संस्था शिक्षा कर सकती है तब फिर ज्ञाति के नियम का भंग कर ज्ञाति को तथा ज्ञाति जनों को नुकशान हो, वैसी रीति से वर्ताव करने वाले को ज्ञाति घटित शिक्षा करे इसमें ज्ञातिओं का क्या अन्याय तथा जुल्म गिना जाय? बात यह है कि जातियों को तथा धर्म-परायण हिन्दुओं को संयम-नियम में रह कर धर्माचरण से ईश्वर को प्राप्त करना है और भवबंधन में से छूटना है। क्योंकि नामधारी सुधारक पशुओं को इच्छानुसार दुराचार करना है उसमें ये जातियां अन्तराय रूप होती है इसलिये वे जातियों के सामने कीचड़ उड़ाते हैं। जातियों का बन्धन अत्यंत मज़बूत होते हुए भी जातिओं के अग्रगण्यों की शिथिलता, ज्ञाति जनों की चिंताजनक स्थिति, सरकार की भेद नीति, देश नेताओं की भड़किनी, युवकों का उद्धतपना और स्वार्थी लोगों का कन्या विक्रय तथा वर विक्रय वगैरह के कारण से जातियां जड़ जैसी चेतनहीन तथा कर्त्तव्यशून्य बन कर बैठी हैं, परन्तु हमारा मंतव्य है कि यदि जाति का अस्तित्व न रहेगा तो वर्णाश्रम, हिंदु जाति, सनातन धर्म तथा हिंदु संस्कृति भी नहीं रहेगी इसलिये पाखंडवाद के प्रबल प्रवाहके चक्करों से

तथा हताश होते हुए, ज्ञातिओं की प्राचीन मर्यादा का हिम्मत से दृढ़ता पूर्वक रक्षण करना चाहिये । यह समय हमारी धर्म परायता तथा योग्यता की कसौटी का है। संकट से हिन्दू जरा भी शिथिल न वनें । अपनी २ ज्ञाति के वंधन को वहुत मजवूत वना कर, धर्ममर्यादा लोपने वालों को शिक्षा देकर वर्ण तथा आश्रम की परम फलदायी खूवियों को ज्ञातिओं में दाखिल करा कर कृतकृत्य वनना चाहिये। जो ज्ञाति अत्यन्त छोटी हो और उसको कन्या लेने देने में मुश्किल पड़ती हो तो उनको स्ववर्णकी रसोई व्यवहार वाली ज्ञाति के साथ विचार कर अपना हित रक्षण करना चाहिये ।

१० कौमी बटवारा और पूना पैक्ट

इतिहास और राजनीति के सूत्र मनुष्य को पतन के मार्ग में से वचा कर वास्तविक उन्नति के मार्ग पर रखते हैं । लो० तिलक इस सूत्र को जानते थे। वुद्धि पूर्वक वे स्वराज्य की हलचल चलाते थे, परन्तु पागल हाथी जैसे गांधी को उसकी ज़रा भी गतागम न होने से उन्होंने स्वराज्य की लड़ाई का उलटा मार्ग स्वीकार करें नंदनवन समान देश का सत्यानाश कर दिया। व्रिटिश सरकारने सन १९२९ में हिन्द को संस्थानिक दरजे का स्वराज्य देने की कवूलात दी। २।३ हिस्से में अपने सभ्यों को

राउन्ड टेबुल कोन्फरन्स में भेजने का कांग्रेस को निमंत्रण था, पर टेडी खोपड़ी के गांधी ने स्वीकार न किया और पीछे उसके बार २ विनती करने पर भी जब वाईसराय ने मुलाकात तक न की तब भी वह निर्लज्ज मोची के दीपक के जैसे अकेले लंडन गये। लंडन जाकर उन्होंने विट्ठल भाई पटेल के सूचनानुसार पार्लमेन्ट के समक्ष हिंद के पूर्ण स्वराज्य की माँग पेश न की पर हिन्दुओं का निकंदन निकालने वाली और मुसलमानों को बलवत्तर बनाने वाली और उन्मत्त मनोदशा करने वाली जिन्ना तथा आगाखाँ ने १४ माँगें जो तैयार कर रखी थीं २६ करोड़ हिन्दुओं की ओर से कोरे पने पर चेक लिखकर गांधी ने उसको स्वीकार कर लिया और जब पीछे से भाई परमानंद ने विरोध उठाया तब गांधी मालवीय तथा मुंजेने ईंग्लेंड के प्रधान मंत्री मेकडोनल्ड को पत्र लिखकर कौमी बातो में निर्णय कर देने के लिये प्रार्थना की। इस समय अन्त्यजों की तरफ से अंबेड़करने हिंद की समग्र प्रांतीय धारा सभाओं में अन्त्यजों को कुल ३० सीट को देने की याचना की थी, परन्तु देने से हिन्दुओं में विभाग हो जायगा इसलिये एक भी बैठक न दूंगा ऐसा गाँधी ने जवाब दिया था। गांधी के नेतृत्व में गवर्मेन्ट ने हिन्द के लोगों की पूरी निर्माल्यता देख ली उससे उसने नया शासन विधान

किंवा फेडरेशन में पूर्ण स्वराज्य, संस्थानिक स्वराज्य अथवा स्वराज्य का सार तो हिन्द को देना दूर रहा पर हिन्द जो कुछ थोड़ी बहुत स्वतंत्रता भोगते थे वह भी युक्ति प्रयुक्ति से छीन ली। लश्कर रेलवे खजाना आदि ऊपर तो सरकार ने अपना पूर्ण अधिकार रक्खा ही था पर फेडरेशन में सिंध के हिन्दुओं का सख्त विरोध होते हुए सिंध बम्बई इलाका से तथा सरहद को पंजाब से पृथक बना कर, उस २ प्रांत के अति अल्प संख्या वाले हिंदुओं की स्थिति अत्यन्त दयाजनक बना दी है। इसी तरह ब्रह्मदेश को तथा एडन को हिंद से पृथक बनाकर हिंदुओं के व्यापार को तथा करोड़ों रुपया की आमद को भस्मीभूत किया है। इतने से भी तृप्त न होते हुए उसने हिन्दुओं के बलिदान से मुसलमानों को, अन्त्यजों को, स्त्रियों को, मजदूरों को, ऐग्लो इन्डियनों को तथा युरोपियनों को प्रमाण से मताधिकार विशेष दिया है। ऐसा राष्ट्र विघातक और हिंदू संहारक कोमी बटवारा हिंद और इंग्लेंड में एक साथ प्रसिद्ध होते ही हिन्दुस्थान के लोग खलबला उठे और उसका बहिष्कार करने के लिये उग्र तयारी करने लगे। परंतु उसी दिन गाँधी ने यरवदा की जेल में २१ दिन का उपवास करने का ढोंग शुरु कर कहा कि इस बटवारे से हिंदुओं का टुकड़ा हो जायगा इसलिये आंबेडकर जो चाहे सो भी मैं

अन्त्यजों को देकर हिन्दुओं की एक्यता रखना चाहता हूं नहीं तो मैं प्राण त्याग करूँगा ऐसे स्त्री-चरित्र जैसे गांधी के इस हिन्दुत्व नाश के षड़यंत्र को हमने उसी रात्रि को बम्बई में श्री हिन्दू सनातन धर्म सभा की सभा बुला कर प्रसिद्ध किया और हजारों पैम्फलेटों को उसी समय छपा कर बाँट दिये और लोगों को चेताया कि गांधी का यह एक जाल है, उसमें कोई फँसना नहीं। गांधी करोड़ उपाय से मरेगा नहीं। उसके उपवास बीची झरना का पानी तथा सुगर के सत्त्व के इन्जकशन वाले हैं। उससे उसको बहुत पोषक तत्त्व मिलने से वह मरने के बदले दीर्घकाल पर्यंत जीवेगा तब भी वे कल मरता हो तो भले ही आज मरे पर उसके कहने के अनुसार अन्त्यजों को हक देकर छब्बीस करोड़ हिन्दुओं को मारना नहीं।

परन्तु विनाश काल में जिनकी विपरीत बुद्धि हुई है ऐसे हिन्दुओं ने हमारा कथन न माना और मदनमोहन मालवीय, सर पुरुषोत्तमदास ठाकोरदास, रविन्द्रनाथ टागोर, पी० सी० राय, बिड़ला वगैरह सुधारक गांधी को बचाने पूना दौड़ गये। अपने को सनातनी नेता मानने वाले ऐसे भी मूक न बैठे पर वक्तव्य नि[illegible] तथा राघवा-

श्रम में सभा कर गांधी को बचाओ, वह अन्त्यजों को राजकीय हक दे इसमें हमारा विरोध नहीं, ऐसी सज्जनता दिखाने लगे इससे गांधी ने जो विलायत में अंबेड-कर को ३० बैठक देने संमत नहीं हुआ था उसकी जगह पर कर्ण जैसे दातार बन कर अन्त्यजों को धारा सभा में हिंदुओं की तरफ से १४८ बैठकों को देकर अंबेडकर के साथ पूना पैक्ट किया। मालवीय टागोर वगैरह ने वह भयंकर शर्त पर अपनी साक्षी कि और वह शर्त स्वीकार करने के लिये हिंदी वजीर सर सेम्युअल होर को तार दिया गया। तार मिलते ही उस राजनीतिज्ञ वजीर ने पार्लामेण्ट की संमति प्राप्त कर उसे तत्काल स्वीकार कर बज्रलेप बना दिया। तत्पश्चात् तुरंत ही मालवीय ने बम्बई के कावसजी जहांगीर होल में तथा नर नारायण के मंदिर में सभाएँ कर पूना पैक्ट २४ करोड़ हिंदुओं की तरफ से हुआ है, उसका हिंदू बराबर पालन करें नहीं तो हिंदुओं को लांछन लगेगा इत्यादि कहकर नर नारायण के मंदिर में भंगियो को घुसाकर उसने मंदिर भ्रष्ट किया। जब सेन्ट्रल एसेम्बली में मि० जिन्ना ने कौमी बँटवारा मान्य करने के लिये प्रस्ताव किया, तब फेडरेशन तोड़ने की वाहियात बात करके हिंदुओ के मत मांगते बेईमान कांग्रेसवादी मेम्बरों ने उसका विरोध

न करके मूक संमति देकर प्रस्ताव पास होने दिया। अब उस पूना पैक्ट के सामने हिंदुओं का भयानक रोष प्रकट होते देख उसको बनाने में अग्र भाग लेने वाला ये ही मायावी मालवीय और टागोर वगैरह उसको रद्द करने की हलचल में लगे हैं। वह पूना पैक्ट जो अब कौमी बटवारा का एक अंश बन गया है उसका विरोध छोड़ फिर ये ही मायावी मालवीय पुनः उसमें से अलग भी हो जाते हैं ये कितने प्रपंच तथा नालायकी की बात है ? ऐसे बहुरुपिया दगाबाज नेता नामधारियों ने ही देश, जाति तथा धर्म को बदनाम करके गुलाम बना दिया है। गांधी ने इस रीति से युक्ति करके हृदयशून्य हिंदुओं के पास से नया राज्य बंधन तो स्वीकार करा लिया, पर अधिक में पूना पैक्ट का हिंदुत्व संहारक महा पाप भी शामिल कर दिया ऐसे बिलक्षण व्यक्ति को ब्रह्मा ने किंवा राज्य सत्ता ने बनाया है अथवा स्वयं बना हुआ है वह समझना कठिन है। इस रीति से हिंदुओं के मस्तक पर बलात्कार से लदे हुए कौमी बटवारा तथा पूना पैक्ट को हिन्दुओं ने कोई भी अवस्था में स्वीकार करने को तय्यार होना ही नहीं पर अपनेमें ईश्वरने जितनी शक्ति रक्खी हो उतनी का उपयोग कर उसको रद्द कराकर उसकी जगह पर स्वयं को ठीक जचें, ऐसा न्याय प्राप्त करना चाहिये। इस पूना

करार से मात्र बंगाल और पंजाब प्रांत के हिन्दुओं के साथ ही अन्याय हुआ है और दूसरे प्रांतों के हिंदुओं को नुकसान नहीं हुआ है ऐसा नहीं माना जा सकता, क्योंकि, समग्र प्रांन्तों के हिन्दुओं के साथ एक ही समान नुकसान तथा अन्याय हुआ है। बंगाल और पंजाब प्रांत के हिन्दू सब एकत्र होकर के अपनी पुकार सुनाते हैं तब दूसरे प्रान्त के हिन्दू दब कर मूक बैठे हैं उससे बंगाल और पंजाब का नाम आगे आता है। इन दो प्रांतों के हिन्दुओं को संतोष मिले इस तरह पूना पैक्ट में सुधार करने कराने की कोशिश होती है वह हमारे मत से योग्य नहीं है। समग्र प्रांतों के हिन्दुओं को पूना करार से आघात हुआ है और नुकसान पहुंचा है इसलिये समस्त देश के हिन्दुओं को एकत्रित होकर उसको रद्द कराने का उद्योग करना चाहिये। बंग-भंग के समय जब बंगालियों के साथ ऐसा ही अन्याय हुआ था तब उसको भी वज्रलेप मानने में आता था परन्तु बंगालियों की उसके सामने तीव्र और अविरत हलचल से आखिर सरकार ने अपना कानून रद्दकर बंगालियों को संतुष्ट किये। पूना पैक्ट संबंध में यदि हिन्दू उग्र हलचल कर रद्द कराने के लिये प्रयत्न करे तो गवर्मेन्ट को अवश्य रद्द करना पड़ेगा। पूना पैक्ट तथा कौमी बटवारा रद्द न हुआ तो हिन्दुओं के ऊपर मुसलमानों का

अत्याचार होगा, सर्वत्र चमार भंगी वगैरह अग्रगण्य बन सनातन धर्म और हिन्दू संस्कृति को नष्ट करेंगे इसलिये दोनों को रद्द कराना ही हिन्दुओं का धर्म है।

११ सनातनियों का दान तथा ट्रस्ट डीड

दान भोग और नाश ये तीन धन की गति हैं। दान-पुण्य से स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है इसलिये दान करना चाहिये ऐसी मान्यता से हजारों धर्मनिष्ठ हिन्दुओं ने लाखों रुपये दान दिये है और देते हैं। जिस धनिक गृहस्थ को संतान न हो अथवा हो तो लायक न हो और यदि लायक हो तो वह छोटी अवस्था की हो इस लिये वह अपने परिचितों को दिये हुए दान के ट्रस्टिओं का नाम अमुक शर्त पर मिल्कत तथा नगद रकम का ट्रस्टडीड बनाकर उन ट्रस्टियों को सौंप जाते हैं। हिन्दुओं के ऐसे ट्रस्टों की रकम लाखों की नहीं पर करोड़ों की है और प्रति वर्ष वे बढ़ती रहती है। उपरांत दुष्काल, बीमारी, भूकम्प, गोरक्षण, अनाथाश्रम, दवाखाना, अछूतोद्धार और कांग्रेस वगैरह के लिये भी प्रसंगोपात्त लाखों रुपये का दान दिया जाता है, परन्तु दान का प्रकार:—

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतम् ॥

देश काल और पात्र देख कर सुपात्र को दान देना चाहिये उस बात की उपेक्षा कर दाता कुपात्र को दान देते हैं इसलिये पुण्य के बदले उल्टा पाप प्राप्त कर नरक के भागी होते हैं ।

धनिक लोग सुपात्र को सत्कार्य में दान करके अपने ही हाथ से उसकी सुव्यवस्था करते हों तो वह परम फलदायी हो परन्तु कुपात्र को असत्कार्य में दान करके उसकी व्यवस्था करने का कार्य धर्मद्रोही नास्तिकों के हाथ में सौंपना यह अत्यन्त मूर्खतापूर्ण तथा घातक है । अभी जितना दान दिया हुवा है और होता है वैसे ही जितने ट्रस्टडीड बने हैं, और बनते हैं, और उसके ट्रस्टी की नियुक्ति की है, और करते हैं वह प्रायः ऐसे ही प्रकार के किये हुए होने से उसका भारी दुरुपयोग हो रहा है, । अभी दान में जो रकमें देने में आती हैं तथा कोई नामधारी नेता बनवा ले जाता है वह क्यों तो स्वयं पचा जाता है अथवा तो जिसके उपयोग के लिये वो ले गया होता है उसको उसमें से थोड़ी भी सहायता मिलती नहीं । जैसे कि बिहार भूकम्प के लिये एक

कांग्रेसी नेता ने लोगों के पास से प्रायः ३० लाख रुपया लिये इसमें से उसने आठ लाख खर्च किये और बाकी के अपने पास में रखे हैं। उस फंड में से उनने जो थोड़े रुपये खर्च किये वे भी निष्पक्षपात रीति से तथा सच्चे दुःखियों के अर्थ नहीं पर अन्त्यजों को तथा मुसलमानों को उसकी थोड़ी बहुत मदद की परंतु मदद के पात्र ऐसे मध्यम स्थिति के दुःख पीड़ित हिन्दुओं को तो ऐसा सुना दिया कि तुम यदि अन्त्यजों को कुए पर पानी भरने की और देव मंदिरों में प्रवेश होने की कबूलात दोंगे तो तुमको मदद मिलेगी और रेती से पूर्ण हुए कुओं की तथा देव मंदिरों की दुरुस्ती करा दी जायगी, पर हमारी वे बात तुम नहीं स्वीकार करते इसलिये मदद नहीं मिलेगी ऐसा साफ कह कर बिलकुल ही सहायता न दी।

कितने धर्मनिष्ठ धनिक सज्जन के बनाये ट्रस्ट में सर पुरुषोत्तमदास, कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी, तथा कन्हैयालाल मुन्शी जैसे सुधारक ट्रस्टी बन बैठें हैं। नगर ठट्ठा के एक वैष्णव सज्जन के लाखों की रकम के ट्रस्ट में एक गांधीपंथी जैन सुधारक मेनेजींग ट्रस्टी बन बैठे है और मांगरोल की एक वैश्य विधवा के लिये अढ़ाई लाख रुपये नगद, तीस हजार के घर और एक हजार गिन्नी और गहनें उसके पति द्वारा नियुक्त

किये हुए ट्रस्टी महाशय ने उस सभी द्रव्य को खा पीकर हजम कर लिया है और उस निराधार विधवा को भिखारन बना कर उल्टे सता रहें हैं। यह क्या अपने हिंदुओं की अल्प बुद्धि से बनाये हुए ट्रस्टों का थोड़ा दुरुपयोग कहा जाय ?—

पाँच सौ हजार की प्रति वर्ष आमदनी वाले मठ मंदिरो की आय व्यय जाँचने के लिये और उसको दुरुपयोग होते अटकाने के बहाने जब गवर्मेन्ट कानून बनाती है तब कांग्रेसवादी, गांधीपंथी, हरिजन सेवक संघ, स्वराज्य वादी सुधारक तथा नेता नामधारी लोग देश सेवा के नाम पर लाखों और करोड़ों के फंड लोगों के पास से ले जाते हैं उसका हिसाब जाँचने के लिये कानून क्यों नहीं बनाया जाता ? जवान वय की अविवाहिता लड़कियों को दुराचार से बचाने के लिये तुरंत बिवाह हो ऐसा कानून पास करने की जरूरत थी, उसके बदले चौदह वर्ष तक लड़कियों को अविवाहित रखने का कानून पासकर जैसे अनिष्ट किया है, वैसे धर्मादाय संपत्ति के संबंध में भी सरकार को सीधा सूझता नहीं है ये दुःख की बात है।

इस समय सनातनी हिन्दुओं का कर्तव्य है कि उनकी धर्म विरुद्ध प्रवृत्ति में तो कभी एक पैसे की मदद देना ही नहीं, पर उनको निश्चय के साथ में ये प्रतिज्ञा लेने की भी आव-

श्यकता है कि सत्कार्य-पुण्यकार्य में जो कुछ द्रव्य खर्चना वह क्या तो अपने हाथ से खर्चना अथवा कदर जानती प्रतिष्ठित गृहस्थों से खर्चने को सुपुर्द करना। अपने पीछे संतति न हो किंवा हो तो नालायक हो अथवा आज स्थिति और विचार अच्छे हैं और कल दैवयोग से फिर जाय इसलिये उसकी व्यवस्था अपने हाथ से ही सुन्दर रीति से कर रखना।

को जीती खा कर मिल्कत को नष्ट कर डालेंगे, जैसी बम्बई के एक धनाढ्य वैश्य विधवा की तथा उनकी मिल्कत की दुर्दशा हो चुकी है। अपने ही द्रव्य से खुदकी तथा अपनी जाति धर्म की सनातनी धनिक वर्ग जो दुर्दशा कर महा पाप के भागीदार बन रहे हैं और जाति तथा धर्मद्रोही सुधारकों का बल तथा महिमा बढ़ा रहे हैं वह उनका अक्षम्य अपराध है इस लिये गुप्त किंवा खुला दान करने वाले प्रत्येक हिन्दू गृहस्थ ऊपर की सब बातें दृष्टि में लेकर अपने हाथ से ही द्रव्यका सदुपयोग करे और वह जो जाहिर दान पुण्य तथा ट्रस्टडीट करे उसमें कट्टर सनातनी प्रतिष्ठित गृहस्थों को ही ट्रस्टी तथा अग्रसर बनाकर अधिकार सुपुर्द करे।

१२ केन्द्रस्थ सनातन धर्म महासभा

ग्राम ग्राम में और शहर शहर में तो सनातन धर्म सभा होनी ही चाहिये परन्तु उन सब सभाओं को समय २ योग्य प्रेरणा करने वाली देश भर के अलग २ सम्प्रदाय के आचार्यों को, धर्मप्रेमी विद्वानों को, धनिकों को, कार्य कर्त्ताओं को तथा गृहस्थों को प्रत्येक वर्ष अधिवेशन कर एकत्र करने वाली, प्रांतीय तथा बड़ी धारा सभा के चुनाव के समय पर कट्टर सनातनी उम्मेदवारों को खड़े करने

वाली तथा अपने आप खड़े हुए सनातनी को सहायता देने वाली, अधिवेशन में पास हुए प्रस्तावों का अमल में लाने वाली और धर्म-विरोधी बिलें पास होते समय सरकार के पास सनातनी कार्यकर्त्ताओं का डेप्युटेशन तथा मेमोरियल भेजने वाली देश भर के सनातनियों की एक केन्द्रस्थ सनातन धर्म महासभा होनी चाहिये। ऐसी केन्द्रस्थ महासभा का संचालन का कार्य कभी भी कोई कच्ची उम्र के युवक को तथा वैभव विलास में पले हुए कोई राजा, आचार्य किंवा धनिक को न सोंपना चाहिये, अन्यथा वो संस्था दीर्घ समय तक निभेगी नहीं। उस संस्था का कार्य भार का बोझा जिसके अंतःकरण में सनातन धर्म की लगन लगी हो, जिसने सनातन धर्म हित रक्षार्थ प्रण लेकर कार्य किया हो, जिसकी दृढ़ता मेरु समान अचल हो और जिसके सदाचार तथा चरित्र में कलंक न हो ऐसे प्रौढ़ वय के गंभीर विद्वान सनातनी किंवा सनातनियों को सुपुर्द करना चाहिये। आज कल एक महा दुःख की बात यह हो गई है कि सनातनी शास्त्री पंडितों को बहुधा व्यवहार तथा राजनीति का ज्ञान होता नहीं और अंग्रेजी पढ़े हुए वकील डाक्टरों को सनातन धर्म का सिद्धान्त का ज्ञान होता नहीं इससे जब उन को कार्य करने का प्रसङ्ग आ मिलता है तो दोनों ही बड़ी क्षति करते हैं। गत बीस पचीस वर्षों में ऐसे ही लोग घुसे हैं और

दो बड़ी सनातनी संस्था धराशायी होने के साथ सुधारक नास्तिकों को बहुत बल उत्तेजना मिली है। सभा में सभ्य, के गुण दोष जाने बिना चाहे जिसकी भरती करके संख्या बड़ी करके गिनाने से कदापि उसके ध्येय सिद्ध नहीं होते तथा वे विजय पाते नहीं। जर्मनी की नाज़ी पार्टी में प्रथम बहुत थोड़े सभ्य थे परन्तु जो थोड़े थे वह अतिशय कट्टर थे उससे वह समूह प्रवृत्ति करते करते उत्तरोत्तर बलवान होते गये और अपने ही जैसे कट्टरों को अपनी संस्था में भरती करते गये इससे थोड़े समय में ही वह विजयवंत बन गये। पर जो दीर्घ दृष्टि से विचार किये बिना संख्या के लोभ से जो उन्होंने अर्धदग्ध को उसमें शामिल किया होता तो नाज़ी पार्टी कभी की समाप्त हो गई होती और विजय के ठिकाने नाज़ी मत वालों का ही अस्तित्व न रहा होता। अब सरकार के साथ अंग्रेजी भाषा में काम लेने के लिये हमारे सनातनी लोग अर्धदग्ध वकील प्रोफेसर को सनातनी संस्थाओ में अग्रसर बनाते हैं। जो अर्धदग्ध को कांग्रेस में तथा गांधीपंथ में कोई महत् स्थान् नहीं मिले और निकट के भविष्य में मिलेगा ऐसी संभावना नहीं देखी जाती ऐसे आते हैं इसलिये उन स्वार्थ साधुओं को अब सनातनी संस्थाओं में आने देना अत्यन्त खतरनाक समझना चाहिये। वैसे सिद्धांत रहित स्वार्थ साधु वकील तथा प्रोफेसर सही सलामत नौका को

भी समुद्र में डुबा देंगे और विरोधियों की साथ मिल कर अपनी जीत की बाजी भी हार में फिरा डालेंगे इस लिये अपनी सनातनी संस्थाओं के नेता कट्टर होना चाहिये। और सिद्धान्त रक्षार्थ प्राणार्पण करने को तत्पर हो वैसी कसोटी पर चढ़े हुए को ही उसके पदाधिकारी पद पर योजना की जानी चाहिये। तब ही वो संस्था स्थापित करनी अथवा होनी उपयोगी है।

१३ वैदिकों को मदद

लोग आज कल प्रायः ऐसी विद्या पढ़ते हैं कि जिससे नौकरी मिले तथा पैसे कमावें इस भावना के लिये तथा देशकी दुःखद परिस्थिति के कारण वेद विद्या लोप होती जाती है। वेदविद्या हिंदुओंका सर्वस्व है और उसके पुनरुद्धार में ही हिंदुत्व का उद्धार है ये बात हम आगे बता चुके हैं परन्तु अभी राजाओं, धनिको तथा आचार्यों की ओर से मदद के अभाव के कारण वेद विद्या पढ़ने में कोई प्रयास करते नहीं और उससे वैदिक देश में वहुत थोड़े रह गये हैं। जो थोड़े रह गये हैं उन्हीं का संरक्षण कर लेने का जरूरी है। नहीं तो वेद विद्या अदृश्य होने से सनातन धर्मियों की अत्यन्त दुर्दशा है। सत्य त्रेता द्वापर युग

में लोग सत्यवादी तपस्वी और योगबल संपन्न थे, उससे समग्र विद्या उन्होंके कंठाग्र रहती थी। ग्रंथों की आवश्यकता नहीं रहती थी, परंतु कलियुग के लोगों की अल्पज्ञता विचार कर महर्षि वेद-व्यास जी ने बहुत दया कर समग्र धर्म ग्रंथों को आपने गणपति जी के पास एवं शिष्यों के पास लिखाये परंतु उसके बाद विधर्मी विदेशी तथा नास्तिक लोगों के असह्य आक्रमण से असंख्य ग्रंथ नष्ट हुए और जो थोड़े बचे हुए है उसका आज हमलोगों को लाभ मिल है उसको व्यास जी की कृपा माननी चाहिये। वेद जानने वाले प्रत्येक वैदिक को प्रत्येक मास में बहुत नहीं तब भी पांच रुपये की मदद धनिको, राजाओं आचार्यों तथा ग्राम के धर्मप्रेमी लोगों की ओर से देने की आवश्यकता है जिससे उन्होंकी अंतरात्मा प्रसन्न और निश्चिंत रहे और उसका घर द्विज बालकों के लिये मुफ्त वेद विद्या पढ़ने का एक दिव्य स्थल बने रहे। सनातन धर्म का बीज नष्ट न हो इसलिये स्व० पं० लक्ष्मण शास्त्री द्रविड़ का बहुत आग्रह था और वो बारबार हम लोगों को उस संबंध में कहते भी थे, इसलिये सनातन धर्म के अभिमानी गृहस्थों को वैदिकों को यथाशक्ति सहायता पहुँचाने का सत्वर प्रबंध करना आवश्यक है।

१४ सनातनी नेताओं के डेप्युटेशन

सनातन धर्म के उद्धार के लिये बताये हुए अनेक उपायों कार्य में रखने के लिये तथा राजाओं, को आचार्यों, धनिको, अधिकारियों, साधु संन्यासियों को तथा जनता को अपना स्वरूप और कर्त्तव्य के परिचय कराने के लिये डेप्युटेशन तैयार कर देश में सर्वत्र बहुत नहीं तो भी वर्ष में दो मास परिभ्रमण कराना चाहिये। उसमें दो तीन धर्माग्रही प्रतिष्ठित आचार्यों की, दो तीन बहुश्रुत शास्त्री पंडितों की, दो तीन विद्वान राजनीतिज्ञ प्रभावशील धर्मनिष्ट गृहस्थों की, दो तीन सनातन धर्म के प्रखर वक्ताओं की तथा जहाँ २ सभाएं हों वहाँ २ रिपोर्ट लेकर तार तथा रिपोर्ट लिखकर छापाओं में भेज सके ऐसे दो सनातनी लेखकों की, एक स्टेनोग्राफर और एक नौकर तथा जिस प्रान्त में डेप्युटेशन जाय उस प्रांत के पाँच स्थान कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति हो।

इस प्रकार के सनातनी डेप्युटेशन की मुलाकात से तथा समझाने से कितने राजाओं की भ्रांति नष्ट होगी, जो विलायत जाते हैं और धर्म विरुद्ध कानूनों को करते हैं वे रुकेंगे, अपने क्षात्र धर्म का ज्ञान यदि उन [illegible] को हो और वे...

क्षात्र धर्म का परिपालन करने का जो मन पर ले तो जल्दी ही उसके राज्य में हिन्दू बालकों को धार्मिक शिक्षण देने का प्रबंध हो सकेगा, ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना हो सकेगी, गायों की तथा मंदिर मूर्तियों की रक्षा हो सकेगी और दैनिक पत्र, उप-देशकों तथा सनातन धर्म विश्वविद्यालय की योजना को बहुत सहायता मिलेगी। उसी प्रकार डेप्युटेशन की प्रेरणा से धनिकों और आचार्यों को मौज में अपना द्रव्य न उड़ाते किंवा धर्मध्वंसी कुपात्रों को मदद न करते सनातन धर्म के उद्धार कार्य में ही देंगे, स्थानिक सनातन धर्म सभा तथा कार्यकर्त्ता भी खूब उत्साह में आकर त्वरा से सनातन धर्म रक्षा का कार्य करने लगेंगे। इसलिये कोई धनवान गृहस्थ को किंवा गृहस्थों को मोटर लारी, ड्राईवर, पेट्रोल तथा डेप्यु-टेशन के सभ्यों के भोजन खर्च के लिये बोझा उठाकर जल्दी ही डेप्युटेशन को देश में फिराना अवश्य है।

१५ सनातनी सम्मेलन-अधिवेशन

प्रत्येक ग्राम की सनातन धर्म सभा को प्रत्येक वर्ष अपनी सभा का वार्षिकोत्सव करना चाहिये। शहर की सभाको प्रांतीय सनातन धर्म सम्मेलन करना चाहिये और केन्द्रस्थ सनातन धर्म

सभा को अखिल भारतवर्षीय सनातन धर्म का अधिवेशन बुलाना चाहिये। उसके साथ सनातनी साहित्य परिषद्, सनातनी पत्रकारों के सम्मेलन तथा शास्त्रार्थ सभाओं की भी योजना करनी चाहिये। शास्त्रार्थ सभा में जो कोई अपने संदेह को पेश करे उसका खुलासा सप्रमाण करना चाहिये। और सुधारक नास्तिकों तथा आर्य समाजियों ने वेद के नाम पर तथा देशोद्धार के नाम पर जो कुछ कुतर्क प्रजा में फैलाया हो, उसका शास्त्र तथा युक्ति से परिहार करना चाहिये। सनातनी साहित्य प्रकट करने की तय्यारी के उपरांत स्कूलों तथा कालेजों के लिये पाठ्य पुस्तकों को तय्यार करना चाहिये। पत्रकारों के सम्मेलन में सनातनी पत्रों को परस्पर कैसे सहायक होना, तथा पत्र चलाने के लिये कैसी नीति को ग्रहण करना चाहिये। उसका विचार करना चाहिये। वार्षिकोत्सव, सम्मेलन और अधिवेशन में देश में सर्वत्र फैले हुए अधर्म तथा अधर्मियों का सामना करने के लिये, प्रजा के हृदय में धार्मिक संस्कारों को डालने के लिये तथा सनातनियों को संगठित करने के लिये कांग्रेस, धारासभा, म्युनिसिपालिटी, लोकल बोर्ड और युनिवर्सिटी, सेनेट को विवश कर उसमें होने वाली धर्म विरोधी प्रवृत्ति रोकने के लिये और उन २ संस्थाओं में सनातनी सभ्यों को किस रीति से प्रवेश कराना इत्यादि बातो पर गंभीर विचार

करके मार्ग निकालना चाहिये । और प्रखर वक्ताओं के व्याख्यान को सनातन धर्म के भिन्न २ विषयों पर कराना चाहिये ।

सम्मेलन में प्रस्ताव तथा अपील करके फंड में द्रव्य भरा कर कृतार्थता मानना नहीं चाहिये पर प्रस्ताव का शीघ्र पालन हो उसमें ही परिश्रम की सार्थकता समझनी चाहिये । जापान ने रशिया के सामने युद्ध करके विजय प्राप्त किया उसके पूर्व जैसे जापान ने अपने देश जनों के पास से केवल मरने के लिए २५०० मनुष्यों से प्रार्थना की थी और उसके जवाब में २५००० जापानी प्रजाजनों ने मरने की तत्परता दिखाई थी, वैसे ही सनातनियों को व्यर्थ वातों को छोड़ कर प्रारंभ में कम से कम ५०० से १००० तक बलिदान देने के लिये तत्पर हो तो सनातन धर्म का विजय अवश्य है । धर्मद्रोही सनातनियों को ऐसा चमत्कार देखते कभी भी धर्मनाश तथा धर्मविरोधी प्रवृत्ति करने का साहस कर सकेंगे नहीं इसलिये एक तरफ से सनातन धर्म का सम्मेलन—अधिवेशन तथा परिषद् भर कर लोकमत जागृत कर सनातन धर्म अनुकूल बनाने की जरूरत है, और दूसरी तरफ से कार्य साधयामि वा देह पातयामि किंवा धर्म रक्षार्थ देहोत्सर्ग करने वाले नरवीरों को खड़े करने की खास आवश्यकता है ।

१६ छप्पन लाख साधु संन्यासियों का संगठन

हिन्दुस्थान में छप्पन लाख साधु बावा अतीथ संन्यासी त्यागी बैरागी महंत मठाधीश उदासीन वगैरह महात्मा हैं। वो जब हरिद्वार प्रयाग उज्जैन तथा नाशिक में बारह २ वर्ष में कुम्भ यात्रा होती है तब पधार कर दर्शन देते हैं। इन महात्माओं ने संसार को तुच्छ-दुःखदायी मानकर प्रभु प्राप्ति के लिये त्याग किया है। हिन्दू भी ऐसी भावना से प्रेरित हो उन्हीं को अन्न वस्त्र देते हैं। साधुओं तथा गृहस्थों उभय के इस प्रकार के विवेक ये धर्म के आभारी हैं। यदि दोनों के हृदय में धर्म भावना के उदय हुए न हो तो साधु संन्यासियों को संसार व्यवहार छोड़कर भगवा वस्त्र न पहनते और गृहस्थों ने उन्हे अन्न वस्त्र से सत्कार किया न होते। परन्तु अभी जब चारों तरफ से धर्म और धर्म मर्यादा पर कुल्हाड़ की चोट पड़ती है, उसको छिन्न विच्छिन्न करने के लिये सुधारक पहाड़ों के पहाड़ बरखा रहे हैं, प्रचंड प्रचार कार्य से, बहुमत के बलात्कार से तथा कायदा कानूनों से हिन्दुओं को विदीर्ण कर डालने के लिये दिन रात अविरत यत्न कर रहे हैं तब साधु संन्यासियों का त्याग कैसा निभेगा, प्रभु का साक्षात्कार भी किस

अन्न वस्त्र की भिक्षा भी कैसे देंगे ? और हम जब परिस्थिति देखते हैं तो है भी वैसी। कितने साधु संन्यासी बावा वातावरण के भोग बन कर धर्म विरुद्ध अंडबंड बकते हैं। कितने ही विषय वासना में गरक हो गये हैं। कितने द्रव्य इकट्ठा कर वैभव भोग रहे हैं और कितने पेट के लिये मुट्ठी भर अन्न के लिये मारे फिरते हैं तो भी नहीं मिलते। साधुओं की ऐसी विषय लोलुपता देखने से तथा धर्म हीन वातावरण की खराब असर बैठने से वैसे ही आर्थिक स्थिति भी दुःखद होने के कारण से कितने लोग अब साधुओं को भिक्षा देने के बदले अनादर कर घर से निकाल देते हैं।

बावा साधु संन्यासी त्यागी वैरागी मठाधीश महात्माओं को अपनी उभय भ्रष्ट दीन हीन दशा सत्वर समझ लेनी चाहिये और जिसके लिये स्वयं वेष बना लिया है उस धर्म को सुरक्षित रखने के लिये स्वात्मार्पण करना चाहिये। धर्म रक्षार्थ मरने से साधु संन्यासियों को सीधा मोक्ष है। उपरांत धर्म रक्षार्थ मरने से गृहस्थियों की माफिक उनके पीछे कोई दुःखी हो वैसी उपाधि तथा चिंता नहीं है। पूर्व काल में जब २ धर्म ऊपर आपत्ति आती थी तब २ ऋषि मुनियों ने अपना तपोबल वाले हुंकार से और साधु बावा

संन्यासियों ने अपना दंड छिपिया तथा त्रिशूल से धर्म संहारक यवनों को स्वधाम पहुँचाये। अभी भी जो छप्पन लाख साधु बाबा संन्यासी सनातन धर्म को अपना आत्मा समझ कर उसकी रक्षार्थ कांग्रेस तथा धारा सभा की बैठक समक्ष यूथ के यूथ जाकर खड़े रहे तो धर्म नाश के कानून तथा धर्म विरोधी प्रवृत्ति सर्वथा नहीं होगी। किंतु ये धर्म द्रोही उलटे उन्हीं के चेला शिष्य बन कर शरण में आयंगे। इसलिये आश्वयक है कि ये छप्पन लाख साधु संन्यासी संत अपने मन पर धर्म रक्षा की बात ले। ऐसे होंगे तो केवल देश में ही नहीं पर दुनिया भर में सनातन धर्म का डंका बज जायँगे

धर्म एव हतो हंति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद् धर्मो न हंतव्यो मानधर्मो हतोऽवधीत् ॥

ये मनु महाराज के वाक्य अनुसार धर्म रक्षा में ही अपनी रक्षा और परम गति और धर्म के नाश में अपने तथा हिन्दुओं के नाश देख कर साधु संन्यासी जल्दी ही धर्म रक्षणार्थ मैदान में पड़े ये अत्यन्त आवश्यक है।

१७ मंत्र अनुष्ठान

वेदोक्त मंत्र का अगाध सामर्थ्य है। उसका यदि विधि

पूर्वक अनुष्ठान किये जायँ तो संकल्प अनुसार फल मिल सकते हैं, क्योंकि मंत्र आधीन देवता है । जन्मेजय राजा को सर्प यज्ञ में मंत्र के प्रभाव से स्वर्गाधिपति इन्द्र को भी तक्षक नाग के साथ में हाजिर होने की जरूरत पड़ी थी। आज अपने दुर्भाग्य से ये मंत्र जानने वाले बहुत थोड़े हैं और जो थोड़ा जानते हैं तथा आचरण करते हैं वे ब्रह्मचर्य शौचाचार आदि नियमों के यथाविधि पालन करते नहीं उससे वे मनवांछित फल पैदा कर सकते नहीं। तब भी ऐसे धर्म संकट के समय में दूसरे मानुषी उपायों को योजना के साथ में ये दैवी उपाय भी खास योजना जैसे है।

तप में निष्ठावाले को, योग में निष्ठावाले को, भक्ति में निष्ठावाले को तथा मंत्र में निष्ठावाले को यदि वह संयम नियम रखकर एकान्त स्थल में अनुष्ठान करना चाहे और उसका फल सनातन धर्म तथा हिन्दु संस्कृति की रक्षा और धर्मध्वंसियों का क्षय हो इस रीति से अर्पण करने को प्रतिज्ञा लेते हो तो उन्हींको धर्म निष्ठ हिन्दुओं को एक वर्ष पर्यन्त स्थान, फलाहार वगैरह साधन पूरा करने में थोड़ा भी संकोच करना नहीं चाहिये । बहुरत्ना वसुन्धरा इस न्याय के अनुसार तलास करनेसे ये दैवी साधनो में प्रीति वाले पुरुष मिल आवेगें । मंत्र

जानने वाले अनुष्ठानी ब्राह्मण खास करके, काश्मीर, नेपाल तथा आसाम प्रांत में से मिल सकना संभव है। यदि एक मंत्र अनुष्ठान भी सफल हो तो सनातन धर्म की रक्षा, विरोधियों का नाश और भूमंडल का राज्य भी सनातनियां के अधीन हो जाय ।

१८ प्रभु का प्राकट्य होने के लिये

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

ऐसी साक्षात् श्रीमुख की प्रतिज्ञा अनुसार जब २ धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब २ प्रभु अपना रूप धारण करते हैं किंवा प्रकट होते हैं। साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिये और दूषित कर्म कराने वालों के नाश करने के लिये तथा धर्म स्थापन करने के लिये प्रभु युग युग में प्रकट होते हैं ।

परन्तु अपने हिन्दुओं को यहाँ एक बात बहुत ही सूक्ष्म रीति से ये विचारने की हैं कि क्या प्रभु के प्रकट होने का समय आया है ? हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, रावण तथा कंस

जैसे तीन लोकों को जीतकर इन्द्र तक को अपने वश में रखने वाले दैत्यों किंवा दैत्य वृत्ति के अधार्मियो क्या अभी तुम्हारे सामने खड़े होकर तुन्हारे ऊपर तथा धर्म के ऊपर अत्याचार करते हैं ? जब अभी तुम्हारे धर्म, धर्म मर्यादा तथा धर्माग्रहियों के ऊपर अन्याय वाले हिरण्यकशिपु रावण जैसे बलवान नहीं है तब फिर प्रभु को प्रकट होने को क्यों बाध्य होने पड़े।

धर्म और धर्मज्ञों के ऊपर अत्याचार करने वाले गांधी मालवीय नेहरू राजेन्द्र वगैरह इतने तो शक्तिहीन हैं कि जो मात्र दश धर्म निष्ट युवक उन्हीं को पकड़ कर घूंसा थप्पड़ लगावे तब ही सदा के लिये वो चुप हो सकता है। धर्म विरोधी जैसे बलहीन है वैसे फंड मांग कर खाने वाले भिक्षुक भी हैं। उनको यदि हिन्दू द्रव्य की तथा मत की सहायता न दें और नेता न माने तो वो अपंग-शक्ति हीन बन जाय। इन अधर्मियों के पास में केवल वृथा बकवाद करने, लोगों को स्वराज्य का मिथ्या प्रलोभन देकर लेखिनी तथा वाणी से चाहे वैसे बकने के तथा दिन रात भूत की माफिक प्रवृत्ति करने के बल है। उससे यदि धर्माग्रही लोग खूब जोर से अधर्मियों के सामने सतत धर्म प्रचार को तथा अधर्म पाखंड विध्वंस की हल चल करने लगें तो अधर्मियों के तथा अधर्म

के कहाँ भी नामो निशान न रहेंगे ।

हिन्दुओं को अपने घरबार व्यापार धंधा नौकरी रिस्तेदार आदि सकल संसारिक व्यवहार करने हैं, जो करने के लिये प्रारब्ध, कलियुग तथा ईश्वर रच्छा आदि कुछ भी बीच में आता नहीं । अपना कोई अपमान करे, लड़के लड़कियों को कोई कष्ट दे, दुकान में कोई चोरी करने आवे, घर में कोई अग्नि लगावे तब हिन्दुओं को जल्दी ही उसके ऊपर दिवानी तथा फौजदारी उपाय करने हैं, और जब स्वयं बीमार पड़ते हैं उस समय पैसा खर्च कर इलाज करते हैं पर एक मात्र धर्म के सम्बंध में ही जो कलियुग के प्रभाव का, ईश्वर इच्छा का किंवा प्रारब्ध का हवाला देते हैं इससे स्पष्ट समझ सकते हैं कि इस समय हिन्दुओं के हृदय में कुटिल स्वार्थ और धर्म के प्रति उदासीनता ने घर कर लिया है । जहाँ कुटिल स्वार्थ परायणता हो वहाँ प्रभु को प्रकट होने का कहाँ मौका रहता है ?

प्रभु अवश्य प्रकट होंगे पर वे जब हिरण्यकशिपु जैसे बलवान दैत्यों किंवा दैत्य वृत्ति वाले अपनी अमानुषी सत्ता से पृथ्वी पर हाहाकार करेंगे तब धर्मनिष्ठ पुरुषों ने धर्म रक्षा के लिये असह्य कष्टों को सहे होंगे उन्हीं के रक्षार्थ ही जगन्नियंता श्रीहरि अवश्य पधारेंगे । परंतु जो समय के

अभाव में बहते होंगे और शक्ति होते हुए धर्म रक्षा के लिये कुछ भी कार्य मन वाणी कर्म से नहीं करते होंगे उन के लिये प्रभु कदापि प्रकट होते नहीं और हो तो रक्षा करते नहीं। वैसे धर्म विमुख कर्त्तव्य हीनों की तो भयंकर दुर्गति ही होने की है।

इस समय दूसरा कुछ न बने तो छोटे बड़े, ज्ञानी अज्ञानी तमाम हिंदुओं को स्नान से तथा हृदय से शुद्ध हो सुबह शाम व्यक्ति गत तथा सामुदायिक रीति से पवित्र स्थान में बैठकर अनन्य भावना से और एकाग्र चित्त से ध्रुव प्रहलाद अम्बरीष अहल्या द्रौपदी के रक्षक श्रीकृष्ण परमात्मा के चरण में गदगद हृदय से प्रार्थना करनी चाहिये कि हे प्रभो ? शरणागत की रक्षा कर, हे नाथ ! तुम्हारे बिना मनुष्य प्राणियों का कौन रक्षण करने वाला है ? हे जगन्नाथ ! तू ही एक हमारी परम गति है। तेरे चरणारविन्द में ही शाश्वत सुख आनंद और शांति है। हे भक्तवत्सल भगवान् ! अधर्मियों ने अधर्म चला कर हमारा जीवन व्यर्थ बना कर हमारी गति मति कुंठित कर दी है इसलिये आप सत्वर धर्म और धर्मियों की रक्षा करने के लिये पधारिये।

इस प्रकार की नित्य प्रार्थना से तथा नाम संकीर्त्तन से प्रभु प्रसन्न होंगे और अंश कला किंवा विभूति

रूप में प्रकट होकर अपना त्राण रक्षण करेंगे।

१९ संप्रदायों की एकवाक्यता

शांकर, रामानुज, वाल्लभ, माध्व, निम्बार्क, चैतन्य, स्वामी नारायण आदि संप्रदाय के मत प्रवर्त्तकों ने सनातन धर्म के रक्षण कर हिंदुओं के ऊपर महत् उपकार किया है, यह बात निर्विवाद है। वे सब संप्रदाय वेदानुकूल हो वर्णाश्रम धर्म के रक्षक थे। बौद्ध जैन मुसलमान आर्यसमाजी और ख्रिस्ती काल में उक्त संप्रदायों ने ज्ञान भक्ति तथा सदाचार का प्रचार करके विरोधियों के विजयी नहीं होने दिया इसलिये वे सनातन धर्म के सच्चे स्तंभ रूप हैं। वे सब हिन्दू धर्म का मुख्य लक्षण

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्त स्मार्त एव च।
तस्मादस्मिन्सदायुक्तो नित्य स्यादात्मवान्द्विजः॥

आचार को ही परम धर्म मान कर वेद शास्त्र पुराणों के सिद्धांतों का तथा वर्णाश्रम धर्म मर्यादा का प्राणार्पण से अनुसरण करने वाले हैं। वे केवल प्रभु प्राप्ति के साधन में एक दूसरे से पृथक होते हैं सो भी वेदानुकूल ही है, कारण कि वेद ही जीवात्मा के उद्धारार्थ कर्म भक्ति और ज्ञान का उपदेश करके यथाधिकार ग्रहण करने की आज्ञा देते हैं। [illegible] प्रवर्त्तक

महानुभावों को अपने समय में दो को दबाकर जिस एक तत्वकी अतिशयता दिखाई पड़ी उसकी अनिष्ठता दूर करने के लिये एक २ विशिष्ट तत्व-ऊपर बहुत भार रक्खा जो योग्य ही था। परन्तु पीछे से उन्हीं के अनुयायिओं ने गुरु ने उपदेश दिये ज्ञान तथा भक्ति की एक ही बात पकड़ दूसरे को मिथ्या ठहराने अथवा नष्टप्राय करने का जो प्रयत्न किये वे आदरणीय नहीं। वेद ने जैसे कर्म भक्ति और ज्ञान तीन कांड के विधान किये हैं वैसे भगवान ने गीता जी में भी कर्म भक्ति और ज्ञान का उपदेश दिये हैं इन तीनों की समतुलना रहनी चाहिये। यदि एक मात्र ज्ञान रहे और भक्ति तथा कर्म न रहे तो भी लोगों का कल्याण हो सकेंगे नहीं। वैसे भक्ति तथा कर्म रहे और ज्ञान न रहे तब भी लोगों का उदय हो नहीं सकता। तीनों की योग्य प्रमाण में यथाधिकार आचरण करने की आवश्यकता है। अभी हिन्दू अपनी सुख समृद्धि स्वतन्त्रता खो बैठे इसके अनेक कारणों में एक कारण ये तीन श्रेयस् तथा प्रेयस् अर्पण करने वाले साधनों की समानता न रहने से और एक की अतिशय बृद्धि तथा दूसरे का अतिशय ह्रास में ही हैं। उससे अब कोई संप्रदाय के अनुयायियों को एक साधन को अधिक प्राधान्य पद देकर

दूसरे दोनों की उपेक्षा तथा निंदा न करनी पर तीनों का गौरव करने का लक्ष में रखना चाहिये।

जो २ महा पुरुष संप्रदाय चला गये उन्होंने ज्ञान भक्ति तथा कर्म का उपदेश दे भगवान के ही भजन करने को कहा है। ये संप्रदाय प्रवर्त्तक स्वयं ही भगवान थे और लोगों को उसको भजना चाहिये ऐसा अनुचित उपदेश कहीं भी किसीने नहीं दिया और यदि दिया हों तो किसी को मानना भी नहीं चाहिये। उन्होंने तो अपने को भगवान के दासानुदास मना कर वेद शास्त्र पुराणो की तथा वर्णाश्रम की मर्यादा पालन कर परब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण भगवान को ही भजने का बोध दिया है तथापि अभी कोई २ संप्रदाय के अनुयायी अपने संप्रदाय प्रवर्त्तक आचार्य–गुरु को ही ईश्वर मानकर उन्हों की मूर्त्तियों को प्रभु की पास में पधरा कर आचार्य का भजन करते हैं और वेद शास्त्र पुराणों का अभ्यास छोड़ कर अपने २ संप्रदाय के ग्रंथों की बात श्रवण मनन करने में ही तल्लीन रह कर विश्वात्मा भगवान को भूल गये हैं अर्थात् प्रभुको गौण मानते हैं। अरे! कितने मूर्ख तो राम और कृष्ण को क्षत्रिय के लड़के कहने की भी धृष्टता करते हैं ये वास्तव में दुष्टता और मूर्खापने की परिसीमा ही हैं। प्रत्येक संप्रदाय के अनुयायियों को अपने संप्रदाय प्रवर्त्तक पुरुष को गुरु मान

कर, वेद शास्त्र का चिंतन करते हुए भगवान को ही भजना चाहिये। कोई व्यक्ति के कहने मानने से मनुष्य भगवान बन सकते नहीं, क्योंकि धर्म शास्त्र ने निर्णय किया है कि,

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशसः श्रियः।

ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षराणां भग इतीरणा ॥

समग्र ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य नाम के छ भग जिसमें हो वे ही भगवान कहलावे, इस रीति से तत्त्व न समझते अपने हिन्दू लोग भगवान तथा वेद शास्त्र की आज्ञा रख संप्रदायों की भावना में ओतप्रोत हो गये उससे सनातन धर्म और वर्णाश्रम का ज्ञान हिन्दुओं में नहीं के समान होने से सनातन धर्म, हिंन्दू संस्कृति, हिंदुत्व और हिन्दू जाति अभी मृत्यु के मुख में आकर अन्तिम श्वास लेती हैं। इसलिये प्रत्येक संप्रदाय वालों को सत्वर अपनी क्षति को दूर कर सबकी एकवाक्यता कर सनातन धर्म, वेदोक्त मर्यादा और वर्णाश्रम की रक्षा करने के लिये दत्तचित्त होना चाहिये। आद्य आचार्यों के महान् तपोबल, भक्ति बल तथा ज्ञान बल के प्रताप से उनके वंशज तथा शिष्य परंपरा-गत के आचार्य को लोग पूज्य भाव से मान, सम्मान करते हैं। अपने पूर्वजों की कृपा से कितने आचार्यों को विपूल वैभव,

सत्ता समृद्धि भी प्राप्त हुई है, परन्तु अत्यंत दुःख की बात है कि सनातन धर्म की यह दीन हीन दशा में कोई आचार्य अपनी उस सत्ता तथा संपत्ति का धर्म रक्षा के कार्य में उपयोग करते नहीं। मौज शौख में प्रत्येक वर्ष हजारों लाखों रुपया उड़ाना है, मोटरों की रात दिन सहेल करना है, मुसलमान गवैया और नृत्य करने वाली स्त्रियों को भेट बक्षिस देना है, पास में न हो तो मकानों को गिरवी रख कर्ज करके भी मौजमजाह भोगनी है परन्तु जब धर्म रक्षा निमित्त पांच रुपये भी खर्चने की बात आती है तब वे कृपण तथा दरिद्री बन जाते हैं। कोई एक संप्रदाय के आचार्य की ये मनोदशा नहीं पर प्रायः सबकी ये दशा है।

भाविक लोग आचार्यों को प्रभु तुल्य मान सम्मान करते हैं पर कितने आचार्य अपने को पामर मान कर गांधी मालवीय जैसे धर्महीनों को उद्धारक समझ कर उसके खादी चर्खा में अपना तथा लोगों का उद्धार देख रहे हैं। कितने जिसकी प्राबल्यता होती है उसमें मिल जाने वाले अर्धदग्ध हैं। कितने कृपण हैं, कितने उदासीन हैं, कितने मौजशौख में डूबे हैं, कितने के पास विपुल संपत्ति सत्ता है, पर उसके सलाहकार धूर्त्त है और कितने धर्माग्रही हैं — साधन हीन हैं।

गांधी तथा कांग्रेस ने अस्पृश्यता निवारण का पाखंड फैलाकर हिंद में रशिया के साम्यवाद उर्फ पिशाचवाद को प्रवेश होने की भूमिका तय्यार कर रक्खी है। ये साम्यवाद के सिद्धान्त में प्रथम ही ईश्वर, धर्म और धर्म गुरुओं को तोप के गोले से उड़ाना है इसलिये सब संप्रदायों के आचार्यों को सत्वर सावध होना आवश्यक है कि स्वयं निद्रा तन्द्रा में न रहे। अबआपके दिन ज्यादा नहीं ये न भूलना, चाहिये। आपके मस्तक ऊपर काल-मृत्यु स्वरूप साम्यवादियों की नंगी तलवार लटक ही रही है। स्मरण में रखना चाहिये कि आपको जिस उच्चतम पद की प्राप्ति हुई है वे धर्म की रक्षार्थ आपकी साधन शक्ति का उपयोग हो तो उसमें आपके, हिन्दुओं के और धर्मके हित है। अभी भी आप धर्म रक्षार्थ कटिबद्ध होवेंगे तो आपकी आज्ञा मान कर लाखों अनुयायी धर्म रक्षार्थ अपना जीवन समर्पण कर आपकी देव समान पूजा करेंगे, इसलिये आचार्य महाराजाओं! चेतो और कर्त्तव्य का पालन करो। जो आचार्य इस रीति से अपना कर्त्तव्य समझ कर धर्म रक्षा के कार्य में स्वयं ही अग्रसर हो उसका उपकार और उसको सहस्रशः धन्यवाद पर जो धर्म रक्षार्थ कटिबद्ध न हो तो उसके अनुयायियों को तो उनको वैसे करने की खास फर्ज पाड़नी चाहिये।

२० यज्ञयाग

यज्ञयाग का महात्म्य अगाध है। इन्द्र को स्वर्गाधिपति का पद एक सौ यज्ञ करने से ही प्राप्त हुआ है। राजा, ब्राह्मण तथा धनिक लोग जब यज्ञयाग करते रहते थे तब हमारा भारतवर्ष में खूब सम्पत्ति थी, लोग सब प्रकार से सुखी निरोगी बलवान् बुद्धिमान् तथा दीर्घायुषी थे। देश में कभी भी दुष्काल, अतिवृष्टि, बीमारी, अकाल मृत्यु नहीं होते थे। भगवान ने भी

"अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥

संपूर्ण प्राणि अन्न से उत्पन्न होता है और अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है और वृष्टि यज्ञ से होता है और वह यज्ञ कर्म से होता है; श्री मुख से ऐसी आज्ञा करके यज्ञ का विधान किया है।

हमारी पराधीनता किंवा कुबुद्धि के कारण आज देश में क्वचित् यज्ञयाग होता है। यदि कोई धर्मात्मा सज्जन करते हैं तो दुष्ट बुद्धि के गांधीपंथी लोग कहने लगते हैं कि देखो ये गरीबों को नहीं देते पर हजारों रुपये के घी अग्नि में वृथा जला देते हैं और ब्राह्मणों के [illegible] देते हैं।

इतना बकवाद करके वे नहीं रुकते पर दुराग्रह कर यज्ञ बंध कराने की भी चेष्टा करते हैं, जैसी उन लोगों ने गोधरा में की थी। इस महापाप के ही कारण अब देवतागण हमारे पर अप्रसन्न है और लोग दुखी, बीमार, दरिद्री, परतन्त्र, दुराचारी, मूर्ख दृष्टिगोचर दिखाई देते हैं। इसी ही कारण से बार २ भूकंप, दुष्काल, अतिवृष्टि आदि उपद्रव आ खड़े होते हैं और लाखो लोग अन्न वस्त्र के अभाव से पीड़ित—बेकार होकर मर रहे है।

इसलिये धर्म प्रेमी हिन्दुओं को अपनी स्थिति के अनुसार बाजपेय, सोमयाग, विष्णुयाग, रुद्रयाग, शतचंडी, गायत्री पुरश्चरण, अष्टोतर शत परायण और ब्रह्मभोजन करा करके देवताओं को संतुष्ट करना चाहिये। धनिक लोगोकों यह होमात्मक तथा जपात्मक यज्ञ करके एक ओर से पुण्य संपादन करना चाहिये और दूसरी ओर से उस २ यज्ञानुष्ठान में जो २ ब्राह्मणों का आचार्य तथा सदस्य पद पर वरण हो उन्हीं से ये प्रतिज्ञा लेवानी चाहिये कि वे भूदेव जहां २ निवास करे किंवा आवागमन करे तहां २ सनातन धर्मका सदैव उपदेश करते रहे और लोगोको अधर्म मार्ग से बचाते रहे।

सन् १९२९ में पं० राजेश्वर शास्त्रीजी, हम और एक सौं काशी के धर्माग्रही वीर कांग्रेस की अधार्मिक प्रवृत्ति का

विरोध करने के लिये लाहौर गये थे । हम लोगो ने काली झंडी दिखा कर प्रमुख का अनादर किया, बहुत विस्तृत तार कांग्रेस के प्रमुख नेताओ को भेजकर धार्मिक बातों में हस्तक्षेप नहीं करने का अल्टीमेटम दिया, कांग्रेस के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरु के साथ कान्फ्ररन्स की और वे लोग जब किसी प्रकार न समझे तब अन्त में विराट सभा का आयोजन करके कांग्रेस की साथ युद्ध घोषणा भी की । परन्तु इतना उद्योग करने पर भी कांग्रेस के नेताओ की कृति में कुछ परिवर्तन नहीं हुवे । और शक्ति—बल के बिना केवल मुख की बात, धमकी किंवा प्रार्थना से कभी शत्रु अधिन भी नहीं होता है ये ही घटना हम लोगोने यहाँ प्रत्यक्ष देखी । उसी समय आश्चर्य की घटना यह हुई कि एक लाख शिखों के समुदाय तथा एक लाख मुसलमानो के झुंड ने कांग्रेस तथा उनके नेताओं को अपने बल से दबाकर अपनी इच्छानुसार कार्य करा लिया वह देखते ही हम लोग मुग्ध हो गये।

मनको जित लिया उसके नाम स्वराज्य, अहिंसा का पालन कर करोड रुपया दे दें उसके नाम स्वराज्य, खादी धारण कर, चर्खा चलाकर, भंगीओं को स्पर्श करे
स्वराज्य और स्कूल, कोर्ट, टाईटल तथा
बहिष्कार कर जेल महेल में जा बैठे उसके

प्रकार की बिलकुल मूर्खता से भरी हुइ लपोडशंख जैसी वाते जब गांधी वकने लगे तब बंगाल के एक समय के सिंह बाबू बिपिनचन्द्र पालसे चूप बैठा न गया। पाल बाबू ने उस मिथ्या हिमायत के सामने अपना तीव्र असंतोष प्रकट किया और स्पष्ट घोषित किया कि हिन्दुस्तान का राज्यतंत्र हिन्दुस्थान की प्रजाने चुने हुवे प्रतिनिधि प्रजा के हित के लिये प्रजा की इच्छानुसार संचालन करे उसका नाम स्वराज्य है और ऐसे राज्यतंत्र की स्कीम-योजना बनाने की भी आपने कांग्रेस को सूचना की। पाल बाबू की अमूल्य सूचनानुसार मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस की ओर से एक समिति स्कीम तैयार करने के लिये नियुक्त की गई।

उस नेहरू कमिटी ने भिन्न २ प्रांतों में दौरा करके राज-नीतिज्ञों के अभिप्राय संकलन कर तथा जो राष्ट्र प्रजातंत्र शासन चला रहे थे उसके उद्देश और नियम सोच विचारके लखनौ में बैठ कर एक रिपोर्ट बनाये। उस रिपोर्ट को भी उन कमिटी ने देशमें सर्वत्र भेजकर अनुकूल अभिप्राय प्राप्त कर लिया। अव वे लोंग उस रिपोर्ट को लाहौर कांग्रेस में पास करा कर ब्रिटिश पार्लामेन्ट को भेजने चाहते थे। उस रिपोर्ट-स्कीम हिन्दू जाति तथा धर्मको कई प्रकार नुकसान पहुँचाने वाली थी और शिखो तथा मुसलमानों को लाभदा-

यक थी तो भी मृतप्राय हिन्दू मूक रहे किंतु शिखो तथा मुसलमानों ने तो उसके सामने खुलम खुल्ला बंड पुकारे।

शिखों ने अपनी शिख कोम में और मुसलमानने अपनी मुसलमान कोम में उस नेहरू रिपोर्ट बिरुद्ध प्रचंड आंदोलन कर उसको रद्द कराने के लिये शिखोंने शिखों को और मुसलमानों ने मुसलमानों को कांग्रेस के समय पर सन् १९२९ में सारा पंजाब से लाहौर बुलाये। ग्राम २ से शिख स्त्री पुरुष हाथी घोड़े ऊँटकी सवारी पर बैठ कर, नंगी तलवार लाठी तथा किरपाण की साथ लाहौर आ पहुँचे और लाहौर की गलियों में तथा आम रस्ते पर सरधस के रूप में सत श्री अकाल, नेहरू रिपोर्ट का नाश करो आदि नारे लगाते घुमने लगे। उसके सरघस का विस्तार कमसे कम दो मिल होंगे। उसी प्रकार मुसलमान लोग भी ये ही समय एक लाखकी संख्या में एकत्रित हो, अल्ला हो अकबर तथा नेहरू रिपोर्ट को जमीनदोस्त करो आदि नारा लगाते हुवे शहर में घुमने लगे।

लाहौर शहर में अपने मृत्यु की बनती हुई इस भयानक घटना मोतीलाल नेहरू तथा गांधी के कानों में किसी ने सुनादी और साथ २ यह भी साफ २ सुना दिया कि यदि उसी रात्रि में तुम शिखों और मुसलमानों को नेहरू रिपोर्ट

रद्द करके संतुष्ट नहीं करोगे तो कल प्रातःकाल में कांग्रेस, कांग्रेसका पेन्डाल, तुम्हारे रहने के तंबू वगैरह कुछ भी बचेंगे नहीं अर्थात् सब भस्मीभूत हो जायगा; इस लिये यदि तुमको अपनी तथा कांग्रेस की रक्षा करनी हो तो अभी ने अभी उनके नेताओं की पास पहुँचो।

आपत्ति अपने आप पर आयी हुई देख गांधी तथा नेहरू की सुध बुध भूल गई। दोनों तत्क्षण शिख और मुसलमान के नेताओं के पास जा पहुँचे। मधुर शब्दों से दोनों महाशय उनकी खुशामत करने लगे और स्पष्ट शब्दों में प्रतिज्ञा कर आये कि आपके संतोष के लिये हम नेहरू रिपोर्ट रद्द करते हैं। इस प्रकार की कबुलात से उभय कोम को शांत कर दूसरे दिन कांग्रेस की कारवाही प्रारम्भ होने के आगे उन्होंने नेहरू रिपोर्ट रद्द होने का भी जनता को कह सुनाया। "भय विना कभी प्रीति होती नहीं" ये बुद्धिमानों का कथन इस स्थान पर बराबर सिद्ध हुआ। सनातनी लोग भी यदि सनातन धर्म की रक्षा हृदय से चाहते हैं तो दूसरे सब उपायों में इस अत्यन्त असरकारक उपाय का अवलंबन करना चाहिये। एक किंवा पांच सात धनिक सज्जनों को एकत्र हो एकही समय पर दिल्ही जैसे स्थान में कांग्रेस तथा असेम्बली की कारवाही जब चलती हो तब विष्णुयाग, महारुद्रयाग, शतचंडी, गायत्री

पुरश्चरण, अष्टोतर शत पारायण तथा सनातन धर्मका विराट महाधिवेशन का आयोजन कर, उसमें जो हमारे भूदेव तथा सनातन धर्माग्रही जनता उपस्थित हो उन सभी को साथ लेकर असेम्वली तथा कांग्रेस को, लाहौर के मुसलमान तथा शिखों की सदृश विवश—परवश कर उनके पास वे कभी भी धर्म-नाश का कार्य नहीं करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा लेवानी चाहिये।

२१ सनातन धर्म सेवक मंडल

एक समय इस संसार में सनातन धर्म के सब कोई थे और सब कुछ थे। पृथ्वी पर सर्वत्र उनका शासन था। उनकी आज्ञा का किसी से भी उल्लंघन नहीं हो सकता था। सब कोई सनातन धर्म पालनार्थ ही जीवित रहते थे। सनातन धर्म निमित्त यदि एक को वलिदान देने की आवश्यकता होती थी तो हजारों दे देते थे। ब्राह्मण उस जगदुध्धारक सनातन धर्म का उपदेश किंवा प्रचारार्थ जीवित थे। क्षत्रिय उसकी रक्षार्थ जीवित थे। वैश्य उसके पोषणार्थ जीवित थे और शूद्र उनकी आज्ञा उठाने के लिये जीवित थे। देश में जितने मंदिर, पाठशाला, तीर्थ, अन्नक्षेत्र, धर्मशाला तथा अखाड़े थे वे सब उसके जीवित जागृत अंगरक्षक योद्धा थे।

ष्टमी, रामनवमी, शिवरात्री, होली, दशहरा

सनातनी विना निमंत्रण एकत्र हो व्रत उपवास स्नान दर्शन-दान पुण्य कर निर्दोष आनंद का उपभोग की साथ संगठन साधते थे। अव ये सव लोग, स्थान और पर्व जीवित हैं, परंतु, सनातन धर्म के लिये कोई उपयोगी नहीं होते। जैसे पिता को एक सौ पुत्र हों, पर, वे सव पिता की आज्ञा न मानते हों, सेवा न करते हों, पिता को शत्रु मान अपमानित कर कष्ट संताप देते हों, स्वयं समर्थ होने पर भी पिता को दु:खमुक्त न करते हों तो वे सौ पुत्र जीवित रहते हुए भी मृतक के ही समान है। उसी तरह, अव जव कि सनातन धर्म के ऊपर नास्तिक सुधारक तथा विधर्मी विदेशी लोग असामुषी प्रहार तथा अत्याचार गुजारते हैं तव भी सनातनी लोग, देव के पुजारी किंवा पर्व को मानने वाले सहायता किंवा रक्षण नहीं करते हैं इससे उन सवका जीवित रहना किस काम का है? इसलिये सनातन धर्म को जीवन समर्पित करके अहर्निश सनातन धर्म की सेवा करते रहें ऐसे सनातनियों के एक सेवक-मंडल की नितांत आवश्यकता है।

जिनके अंत:करण में संसार पर वैराग्य है, जिनको जीवन पर्यंत ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर स्वामीनारायण की भक्ति तथा उसके उपदेश वाक्य का प्रचार करने की इच्छा है ऐसे साधु सैकड़ों की संख्या में गढडा, वडताल अमदावाद, मूली

आदि स्वामी नारायण के धाम समान मंदिरो में दीक्षा लेकर आज रहते हैं। वे लोग शुरू में प्रभु-सेवा करने के साथ, कथा वार्ता श्रवण करते हैं। बाद, अपने संप्रदाय के ग्रंथों का अध्ययन कर, स्वामीनारायण के सिध्धांत की जानकारी प्राप्त करते हैं; पश्चात् वे अपने मत के प्रचारार्थ भेजने में आता है। स्व० गोपाल कृष्ण गोखले ने भी अपने मंतव्यानुसार देश की सेवा करने के लिये पूना तथा बंबई में सर्वेन्टस आफ इण्डिया सोसायटी किंवा 'हिंद-सेवक समाज' नामक संस्था स्थापन की है। उस संस्था में जो दाखिल होना चाहते हैं उन्हे जीवन के अंत तक देश सेवा के अतिरिक्त अपने निजी स्वार्थ का कोई कार्य नहीं करने की प्रतिज्ञा लेनी पड़ती है। संस्था में प्रविष्ट होने के बाद सोसायटी के सभ्यकों पांच वर्ष पर्यंत विशिष्ट ग्रंथों का अध्ययन कर पारंगत बनना पड़ता है पश्चात् देश सेवा की प्रवृत्ति में कर्तव्यारूढ़ होना होता है। चूंकि, गोखले के इस उच्च ध्येय को नष्ट कर अभी के सोसायटी के सभ्य प्रायः समाज सुधार की धर्म विध्वंसक हलचल चलाकर सेवा के बदले देश का सत्यानाश कर रहे हैं पर, संस्था के आद्य स्थापक का ध्येय अत्यन्त विशुद्ध था। इसी प्रकार, रामकृष्ण मिशन में बंगाली सज्जन जीवन पर्यन्त शामिल होकर मिशन का कार्य कर रहे हैं और वैसे ही चैतन्य

महाप्रभु के गौड़ीय-मठ में चैतन्य भक्त जीवन पर्यन्त सम्मिलित हो चैतन्य महाप्रभु के सिद्धांतों के प्रचारार्थ प्रवृत्ति कर रहे हैं।

जिस प्रकार स्वामीनारायण मतके साधु ब्रह्मचारी, गोखले की सर्वेण्टस आफ इण्डिया सोसायटी के सभ्य, रामकृष्ण मिशन के साधु और चैतन्य महाप्रभु के गौडीय मठ के साधु अपनी २ पद्धति से कार्य करते हैं उसी प्रकार हम सनातनियों को भी काशी, मथुरा, प्रयाग, हरिद्वार, बंबई, कलकत्ता, अमदावाद, भावनगर अथवा राजकोट आदि अनेक स्थानों में से एक स्थान पसंद कर उधर "सनातन धर्म सेवा मंडल" की स्थापना करनी चाहिये। इस सनातन धर्म सेवक मंडलका ध्येय सनातनधर्म, हिन्दू संस्कृति तथा वर्णाश्रम धर्मकी वेदशास्त्र पुराणों की आज्ञानुसार सेवा-हितरक्षा हो ऐसा निश्चित् करना चाहिये। जो ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य के अंतःकरण में सनातन धर्मका तीव्र अभिमान हो, जो अपने मन इन्द्रियों पर कब्जा रख सकता हो, जो सरल सात्विक तथा मिताहारी जीवन यापन कर थोड़े खर्च में रह सकता हो और जो किसी प्रकार का स्वार्थ की आशा रखे बिना जीवन पर्यंत सनातन धर्मकी सेवा करने को उत्सुक हो उसीका इस सेवक मंडल में प्रवेश हो सकेगा। इस उद्देश्य को मान्य रखकर जो द्विज

जीवन पर्यंत सनातन धर्मकी सेवा करने की प्रतिज्ञा लें—ऐसे कम से कम ३०० सेवकों की सनातन धर्म सेवक मंडल में भरती करनी चाहिये।

सनातन धर्म सेवक मंडल में प्रविष्ट होने वाले सनातनी सभ्यकी वय १८ वर्षकी होनी चाहिये और उसको लघुकौमुदी तथा पंच काव्य तक का संस्कृत ज्ञान और हिंदी गुजराती मराठी बंगाली जो उनकी मातृभाषा हो उसका सात दर्जा तक का ज्ञान होना चाहिये। मंडल में प्रविष्ट होने के बाद वे सनातनी सदस्य को संस्कृत तथा हिंदी भाषा का पूरा अध्ययन करके आवश्यक अंग्रेजी भाषा भी जान लेनी होगी और गीता, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत पुराण, विष्णु पुराण पद्मपुराण तथा स्कंद पुराण आदि पुराणो, मनु याज्ञवल्क्य पाराशर आदि स्मृतियों, पातंजलयोग पूर्वमीमांसा उत्तर मीमांसा आदि दर्शन शास्त्रों, कठ केन छांदोग्य प्रश्न मांडुक्य बृहदारण्यक आदि उपनिषदों तथा शुक्र बृहस्पति विदुर चाणक्य आदि नीति शास्त्रों का भी अभ्यास और सनातन धर्म विषयक लेख लिखने तथा व्याख्यान करने की पद्धति पांच वर्ष तक परिश्रम लेकर अवगत करनी ही होगी और तत्पश्चात् सनातन धर्म तथा हिन्दू संस्कृति के हित संरक्षणार्थ जाहिर में कूद पड़ना होगा।

आवश्यक ज्ञान अनुभव संपादन करने के बाद इस सनातन धर्म सेवक मंडल के सभ्यों को देश में सर्वत्र भ्रमण करना होगा और व्याख्यान द्वारा लोगों को सनातन धर्म के सर्वोत्कृष्ट सिद्धांत समझाकर पाखंडवाद निर्मूल करने के लिये प्राणार्पण करने को चेष्टा करनी होगी। असेम्बली, लोकल बोर्ड तथा म्युनिसिपालिटी के चुनाव में उम्मेदवार बनकर चुनवाने का उद्योग करना होगा और दैवयोग से उसमें यदि सफलता प्राप्त हुई तो उस २ संस्थाओं में धर्म रक्षा तथा गोरक्षा का प्रस्ताव उपस्थित कर, धर्मद्रोही द्वारा पहले के पास किए हुए सभी धर्म विरोधी कानूनों को रद्द कराने के लिये धर्मध्वंसियों का प्रचंड सामना कर सरकार को सनात-नियों का दैवत बताकर कान खोलना होगा।

सनातन धर्म सेवक मंडल इस प्रकार धर्म रक्षा की प्रवृति जोर शोर से चलाकर अपने मंडल की शाखा भिन्न भिन्न स्थान पर स्थापित कर कार्य करने लगेंगे तो काशी, अयोध्या, कनखल तथा ऋषीकेश आदि स्थानों में साधु संन्यासियों के जो कई अखाड़े तथा मठ हैं वे भी सावधान होंगे और सभी सनातनियों को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान होगा तो अवश्यमेव सनातन धर्म का विजय होगा। इस प्रकार हमारे पुरुषार्थ तथा संयुक्त बल को देखकर धर्मद्रोही सुधारकों की धर्म

विरुद्ध कार्य करने की हिंमत कभी चलेगी नहीं। उनके दूषित मनोभाव तथा धर्मध्वंसी अधम प्रवृति स्वयमेव विलुप्त हो जायगी। इसलिये, धर्माग्रही हिंदुओं को तथा सनातनी कार्य-कर्त्ताओं को ऐसा मंडल स्थापन कराने का कार्य तुरंत हाथ में लेना चाहिये। जलगाँव के अधिवेशन में ऐसा ही प्रयत्न किया गया था। हमने प्रस्ताव पेश करके एक सौ धर्म-सेवकों के लिये अपील की थी। पर, मात्र दश ही धर्मात्माओं ने तत्प-रता बतायी थी पर अब उस उद्योग को फिर उज्जीवित करने की आवश्यकता है।

२२ सनातनी हिन्दू की व्याख्या

हिन्दुओं में हिन्दूजाति, हिन्दू संस्कृति और हिन्दुस्थान का अभिमान तभी रह सकता है जब वे सनातनधर्म को ही अपना सर्वस्व मानें। यदि उनके हृदय में धर्म के प्रति आदर, श्रद्धा या विश्वास न हो तो यह परिणाम सुनिश्चित है कि, जाति, धर्म, संस्कृति और देश के प्रति भी उनमें क्षणमात्र को अभिमान रह सकता नहीं। कारण, एकमात्र सनातनधर्म का ही विधान ऐसे सुनिश्चित और स्थायी रूप का है जो जाति, संस्कृति और देश की महत्ता को समझाने और उसकी हित रक्षा के लिये दत्तचित्त रहने का आदेश करता है।

इस प्रकार का अपना उज्ज्वल सनातन धर्म वेदों के आधार पर अवलम्बित है। वेद और तदनुकूल शास्त्रों में लोक और परलोक को सफल बनाने के लिये अत्यन्त अगाध तत्त्व भरे हैं। यह वेद शास्त्र हिन्दुओं को वर्ण और आश्रम की मर्यादा, आचार, जन्मना जाति, सती-धर्म, माता पिता और गुरुजन के प्रति पूज्य भाव, मन्दिर-मर्यादा, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, गोरक्षा, सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, तितिक्षा, ब्रह्मचर्य, खान-पान विवेक, वैवाहिक व्यवस्था, सन्ध्या-बन्दनादि नित्य कृत्य का विधान कर संसार में आर्यावर्त का एकान्त विशिष्ट गौरव स्थापित करते हैं। यदि हिंदुओं में से वेदशास्त्र और वर्णाश्रम विषयक मर्यादा निकाल दी जाय तो हिंदू संस्कृति और हिन्दुस्थान का स्थान इस पृथ्वी-तल में कहीं रह जा सकता नहीं।

यह बात केवल हिंदुओं के लिये ही सत्य हो, ऐसा नहीं। अपितु युरोप तथा तुर्किस्तान के ईसाई और मुसलमान भी ऐसे ही सिद्धान्त को मान कर चलते हैं। जो ईसाई बायबिल और जीसस क्राइस्ट का अभिमान न रखे अथवा जो मुसलमान कुरान तथा पैगम्बर का अभिमान न रखे उसकी जिन्दगी का, जाति का, संस्कृति का उसके राष्ट्र में कोई महत्व नहीं। किन्तु, घोर आश्चर्य और खेद का विषय है कि, आज इस देश में जो वर्ग अपने को सुधारक, प्रगतिशील, शिक्षित और राष्ट्र-

हिताचिन्तक विज्ञापित करता है वह, वेद-शास्त्रों की मान्यता और वर्णाश्रम-मर्यादा को उन्नति का बाधक ठहरा कर, इनके नाश के लिये ही दिन-रात अथक चेष्टा करता रहता है। अस्तु मेरे मत में जो, आज अपना देश पराधीन होकर नाना प्रकार के क्लेशों में फंसता जा रहा है, उसका एक मात्र कारण ऐसे विभ्रमित नेता जन के विचार और उनकी करतूत ही है। इन नेताओं के अन्तःकरण में उपर्युक्त प्रमाद इस बुरी तरह घर कर गया है कि, एक वार ब्रह्मा अथवा सरस्वती भी कदाचित उन्हे सन्मार्ग पर ला सकें।

वर्तमान में देखने के लिये कांग्रेस के भीतर हिन्दू नामधारी नेताओं का ही वर्चस्व है। वे हिन्दुओं से ही तो रुपया लेते हैं और उन्हीं का वोट लेकर व्यवस्थापक सभाओं में जाते हैं। परन्तु हिन्दू कहलाते उन्हें शर्म आती है। फलतः वे धारा सभा में गौवधबन्दी जैसा कानून तो पेश या पास करते नहीं, उल्टे, हिन्दू धर्म और संस्कृति को नाश करने वाले कानून अपने बहुमत से एक के बाद एक बनाते जाते हैं। मुसलमान लोग उनका कदम २ पर आतंकपूर्ण विरोध में डटे हुए हैं—इसलिये, कांग्रेसवादी जन उनकी खुशामद करते हैं, उन्हें मनमाने हक सौंप रहे हैं और इस्लाम धर्म तथा संस्कृति की रक्षा के लिये अभय वचन प्रदान करते हैं। इधर

हिन्दूओ उन कांग्रेसवादियों की मदद करते हैं, मान देते हैं, प्रार्थना करते हैं, कि, हमारे धार्मिक मामलों में दस्तन्दाजी न करो—उन्हें ये कांग्रेसी निष्ठुरता पूर्वक ठोकरें लगाते हैं।

जिस प्रकार हिन्दूधर्म, वर्णाश्रम मर्यादा और हिन्दू हकों के विरुद्ध कांग्रेसवादी भीषण घातक कार्य कर रहे हैं, उसी प्रकार, उसी गुट के लोग हिन्दू-महासभा नाम की एक संस्था अलग भी बनाकर खुले रूप में वेद शास्त्र और वर्णाश्रम मर्यादा का उच्छेद कर रहे हैं। हिन्दू महासभा वाले भी असवर्ण विवाह, सारडा कानून, अस्पृश्यता निवारण, वर्ण संकरी खान पान आदि का प्रचार करते हैं और बौद्ध आदि अन्य जाति के लोगों को भी "हिन्दू" नाम से घोषित करना चाहते हैं जो 'हिन्दुस्थान में रहते हैं'। अधिकांश हिन्दू-प्रजा धार्मिक और राजनीतिक रहस्यों से अपरिचित रहने के कारण, कांग्रेस और हिन्दूसभा के कार्यकर्ताओं का आदर करती, उनके अखबार पढ़ती और सभाओं में भाग लेकर धोखा खा रही है, हिन्दू नरेश, साधु-संन्यासी, महन्त मठाधीश आदि अपने २ प्रपंच में पड़े हुए हैं। इससे, इधर हिन्दूप्रजा की दशा यह हो रही है कि, वह अपनी रक्षा के लिये इधर-उधर जिस तिस के पास दौड़ रही है और इसमें पाखण्डियों की बन आ रही है।

ऐसी विषम अवस्था में हिन्दुओं का आवश्यक कर्तव्य है

कि, वे कांग्रेसी, सुधारवादी, हिन्दू महासभा और आर्य समा--जियों से पूर्ण सावधान रहें--उनके फन्दों में न फँसे एवं उन्हें किसी प्रकार की सहायता या सहयोग न दें। यह लोग वेद-शास्त्र और वर्णाश्रम-मर्यादा को न मानने वाले होने के कारण, 'हिंदू' तक भी माने नहीं जा सकते। इच्छापूर्वक अथवा मूर्खतावश उनके द्वारा हिन्दू धर्म का द्रोह और हिन्दुत्व का घात किया जाता है उन्हें कोई अधिकार नहीं है कि, वे हिंदुओं के नाम पर कुछ बोल सकें। किसी प्रकार के मोह अथवा संकोच के वशीभूत होकर ऐसे लोगों को कदापि अपना वोट अथवा आर्थिक-सहायता आदि नहीं देनी चाहिये।

इन कांग्रेसवादी या स्वार्थी अर्धदग्ध हिन्दू महासभा वादियों के सिवा कितने धूर्त ऐसे भी हैं जो 'सनातनी हिन्दू का नाम धारण कर, सनातनी संस्थाएं बनाकर, हिन्दूधर्म का गला काटनेवाला कार्य करते हैं। पंजाब की सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा और मालवीयजी की सनातनधर्म महासभा के कार्यकलाप इसी प्रकार वैदिक धर्म-मर्यादा पर कुठाराघात करनेवाले देखे जाते हैं। इसलिये, यह अत्यन्त आवश्यक है है कि इस बात की व्याख्या स्पष्ट कर ली जाय कि, 'सनातनी हिन्दू' किसे कहना और मानना। ऐसी निश्चित परिभाषा वाले 'सनातनी–हिन्दू' को ही आप अपना वोट, द्रव्य और

सहयोग प्रदान करें। उस व्याख्या के सम्बन्ध में शास्त्रानुकूल अपना मत निम्नांकित प्रकार उपस्थित करता हूं—

१—वेदशास्त्र पुराणोक्त चिरन्तन सदाचार परिगृहीत वर्णाश्रम धर्म-मर्यादा को जो माने।

२—हिन्दू मातापिता से जन्मा हो और हिन्दूधर्म के अविरुद्ध जीवन यापन करता हो।

३—हिन्दुस्थान को ही जो आर्यों की जन्मभूमि, कर्मभूमि और पुण्यभूमि मानता हो।

४—वेदशास्त्रों को जो त्रिकालाबाधित और अपौरुषेय मानकर अछूतों के स्पर्श, कूप, स्कूल, मन्दिर प्रवेश आदि का विरोधी हो।

५—हिन्दूओं में जन्मना जाति, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, तीर्थ, ईश्वर अवतार, सतीधर्म, शुभाशुभ कर्म के फल से स्वर्ग नरक और उच्च-नीच योनियों की प्राप्ति तथा पुनर्जन्म को मानता हो।

६—वेदों के पढ़ने तथा प्रणवमंत्र के उच्चारण का अधिकार द्विजवर्ण को ही है। शूद्र या अन्त्यज को नहीं इसे जो मानता हो।

७—माता, पिता, गुरु, सन्त, ब्राह्मण और गौ को जो पूज्य माने।

८--जो सिर पर चोटी और द्विज हो तो यज्ञोपवीत भी धारण करे, नित्यकर्म उपासनादि करे, संस्कृत भाषा, प्राचीन रीति-रिवाज और जातीय पोषाक का आदर करे।

९--जो शास्त्रीय वैवाहिक विधि, स्पृश्यास्पृश्य-मर्यादा, भक्ष्याभक्ष्य विचार को मानकर, असवर्ण-विवाह, तलाक, सगोत्र विवाह, विधवाविवाह, यवन और म्लेच्छों की शुद्धि जैसे अशास्त्रीय कार्यों का विरोध करें।

उपर्युक्त नौ व्याख्याओं को जो व्यक्ति मानकर उनका व्यवहार करे उसीको सनातनी हिन्दू मानना चाहिये।

२३ हिन्दू हकों की १५ शर्तें

हिंदू-जाति ने उदारता, प्रमाद और सहनशीलता दिखाकर आज पर्यन्त बहुत हानियां उठायी हैं। इनके मौनावलम्बन से निरंकुश होकर मनचलों ने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के नाते अब तक उन्हे खूब मनमानी तौर पर लूटा। परन्तु अब जब कि, हिन्दू-जाति के प्राण-धन तुल्य धार्मिक-हकों पर भी लूटके से हमले होने लग गये हैं-प्रत्येक हिन्दू-संतान के लिये आवश्यक हो गये हैं कि, वह प्राणपण से स्वत्वों के रक्षार्थ कटिबद्ध हो जाय। इसी देश में पारसी आदि जैसी दूसरी भी अनेक छोटी २ जातियां रहती हैं, पर, उन सभी ने संगठन एवं जाग्रति से

अपने धार्मिक स्वत्वों को अवाधित बना रखा है। मुसलमानों ने तो मि० जिन्ना और आगाखां के नेतृत्व में दबंग संगठन करके अपने राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक हकों के नाते १४ स्पष्ट शर्तें आज से दो वर्ष पूर्व, नवीन शासनविधान बनने से पहले ही, विलायत के प्रधान मंत्री मि० मेकडोनल्ड के पास से स्वीकृत करा ली है। इसके वाद, अछूतों के हक के नाते 'पूना पैक्ट' के नाम से अलग एक शर्तबंदी का पट्टा हो गया है। मसल यह हो रही है कि, राजा को पता ही नहीं, मुसहरों ने मिल कर वन बांट लिया। इस देश के मूल-निवासी और प्रचण्ड बहुसंख्या में रहनेवाली हिंदू प्रजा का कहीं कोई ज़िक्र तक भी नदारद। यही नहीं, सभी मार्गों से उनके स्वत्वों का दलन भी हो रहा है, वे अपने धर्म तक के नाते पीसे जाते हैं। ऐसे समय, यह तात्कालिक कर्त्तव्य है कि, अखिल भारत के हिंदुओं की ओर से उनके धार्मिक-हकों के शर्तनामे स्पष्टरीत्या उपस्थित कर दिये जायँ और उन शर्तनामों की पाबंदी के लिये समस्त शक्तियों को बाध्य किया जाय। इस कार्य की पूर्ति के लिये हिंदू-भारत तन-मन-धन से अपनी सम्पूर्ण शक्ति भिड़ा कर डट जाय। जब तक यह नहीं कर सकते तब तक हिंदुओं की धार्मिक, राजनीतिक

सामाजिक या आर्थिक किसी भी प्रकार की हितरक्षा हो सकती नहीं। कार्य की यही प्रणाली है और यूरोप आदि के राष्ट्र भी इसी शैली का अनुवर्तन करते हैं। एतदर्थ, हम हिंदुओं के धार्मिक-हकों के १५ शर्तनामें उपस्थित करते हैं। हिंदू भारत उस पर विचार कर समझ सकेगा कि, उन्हीं की पूर्ति में हमारे समाज का सम्मानपूर्ण जीवन रह सकना सम्भव हो सकता है और उन समस्त संकटों का अन्त हो सकता है जो आज विविध मार्गों से हमें त्रस्त कर रहे हैं। अतएव, इन १५ शर्तों की पूर्ति ही हमारे समस्त आंदोलन और लड़ाई का बिना बनायी जानी चाहिये। इन्हें ग्राम ग्राम और शहर २ में प्रत्येक सभाओं के भीतर बार बार दुहराते रह कर ब्रिटिश-सरकार, कांग्रेस, हिंदू महासभा, मुसलमान, क्रिस्तान, यूरोपियनों आदि पर उनकी स्वीकृति के लिये दबाव डालना चाहिये। वे १५ महत्वपूर्ण शर्तें निम्नांकित हैं:—

१—वेदशास्त्रपुराणोक्त पारम्परीण वर्णाश्रम-मर्यादा अक्षुण्ण रहनी चाहिये।

२—जाति विभाग का नियम वर्णाश्रमानुसार ही है। इसलिये जातियां सुरक्षित रहनी चाहिये।

३—स्पृश्यास्पृश्य मर्यादा अर्थात् आचार-धर्म पर ही हिन्दू-

धर्म की नींव है। अतएव, इसकी पूर्ण सुरक्षा रहनी चाहिये।

४-देवलायों का निर्माण वेद शास्त्र और आगमों की आज्ञानुसार है जो अन्त्यजों के प्रवेश का सख्त निषेध करते हैं। अतएव, अन्त्यजों का मन्दिर प्रवेश कदापि न होना चाहिये।

५--विवाह हिन्दुओं में परम पवित्र धार्मिक-विधि माना गया है। वह इह लोक और परलोक को सफल एवं सार्थक करने तथा त्रिविध ऋणों से मुक्त होने को किया जाता है। इसमें सारडाएक्ट, तलाक, वर्णान्तर लग्न, विधवा विवाह जैसे अधार्मिक कानूनों का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये और वैवाहिक शास्त्रीय व्यवस्था सर्वथा अक्षुण्ण रहनी चाहिये।

६—गौओं में हिन्दू तैंतीस करोड़ देवताओं का वास मानकर उन्हें पूजते हैं। अतएव, हिंदुस्थान में एक भी गाय का वध न होना चाहिये।

७--हिंदू तीर्थों के पास हिंदुओं का मन दुखाने वाला अथवा धर्म क्रिया में बाधकरूप का कोई राग न छिड़ना चाहिये। गंगा, यमुना, नर्मदा आदि जैसी पावन सरिताओं में गटर का पानी न गिराना चाहिये और न उनमें से नहरें निकाली जानी चाहिये।

८--मंदिर में, मंदिर के सामने और आम रास्ते पर बाजा बजाना हिंदुओं की आवश्यक धार्मिक विधि है। इसमें रोंकटोंक नहीं होनी चाहिये।

९--संस्कृत हिंदुओं की आद्य भाषा है। सम्पूर्ण शास्त्र इसी भाषा में होने से, यह भाषा शास्त्र तुल्य ही पूज्य है। अतः प्रत्येक द्विज को इसकी शिक्षा देने का प्रबंध होना चाहिये।

१०-देवनागरी हिंदी भाषा हिंदुओं की राष्ट्र भाषा है। इसलिये कोर्ट आदि सभी शासकीय कार्यों में उसका प्रमुख स्थान होना चाहिये।

११--धार्मिक मेलों और पर्वकाल के समय भीड़ में हिंदू जनता के बीच विधर्मियों और धर्म विरोधियों का प्रचार नहीं होने देना चाहिये। सरकार तथा म्युनिस्पलिटियां उन्हें स्थान किराये तक पर भी न देने के लिये पावंद होनी चाहिये

१२--आज पर्यंत व्यवस्थापक सभाओं में जो भी हिंदू धर्म या संस्कृति विरुद्ध कानून पास हुए हैं उन सबको रद्द करने के साथ ही भविष्य में भी वैसा कोई अनुचित प्रयास हो ने नपाये इसका कड़ा प्रतिबंध रखना चाहिये।

१३--ब्राह्मणों की हिंदू धर्म में पूज्यता मानी गयी है। अध्यापक पदों से उद्देश्यतः उन्हे हटाकर अन्त्यजादि जिस किसी को रखा जाता है वह अत्यंत निंदनीय है। अतएव, ब्राह्मणों का वर्चस्व घटे ऐसी पक्षपातवाळी नीति एकदम त्याग देनी चाहिये।

१४—व्यवस्थापक सभा, लोकलबोर्ड, म्युनिस्पलबोर्ड, आदि संस्थाओं एवं सभी पदों पर संख्या के परिमाण में धार्मिक हिंदुओं को प्रतिनिधित्व मिलना चाहिये।

१५—प्राचीन परम्परा, मर्यादा एवं रीति रस्मों में कोई बाधा न दी जानी चाहिये। कारण, इन सबका विधान धर्म-शास्त्रानुकूल है।

२३ महत्वपूर्ण ११ प्रतिज्ञाएँ

सनातन धर्म और आर्य-संस्कृति में निष्ठा रखने वाले हिंदुओं को एवं स्वधर्म का पालन करने वाले प्राणीमात्र को परमात्मा श्रीहरि की कृपा से इस वर्ष सर्व प्रकारेण सफल एवं सुखदायक हो। हिंदु मात्र अपने प्रतापी पूर्वजों के निर्दिष्ट धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को सिद्ध करने का अनुपम आदर्श इस नूतन वर्षारम्भ पर दृष्टि के समक्ष रख कर जीवन का साफल्य साधन करें। इस शुभ कामना के साथ, निवेदन है कि, आप महानुभाव हिंदू-जाति और धर्म-संवंध की समस्याओं पर गम्भीरतया विचार करे। सर्व विदित है कि, हमारे सनातन धर्म का सिद्धांत सर्वोत्कृष्ट एवं प्राणीमात्र को अभयदान देकर उत्कर्ष चाहने वाला है। व्यवहार और परमार्थ साधने वाला है। लौकिक और पारलौकिक उन्नति करने वाला है। किसी

किसी पर भी बालात्कार करने वाला अथवा किसी के लिये भी बाधक होने वाला नहीं है। तथापि, आजकल सुधारक नामधारी नास्तिक और विधर्मी लोग उस पर मनमानी रीति से अमानुषी प्रहार कर, उसे नष्टभ्रष्ट करने के लिये, कौंसिल और असेम्बली में कानून पास कर रहे हैं। हिंदु प्रजा किसी भी प्रकार अपने धर्म का पालन या आचरण न कर सके और आचरण करने का यत्न करे या आग्रह रखे तो यह गुनहगार मानी जाकर कठोर दण्ड भोगे-ऐसा उग्र वातावरण आसुरीवृत्ति के धर्म विध्वंसकों ने उत्पन्न किया है। नहीं मालुम, किस कारण से पृथ्वी पर के दूसरे सभी धर्मों को तो दुनियां के लोगों के लिये हितप्रद और सत्य के पाये पर रचे हुए, जैसा मानकर उनके संरक्षण के हेतु बारम्बार प्रतिज्ञा की जाती है। किंतु एक मात्र सनातन धर्म को ही अनिष्टकारक, पापमूलक और कपोल-कल्पित करार दिया जाता है एवं उसकी जड़मूल से उखाड़ डालने के लिये नामधारी सुधारक, गांधीपंथी, कांग्रेसवादी, समाजवादी आदि अथक चेष्टाएं कर रहे हैं।

ऐसी विषम-स्थिति उत्पन्न होने का कारण और दोपी अपने समाज को ही पाते हैं। कारण, शत्रु और मि स्वरूप पहचानने में हम ध्यान से काम लेते ही नहीं।

ने पात्र अपात्र का विवेक भूलकर, कायरता, कर्तव्य-मूढ़ता तथा प्रमाद अवस्था के अधीन हो, अपने धर्म और संस्कृति की प्रकट किंवा गुप्त-रीति से हत्या करने वाले गांधीपंथियों की ही मान, मत तथा द्रव्य की सहायताएं पहुंचायी। यही वह सबसे मूल कारण है जिससे यदि सच पूछा जाय तो, प्रस्तुत रूप में यह भीषण भयावह दशा आ पड़ी। यदि अब भी आखें न खुलीं और इसी प्रकार वेद-शास्त्रोक्त मर्यादा किंवा वर्णाश्रम धर्म का उच्छेद होता चला तो, हिंदू जाति के साथ मोक्षमार्ग भी जगत के पृष्ठ पर से विलुप्त हो जायगा। ऐसा होने पर, पृथ्वी में सर्वत्र अन्धेर तथा अराजकता फैल-कर, प्रलय ही समीप होगा। इसलिये, सम्मान-सहित जीने की तथा सुखाभ्युदय की आकांक्षा रखने वाले हिंदुओं को नव वर्ष के इस आरंभिक मांगलिक समय पर निम्नलिखित प्रति-ज्ञाएं ग्रहण कर उनका परिपालन करना चाहिये।

१—जगन्नियंता परमेश्वर ने लोगों के उद्धार के लिये वेदशास्त्र प्रस्तुत किये हैं। उन वेदशास्त्र, पुराण तथा ईश्वर-स्वरूप ऋषिमुनियों की आज्ञाओं का सदा-सर्वदा अनुसरण करूँगा।

२—वर्णाश्रम-मर्यादा ईश्वर प्रोक्त है। स्वयं परमात्मा को भी जगत रक्षार्थ उसका पालन करना पड़ता है। इसलिये, उसका दत्तचित्त से पालन-पोषण-रक्षण करूँगा।

३—'आचार' यह परम धर्म है। इसलिये, भंगी, चमार, महार, डोम, शव, रजस्वला, सूतकी इत्यादि की अस्पृश्यता का बराबर परिपालन करूँगा। अर्थात्, उनका स्पर्श हो गया तो यथाशास्त्र—निर्देश सचैल स्नानादि करूँगा।

४—हिंदू के नाते हमेशा शिर पर चोटी रखूँगा। माता, पिता, गुरुजन की आज्ञानुसार वर्तन करूँगा। नित्यकर्म, मूर्तिपूजा, श्राद्ध तथा गौओं की सेवा करूँगा और देशी शक्कर, देशी दवा तथा देशी वस्तुओं का उपयोग करूँगा।

५—आहार शुद्धि रखने से ही अन्तःकरण की शुद्धि होती है और शुद्ध अंतःकरण में ही भगवान का दर्शन किंवा आत्मसाक्षात्कार होता है। इसलिये, खानपान की शुद्धि रखने की परमावश्यकता है। इन बातों को दृष्टि के सम्मुख रखकर कभी भी होटल में किंवा वर्णसंकरी प्रीतिभोजों में खानपान नहीं करूँगा।

६—वर्णान्तर लग्न से, पतिपत्नी सम्बंध विच्छेद (तलाक) से, विधवा विवाह से तथा सगोत्र विवाह से वर्णसंकर—पतित संतान पैदा होती है। वर्णसंकर प्रजा से नरक की प्राप्ति होती है। इसलिये, वैसी समस्त प्रवृत्तियों से दूर रहूंगा और वैसे धर्मघाती कानून पास होने पर भी उन्हें कभी न मानूँगा।

वरन, वैसे कानूनों को नष्ट करने का प्रयत्न करूँगा ।

७—मंदिर, धर्मशाला, कुआं, स्कूल तथा भोजनालय आदि स्थानों में अ त्यजों के प्रवेश से राजा तथा प्रजा उभय का नाश होता है। इसलिये, वैसी विनाशक प्रवृत्ति का घोर विरोध कर उसे रोकने की चेष्टा करूंगा।

८—अपने जातीय धर्म को छोड़कर मर्दों को चर्खा चलाना महादोष है। इसी प्रकार, विदेशी ढंग के वेष विन्यास किंवा अधार्मिक मण्डलियों के चिन्ह रूप गांधी-टोपी आदि अपशुकन हैं। इसलिये, अपने तथा स्वदेश के अभ्युदयार्थ सदा भारतीय वेषभूषा, रहन सहन, स्वदेशीय व्यवसाय, स्व-भाषा तथा स्वभावना को ही महत्व देकर पालूंगा।

९—जाति, धर्म तथा देश के हित के लिये संगठन की नितांत आवश्यकता है और वह सनातन धर्म के जगदुद्धारक सिद्धांतों के प्रचार से ही सिद्ध होगा। इसलिये मनसा, वाचा, कर्मणा वेद शास्त्रों के सिद्धांतों का प्रचार करूंगा। जाति-संगठनों को मजबूत बनाने की प्रेरणा करूंगा। स्त्री-जाति पतिव्रत-धर्म में निष्ठावान रहे ऐसा उद्योग करूंगा। देश में उद्योग और कला-कौशल का विकास हो-ऐसा यत्न करूंगा। युवक-वर्ग ब्रह्मचर्य के पालन तथा शारीरिक-व्यायाम से अभिमन्यु जैसे वीर बने ऐसा आन्दोलन करूंगा। हिंदू राजा-महाराजा अपने क्षत्रिय-

धर्म को समझ कर, प्रजा और संस्कृति का रक्षण पोषण करें ऐसा वातावरण उत्पन्न करूँगा। गृहस्थ, साधुसन्त, मठाधीश तथा आचार्यगण भी जाग्रत हो एवं संगठित रूप से धर्म-रक्षार्थ बद्धपरिकर बनें-ऐसा उद्योग करूँगा।

१०—अपना मत (वोट), द्रव्य और किसी प्रकार की सहायता धर्म-विरोधी, गाँधीपंथी, कांग्रेसवादी, समाजवादी प्रभृति नामधारी सुधारक किंवा नास्तिक को कभी न देकर कट्टर सनातनी-कार्य-कर्ताओं को ही दूंगा और ऐसा उद्योग करूंगा जिससे सार्वजनिक संस्थाओं में सनातनियों का ही प्राधान्य हो।

११—शरीर को तथा संसार के समस्त पदार्थों को क्षणभंगुर एवं नाशवन्त और ईश्वर के अंशरुप जीवात्माको अजर, अमर, अविनाशी समझ, आत्मा की सद्गति के लिये, यथाशक्ति निष्काम-कर्म द्वारा परमात्मा श्री हरि की अनन्य भक्ति और तत्त्वज्ञान के सम्पादन का यत्न करूंगा।

आजकल संसार की प्रत्येक जाति, समाज, धर्म तथा राष्ट्र अपने २ उद्धार की योजनाएं तैयार कर उन्हें कार्य रूप में परिणत करने के लिये प्रतिज्ञाएं ले रही है। वैसे समय, सनातनियों के लिये अपने हितरक्षण की उपेक्षा करना आत्मघात ही होगा। इसलिये प्रत्येक सनातनी संस्था, कार्यकर्ता तथा धर्मनिष्ठ स्त्री-पुरुष को ऊपर निर्दिष्ट प्रतिज्ञाएं लेकर एवं दूसरों को भी दिलाकर विवेक और कर्मण्यता का परिचय देना चाहिये।

राजा-रईसों, महन्तमठाधीशों, धनिकों तथा धर्माग्रही सज्जनों से अपील

सनातनधर्म, हिंदू संस्कृति तथा वर्णाश्रम के उच्चतम सिद्धांत और रहस्य में प्राणिमात्र का अभ्युदय तथा मोक्ष कैसा सुन्दर प्रकार से ग्रथित है ये हमने प्रस्तुत योजना में प्रारंभ में निरूपण किया। तत्पश्चात् हिन्दू धर्म किसी की भी मान्यता में बाधा पहुंचाकर दुःख देने वाला नहीं है, तथापि स्वजन और परजन कैसी क्रूरता से उनका घात कर रहे हैं ये परिस्थिति सप्रमाण रखी और उसके बाद उसका उद्धार के सचोट तथा प्रेक्टीकल २३ उपाय बताये; वे सब धर्म प्रेमी सज्जनों ने लक्ष पूर्वक मनन किये होंगे यदि न किया हो तो बांचने का कष्ट उठाइये।

प्रस्तुत योजना जब कार्य में परिणत की जायगी तभी सनातन धर्म, हिंदू संस्कृति वेदशास्त्रोक्त वर्णाश्रम मर्यादा तथा हिंदू जातिका अस्तित्व पृथ्वीपर रह सकेगा। यदि हिंदुओं को ऋषि मुनियों का तथा हिंदुत्व का अभिमान हो, यदि हिंदुओं की रक्तवाहिनी में अपने पूर्वजों का रक्त बहता हो और यदि हिन्दू लोग शुद्ध हिन्दू-संतान होतो दीर्घसूत्री स्वभाव का परित्याग करके शीघ्र ही इस योजनानुसार कार्य का प्रारम्भ करें।

राजा रईस, महंत-मठाधीश तथा धनिक-गृहस्थ इस ...रंत ही सफल बना सकते हैं। हम स्पष्ट रूप से

निवेदन करते हैं कि, आप लोगों ने इच्छापूर्वक किंवा अनिच्छा से अनेक वार नामधारी सुधारक नेताओं को खूब धन देकर पाप हासिल किया। अब एक बार सनातन धर्म हितरक्षार्थ सहायता प्रदान कर पुण्य तो संपादन कीजिये ? हम यह नहीं कहते कि, आपका धन किसी को लुटा दीजिये। हम यह कहते हैं, आपका धनका दुरुपयोग न हो और संपूर्ण सदुपयोग हो—इस लिये उसका प्रबंध आपके हाथ में रखिये; परंतु धर्माग्रही कट्टर बुद्धिमान् अनुभवी और विद्वान कार्यकर्ताओं को बुलाकर उनको कार्य करने के लिये जहाँ छापाखाना, कागज, स्टांप, क्लार्क, चपरासी, मोटरलारी, ड्राइवर, पेट्रोल, उपदेशक और ऋषिकुल तथा विश्वविद्यालय के अध्यापकों को वेतन, असेम्बली चुनाव में सनातनी उम्मेदवार को खड़ा करने के लिये, सम्मेलन-अधिवेशन करने के लिये, डेप्युटेशन घुमाने के लिये तथा आवश्यक अंगरक्षक नैपाली गुरखाओं को रखने के लिये खर्च का प्रबंध कर देना चाहिये! हमारा दृढ़ता की साथ मंतव्य है कि, यदि योग्य धर्मात्मा कार्यकर्ता के हाथ में इन सब कार्यों के संचालन का भार सिपुर्द किया जाय तो दो ही वर्ष के भीतर सनातन धर्म का सूर्य अव जो धर्म संहारक राहुओं से ग्रसित होकर अन्धकार दशा में है वह मुक्त हो पुनः प्रकाशमान बन जाय।

योजना में निरूपण किये गये बड़े २ कार्य द्रव्य साध्य होने से राजा रईस, महंत-मठाधीश, आचार्य किंवा शेठ साहुकार उन्हें पूर्ण कर सकते हैं। परंतु सर्व साधारण धर्म-

हिंदू ग्राम २ में सनातन धर्म सभा, धर्मवीर दल, सनातन धर्म के ग्रंथों का पुस्तकालय, तथा संस्कृत पाठशाला स्थापना करने का, धर्मध्वंसी कांग्रेसवादियों को मत और पैसा न देने का पर सनातनी उम्मेदवारों को मत की सहायता पहुंचाने का, महत्व पूर्ण ११ प्रतिज्ञाएं हिंदुओं से कराने का तथा मनु भगवान की आज्ञानुसार

"एकोऽपि वेदविद् धर्मं ये व्यवस्ये द्विजोत्तमः ।
सविज्ञेय परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः ॥"

अर्थात् एक वेदविद् जो श्रेष्ठ व्यवस्था दे उनको स्वीकार परम धर्म मानना चाहिये किंतु दस हजार मूर्ख लोग ने बहुमति से दि हुई व्यवस्था को न माननी चाहिये तद्वत् धर्म विरोधी सुधारकों ने जो जो धर्म विरुद्ध कानून बनाया हो उसको स्वयं तथा हिन्दू जनता कभी न माने ऐसा सदैव उद्योग करते रहना चाहिये । जगन्नियंता श्री हरि धर्मप्रेमी हिंदुओंको इस योजना कार्य में परिणत करने का बल तथा बुद्धि सत्वर प्रदान करके सनातन धर्म, हिंदु संस्कृति, हिंदू जाति तथा हिंदुस्थान के उद्धार के निमित्त बना कृतार्थ करे ऐसी भगवद् चरणारविंद में विनीत प्रार्थना करता हूं ।

